



रोटरी

INDIA

www.rotarynewsonline.org

समाचार



Rotary



PRID यश पाल दास की याद में...



रोई मुख्यालय में PRID वाई पी दास, मंजु, PRIP कल्याण बेनर्जी, बिनोटा, PRIP के आर रविंद्रन, RIPE शेखर मेहता और राशी।



वर्ष 2012 में, दक्षिण एशिया रिसर्च, बैंकाक में, जब बेनर्जी, रोई अध्यक्ष, दास और मेहता निदेशक थे। चित्र में बिनोटा और मंजु भी शामिल हैं।

विषयसूची



10

- 10** हमें कोरोना-पूर्व की दुनिया में लौटने की आवश्यकता नहीं है:
मुहम्मद यूनस

रोटरी क्लब मद्रास द्वारा आयोजित एक वेबीनार में नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनस ने कहा कि इस महामारी ने एक बेहतर दुनिया बनाने के अवसर खोले हैं।



16

- 16** लुई, एक प्रेरक और मार्गदर्शक व्यक्ति

PRIPs राजेंद्र साबू और के आर रवींद्र ने PRIP लुई विन्सेंट गिये के साथ उनके साहचर्य की सुहानी यादों को ताज़ा किया।



21

- 21** यश ने अच्छाई को आकर्षक बना दिया

PRIP राजेंद्र साबू, RIPE शेखर मेहता और PRID अशोक महाजन, बड़ी परियोजनाएं करने वाले एक सज्जन रोटेरियन PRID यश पाल दास को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।



24

- 24** म्यूनिसपल स्कूल के छात्रों को रोटरी क्लब बॉम्बे हार्बर से मिले स्मार्टफोन

ब्रांड न्यू स्मार्टफोन के साथ, कोलाबा म्यूनिसपल स्कूल के 51 विद्यार्थी ऑनलाइन कक्षाओं में भाग ले पाएंगे।



32

- 28** शिलांग को एक रोटेरियन भूखों को खाना खिलाते हैं

अर्धेदु चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा 2018 में शुरू की गई रसोई आहार योजना 300 लोगों को पौष्टिक भोजन प्रदान करती है।

- 32** कभी शरणार्थी रहे, इस रोटेरियन ने हजारों की हृदय शल्य चिकित्सा निःशुल्क कराई है

रोटरी क्लब बैंगलोर इंदिरानगर के सदस्य ओ पी खन्ना, नीडी हार्ट फाउंडेशन (NHF) चलाते हैं जो मुफ्त सर्जियाँ करती है।

- 44** एक समस्त महिला क्लब ट्रांसजेंडर के भय से मुक्ति दिलाने के लिए संघर्षरत है

रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली शक्ति लैंगिक असंबद्ध बच्चों को उचित शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से एक छात्रावास चलाता है।



54

- 54** किशोर कुमार - एक दिलचस्प योडलर

पार्श्वगायक किशोर कुमार की ज़िंदगी की दास्तान और वो बातें जिन्होंने उन्हें इतना महान बनाया।



कवर पर: नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनस

लता मंगेशकर को शानदार आदरांजली

मैं एस आर मधु द्वारा लता मंगेशकर को दी गई आदरांजली को देखकर बहुत खुश हुआ। मुझे पता है कि उन्हें हिन्दी फिल्मी संगीत का विश्वकोष जितना ज्ञान है। इस लेख में उनके ज्ञान की झलक देखकर मैं चकित नहीं हूँ। लेख उनके संगीत से जुड़े जटिल पहलुओं से भरपूर है और लेखन कला भी उसी से मेल खाती है। शुभकामनाएं।

डी संपतकुमार
पूर्व संपादक, दी हिन्दू बिज़नेस लाइन



लता मंगेशकर पर लिखा गया लेख उत्कृष्ट है। लता के बारे में अज्ञात तथ्यों और परिवार के लिए किए गए उनके बलिदान का खूबसूरती के साथ वर्णन किया गया है।

के एन अल्वा, रोटरी क्लब मैंगलोर नॉर्थ - मंडल 3181

मेट कैपरस पर मार्मिक निधन सूचना

PRIP राजेंद्र साबू द्वारा मेट कैपरस पर लिखी गई निधन सूचना को पढ़ना दिलचस्प था। रोटरी में मेट एक महान व्यक्ति थे और इस निधन सूचना को एक व्यक्तिगत स्पर्श देकर, किस्से-कहानियों का विवरण देकर और इस सूचना के माध्यम से बहुत रोचक बनाया गया। PRIP कल्याण बेनर्जी ने अपने बहुत ही दिलचस्प लेख में मेट से जुड़े कई पहलुओं पर प्रकाश डाला।

मेट कैपरस के लिए PRIP बेनर्जी द्वारा लिखी गई निधन सूचना वास्तव में मार्मिक थी। यादें हमेशा ताजा रहती हैं। इतना बेहतरीन लेख प्रकाशित करने के लिए रोटरी न्यूज़ को सलाम।

डॉ जयशेखरन वीपी

रोटरी क्लब पय्यानूर - मंडल 3202

PRIP फ्रैंक डेवलिन के निधन से दुनिया भर के रोटेरियनों को झटका लगा है। PRIP कल्याण बेनर्जी ने अपनी श्रद्धांजलि फ्रैंक अपनी जिंदादिल मुस्कुराहट के साथ स्वर्ग को रोशन करेंगे में उन्हें दूरदर्शी और एक जिंदादिल शख्स कहा। PRIPs रे क्लिंगिस्मिथ, के आर रविंद्रन और मार्क मेलोनी की श्रद्धांजलि भावपूर्ण और प्रेरणादायक है क्योंकि वे याद दिलाती है कि कैसे उन्होंने इवेंसटन में 18-मंजिला मुख्यालय की इमारत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। रोटरी न्यूज़ ने फ्रैंक को मरणोपरांत जो इतनी बढ़िया श्रद्धांजलि दी उसके लिए मेरी शुभकामनाएं।

अरुण कुमार दास

रोटरी क्लब बरीपदा - मंडल 3262

रो ई अध्यक्ष होलार नेक ने उचित रूप से कहा है कि नए क्लबों का समर्थन करना विकास के लिए महत्वपूर्ण है। संपादक ने जातिवाद और गोरपेन के लिए हमारे पागलपन पर एक अच्छा विश्लेषण प्रस्तुत किया है। दोनों रो ई निदेशकों ने दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने के लिए रोटेरियनों को ध्यान में रखते हुए नए अवसरों पर ध्यान केंद्रित किया है। PRIP मेट कैपरस द्वारा PRIP राजेंद्र साबू को लिखा गया पत्र

रोटरी न्यूज़ बहुत मजेदार होता जा रहा है

हाल ही के पत्रिका के अंक पाठकों को उत्तेजित करते हैं और रो ई अध्यक्ष एवं रो ई निदेशकों के संदेश वास्तव में प्रेरक होते हैं। झींगा निर्माताओं की कहानी महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करेगी। यह जानकर खुशी होती है कि झींगा निर्माताओं के बोझ को कम करने के लिए DRDO ने जीठीका का आविष्कार किया था। सचमुच रोटरी अवसरों को खोलती है।

ए के सुगुनन

रोटरी बैंगलोर इंदिरानगर - मंडल 3190

मैं 2003 से रोटरी न्यूज़ का नियमित पाठक हूँ। इसके लेख अब अधिक आकर्षक और दिलचस्प हो गए हैं। लेख प्रेरणादायक होते हैं। सचमुच, रोटरी न्यूज़ दुनिया को साथ लाती है।

जनार्दन नायक

रोटरी क्लब कासरगोड़ - मंडल 3202

रो ई अध्यक्ष होलार नेक अपनी भविष्य की योजनाओं के बारे में बहुत अच्छी तरह बात करते हैं; नस्लवाद और रंगवाद पर संपादक के संदेश ने

मुझे बहुत प्रभावित किया। एक रोटरी क्लब को कैसा होना चाहिए इस पर रो ई निदेशक भरत पंड्या के विचार अर्थपूर्ण हैं। यह जानकर खुशी हुई कि महिला झींगा निर्माताओं की मुश्किलों को कम करने के लिए रोटरी क्लब काकीनाडा द्वारा उन्हें जीठीका नामक एक नया उपकरण प्रदान किया गया है।

टीसीए श्रीनिवास राघवन के लेख लॉकडाउन के अपने फायदे हैं... और ताइपेई 101 टॉवर, लेख महामारी में जीवित रहना और क्या संसार फिर से स्वस्थ होगा? पाठकों के लिए उपयोगी हैं। लेख स्विट्ज़रलैंड में गौ सवारी और पनीर उत्पादन प्रभावशाली हैं। सभी लेख पढ़ने योग्य हैं और तस्वीरें खूबसूरत हैं।

फिलिप मुलप्पोने एम टी

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

एक ऐसी परियोजना शुरू करने के लिए रो ई मंडल 3120 के डीजी एम जोस चाको को बधाई। 1,500 विद्यार्थियों को साइकिलें दान में मिली।

एन जगथीसन

रोटरी क्लब एलुरु - मंडल 3020

दिल को छू लेने वाला है। लेख *पंचकुला की एक कोविड वॉरियर* में कोविड काल के दौरान अस्पताल के प्रबंधन में डॉ रीता कालरा के द्वारा सामना की गई चुनौतियों को दर्शाया गया है। मैं रोटरी क्लब जोधपुर पद्मिनी के सदस्यों को बधाई देता हूँ।

न्यासी अध्यक्ष के आर रविन्द्र ने अपने तीक्ष्ण सबालों के माध्यम से सारगर्भित विचार प्रस्तुत किया रोटरी का महान क्षण होगा? उषा कुमार ने इस रोमांचक भूमि पर पिरामिडों, ममियों और नील नदी के बारे में स्पष्ट विवरण देते हुए मिस्र के एक बीते युग के चमत्कारों का अन्वेषण किया है।

एस मुनियांदी
रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट
रो ई मंडल 3000

अगस्त अंक अनूठा है क्योंकि इसने महामारी के दौरान रोटेरियनों और रोटरी क्लबों की गतिविधियों को कवर किया। रोटरी क्लब काकीनाडा द्वारा जीठिका परियोजना इस बात का एक उदाहरण है कि कैसे मेहनती मछुआरियों को रोटरी के माध्यम से मदद मिल सकती है। मैंने 2000 और 2002 में बांग्लादेश में एक रोटरी स्वयंसेवक के रूप में सेवा दी और मैं रोटरी क्लब सोनारगाँव के काज़ी अम्दादुल हक के अच्छे काम को याद करके खुश हूँ। साथ ही, इस अंक ने स्कूलों को 10,000 डेस्क-बेंच प्रदान करने; पीएचसी को लेप्रोस्कोपिक मशीन दान करने और 2013 में संपादक के स्विट्ज़रलैंड के दौर के दौरान उनका साहसिक कारनामा जो बहुत आकर्षक है, पर प्रकाश डाला।

पीडीजी डॉ वराहलू बसव
मंडल 3020

रोटरी प्लस - एक सुखद पहल

ज़ूम मीट के माध्यम से एक ही दिन में रो ई मंडल 3211 द्वारा 361 नए सदस्यों को शामिल करना वास्तव में आश्चर्यजनक है, और यह अन्य मंडलों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

इस महामारी के दौरान, रोटेरियन ने निस्वार्थ सेवा देने में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है; डीजी थॉमस ववानिकुचेल, पीडीजी रघुनाथ और उनकी टीम प्रशंसा की हकदार है। कोविड प्रभावितों की सुरक्षा के लिए पीडीजी डॉ चंद्रशेखर कोलवेकर द्वारा निभाई गई भूमिका उल्लेखनीय है। चेन्नई में उनके द्वारा की गई एक गर्भवती महिला की मदद प्रशंसनीय है।

एस मोहन
रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट
मंडल 3000

ऑनलाइन पत्रिका *रोटरी प्लस* का लिंक हमें भेजने के लिए धन्यवाद। *रोटरी न्यूज़* भारत में रोटरी का प्रतिबिंब है और अपनी परियोजनाओं को यहाँ पर प्रकाशित करवाना रोटरी क्लबों के लिए सम्मान की बात है। संपादक के लिए जगह एक बाधा है, इसलिए क्लब गतिविधियों के व्यापक कवरेज के लिए ऑनलाइन संस्करण एक अनूठी पहल है।

आर श्रीनिवासन
रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन
मंडल 3000

TCA श्रीनिवासा राघवन का LBW लेख दिलचस्प, हास्यप्रद और निश्चित रूप से दोबारा पढ़ने योग्य है। मैं इसे अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से साझा करता हूँ, जो हास्यपूर्ण तरीके से लिखे गए लेखों का आनंद लेते हैं।

वसंत धूपकर
रोटरी क्लब पुणे सहवास
मंडल 3131

अपने विचार संपादक को भेजें:
rotarynews@rosaonline.org;
rushbhagat@gmail.com
पर ई-मेल करें। हमारी वेबसाइट
www.rotarynewsonline.org पर
क्लिक करें और Rotary News Plus पर
और ज़्यादा परियोजनाएं पढ़ें।

रोटरी के निधीयन के लिए पैसे बचाएं

जहाँ कोविड-19 महामारी दुनिया भर में मुसीबतें ला रही है, वहीं रोटेरियन नव परिवर्तन कर रहे हैं। वे अपने समुदायों में व्यस्त हैं, और ज़रूरतमंद लोगों की मदद कर रहे हैं। रोटरी न्यूज़ को इस काम पर लेख प्रकाशित करना चाहिए। मैं सुझाव दूंगा कि आभासी बैठकों और वेबिनारों के माध्यम से बचाए गए धन का उपयोग रोटरी निधीयन हेतु किया जाए।

गोविंददास अग्रवाल
रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

ऑस्ट्रेलियाई शौचालय योद्धा मार्क भल्ला द्वारा नासिक में 15 शौचालय बनाने का प्रयास सराहनीय है और हमें उनके जैसे अधिक प्रतिबद्ध रोटेरियनों की आवश्यकता है क्योंकि इससे बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहन मिलेगा। मई अंक के लेख *रोटरी क्लब कलकत्ता: गौरवशाली 100 वर्ष* में रोटरी क्लब कलकत्ता के इतिहास का वर्णन किया गया है जो बहुत शानदार है।

पोन मुथइयाँ
रोटरी क्लब अदुथुराई - मंडल 3000

यह जानकर बहुत खुशी हुई कि दुनिया में भारत ने अमेरिका के ठीक बाद TRF में देने में अपने दूसरे स्थान को बरकरार रखा। मुझे उम्मीद है कि निकट भविष्य में, हम शीर्ष स्थान पर होंगे। एक और उत्कृष्ट अंक लाने के लिए मैं टीम रोटरी न्यूज़ को बधाई देना चाहता हूँ। सबसे ज्यादा खुशी इस बात की थी कि छह पन्ने पूरे भारत की क्लब परियोजनाओं को समर्पित थे, जो क्लबों को अपनी परियोजनाएं दिखाने के लिए प्रेरित करेंगे।

केपटन वी जी देओहर
रोटरी क्लब नासिक - मंडल 3030

रोटरी समाचार के सितम्बर 2020 अंक में पृष्ठ संख्या 52 पर भूल वश श्रद्धांजलि छप गया है। कृपया उसे आदरांजलि पढ़ें। इस गलती के लिए हमें खेद है।

- संपादक



क्लब नवाचार के लिए डिजिटल उपकरणों का लाभ उठाएं

प्रिय रोटेरियनों, रोटेरेक्टरों और दोस्तों,
रोटेरियनों और रोटेरेक्टरों के साथ हाल ही में हुई एक जूम बैठक के दौरान, मैंने अपनी स्क्रीन पर मुस्कुराते हुए चेहरों को देखा और महसूस किया कि थोड़े ही समय में हमारा संगठन कितना बदल गया है। यह स्पष्ट है कि रोटेरी में पुराने सामान्य की ओर अब कोई वापसी नहीं है - और मैं इसे एक रोमांचक अवसर के रूप में देखता हूँ।

नवाचार और परिवर्तन कई स्तरों पर हो रहे हैं क्योंकि हम रोटेरी पर पुनर्विचार और उसका पुनर्गठन कर रहे हैं। रोटेरी का नया लचीलापन डिजिटल संस्कृति के साथ उन तरीकों में बदलाव लाने के लिए समिश्रित हो रहा है, जो हम में से कई लोगों ने पहले कभी नहीं देखे थे। हम रेबेका फ्राय जैसे रोटेरियन से बहुत कुछ सीख सकते हैं - जिन्हें 31 साल की उम्र में ही रोटेरी का 15 वर्ष का अनुभव हो चुका है।

मैं रोटेरी को दुनिया को बदलने वाले एक अद्भुत मंच के रूप में देखता हूँ। मेरा मानना है कि जो लोग दुनिया में परिवर्तन देखना चाहते हैं उन्हें परिवर्तन लाने के लिए सशक्त बनाकर मैं सबसे बड़ा प्रभाव डाल सकता हूँ। मैंने RYLA और रोटेरेक्ट में अपने अनुभवों के माध्यम से और अब रोटेरी सोशल इम्पैक्ट नेटवर्क, एक नए ई-क्लब, के चार्टर अध्यक्ष के रूप में नेतृत्व का परिज्ञान हासिल किया है।

नए क्लब का गठन करने में रोटेरी प्रोग्राम के पूर्व छात्रों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। हमारा क्लब इस बात का सबूत है कि रोटेरेक्टर एवं अन्य पूर्व छात्र रोटेरी से जुड़ना चाहते हैं - लेकिन कभी-कभी उन्हें ऐसा रोटेरी क्लब नहीं मिल पाता जो उनके लिए उचित हो। हमारे क्लब में 31 सदस्य हैं, सभी की उम्र 23 से 41 साल के बीच है और उनमें से लगभग सभी रोटेरी कार्यक्रमों के पूर्व छात्र हैं।

हमें उन अन्य व्यक्तिगत और व्यावसायिक लक्ष्यों के साथ रोटेरी को समाहित और सरोचित करने के योग्य बनना चाहिए जिनका हम अनुकरण कर रहे हैं। हमने क्लब से परे अपने सदस्यों के अनुभवों

को बढ़ाने के लिए, रोटेरी फैलोशिप, रोटेरी एक्शन ग्रुप, और अन्य अंतर्राष्ट्रीय साझेदारियों के माध्यम से संपर्कों का लाभ उठाने की भी मांग की है।

हमारा क्लब माइक्रोसॉफ्ट टीम्स की मदद से अपने सदस्यों को उनकी रुचि वाले विषयों में 24/7 व्यस्त रखने के लिए ऑनलाइन बैठकें आयोजित करता है और परियोजनाओं का प्रबंधन करता है। हालाँकि हम में से अधिकतर लोग ऑस्ट्रेलिया में हैं, जर्मनी, इटली, मैक्सिको, तंजानिया और संयुक्त राज्य अमेरिका में भी हमारे सदस्य हैं।

साथ ही हमारे क्लब के लिए हमारी परियोजनाओं के प्रभाव को मापना महत्वपूर्ण है। इस वर्ष प्लास्टिक मुक्त जुलाई के लिए, हमने एक जागरूकता अभियान चलाया जिससे कि लोग प्लास्टिक के अपने उपयोग को कम कर सकें और हम 6,000 से अधिक लोगों तक पहुँचें। मुझे गर्व है कि हमारे क्लब के माध्यम से, हम एक नए प्रकार के रोटेरी अनुभव के लिए लोगों को एक साथ ला रहे हैं। मैं हमारे भविष्य को लेकर उत्साहित हूँ।

सभी रोटेरी क्लबों के पास बेक के क्लब की तरह ही अभिनव क्लब बनने का अवसर है। उन क्लबों पर भरोसा करें, उनसे सीखें, और उन्हें हमारा समर्थन दें। रोटेरी में जमीनी स्तर पर परिवर्तन होता है, क्योंकि क्लब नेतृत्व करते हुए यह परिभाषित करते हैं कि यह नई रोटेरी कैसी हो सकती है।

परिवर्तन स्थायी है, और हमारे पास बहुत से क्षेत्रों में करने के लिए अधिक काम है। यह महत्वपूर्ण है कि हम सभी पृष्ठभूमि के लोगों के योगदानों का जश्न मनाएं और पिछड़े समूहों के लोगों को बढ़ावा दें ताकि उनके पास रोटेरी में सदस्यों और नेतृत्वकर्ताओं के रूप में भाग लेने के अधिक से अधिक अवसर हों।

रोटेरी को अधिक समावेशी, अधिक प्रासंगिक और सभी के लिए अधिक मजेदार बनाने के उपकरण हमारी उंगलियों पर हैं। चलिए अब उनका उपयोग करें, और हम देखेंगे कि कैसे रोटेरी अवसरों को खोलती है हमारे लिए और उन लोगों के लिए जिनसे मुलाकात होना अभी बाकी है।



रेबेका फ्राय,
रोटेरी क्लब
ऑफ सोशियल
इम्पैक्ट नेटवर्क।

Holger Krauch

होल्टर नेक

अध्यक्ष, रोटेरी इंटरनेशनल



एक आदर्श व्यक्ति का यूँ चले जाना...

रोटरी न्यूज ट्रस्ट में हमने पूर्व निदेशक यशपाल दास के असामयिक निधन की खबर से मिले आघात को अत्यंत दुख और विडम्बना के साथ आत्मसात किया। रोटरी न्यूज ट्रस्ट की एक भी ऐसी मीटिंग नहीं होती थी, चेर्च स्थित हमारे कार्यालय में, जिसमें जाने से पहले वो स्टाफ से आत्मीयता से न मिलते हों, उसके बाद ही कॉफ़्रेस रूम में जाते थे। मैं उन्हें पिछले छह वर्षों से जानती थी, वो अत्यंत शालीनता के साथ मिलते थे और पत्रिका के संपादक के रूप में मुझे हमेशा सम्मान देते थे। उनके सौम्य व्यवहार और आकर्षक व्यक्तित्व की वजह से उनकी दोस्ती का दायरा काफी बड़ा था।

अंबाला अस्पताल में रोटरी के इस अथक कार्यकर्ता के योगदान को, बाढ़ से तबाह हुए गढ़वाल क्षेत्र में कुशलतापूर्वक निर्मित किये गए उन खूबसूरत स्कूलों को और तपेदिक उन्मूलन में पूरी शिद्दत के साथ किये गए उनके काम को कौन भूल सकता है। आदर्श व्यक्तित्व वाले इस सज्जन पुरुष की कमी हमेशा खलेगी और इस अपूरणीय क्षति की भरपाई नहीं हो सकती। उनके असामयिक प्रयाण पर हमें बेहद अफ़सोस है, उनके शोक संतप्त परिवार, मित्रों तथा भारत में और विदेशों में रह रहे हजारों रोटेरियनों के दुःख और संकट की इस घड़ी में हम उनके साथ हैं।

समाज की धारणा के विपरीत लीक से हट कर सोचने की योग्यता और दृष्टिकोण किसी भी व्यक्ति को भीड़ से अलग खड़ा करती है और ऐसे व्यक्ति ही महान ऊंचाइयां प्राप्त करते हैं। इस माह की कवर स्टोरी एक ऐसे ही व्यक्ति पर प्रकाश डालती है, जिसकी अलग तरह से सोचने की क्षमता जोकि इस बात की वकालत करती है कि इस दुनिया के गरीब लोग मूल रूप से ईमानदार हैं और इसलिए विश्वसनीय हैं, और जिसके कारण इस दुनिया में माइक्रोक्रेडिट की शुरुआत हुई और इसे भारी सफलता मिली। इस वजह से बांग्लादेश के मुहम्मद यूनस को 2006 में शांति के लिए नोबेल पुरस्कार से नवाज़ा गया था। क्योंकि गरीबी से कलह पैदा होती है और संघर्ष का कारण बनती है जबकि गरीबी नहीं होने से लोगों का शांति से रहना संभव है, प्रशस्ति पत्र में लिखा था।

ये वही यूनस हैं जिन्होंने हमें एक बार फिर कोरोना महामारी पर अपने विरोधाभासी दृष्टिकोण पर सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। रोटरी क्लब

ऑफ़ मद्रास की एक आभासी बैठक को संबोधित करते हुए, उन्होंने लाखों लोगों के कोरोना-पूर्व महामारी से पहले वाले युग में जल्द से जल्द वापस लौटने की कोशिशों पर चिंता व्यक्त की। लेकिन, उनका कहना है, महामारी से पहले की दुनिया कई मायनों में एक भयावह दुनिया थी - पर्यावरण के विनाश के कारण हुई ग्लोबल वार्मिंग; कुछ ही हाथों में सिमटे धन के अनुचित व असमान वितरण के कारण बड़े पैमाने पर उपजी गरीबी, भुखमरी और बढ़ती बेरोजगारी।

उनका मानना है कि महामारी ने हमारे द्वारा फैलाई गई गंदगी को समेटने का एक बहुमूल्य अवसर दिया है; विवरण कवर स्टोरी में पढ़ें, लेकिन एक बात, जिस पर मुझे लगता है ध्यान देने की विशेष आवश्यकता है, वो ये कि भारत में अचानक लॉक डाउन की घोषणा के बाद लाखों प्रवासी कामगारों की दयनीय स्थिति का जिक्र करते हुए, उनका तर्क था कि वे खुद अपने ही दम पर ज़िंदा थे क्योंकि उनका संबंध अर्थव्यवस्था के उस अनौपचारिक क्षेत्र से था, जिस के लिए कोई जिम्मेदार नहीं था। लेकिन हमें इस अनौपचारिक क्षेत्र की स्थिति को सुधार कर औपचारिक रूप देना चाहिए, उन्हें सूक्ष्म उद्यमी का दर्जा देना चाहिए, क्योंकि आखिरकार वे भी तो दूर दराज से अपनी तकनीक, अपना कौशल या अपना सामान हमारे कस्बों और शहरों में बेचने के लिए आते हैं। और माइक्रो इंटरप्राइजेज (सूक्ष्म उद्यमी) मंत्रालय की स्थापना की जाये, ठीक श्रम मंत्रालय की भांति, जो औपचारिक क्षेत्र में कार्यरत लोगों के लिए प्रत्येक देश में विद्यमान है। उसके बाद सरकारों को उनके लिए योजनाएं और नीतियां तैयार करने के लिए बाध्य किया जाएगा। एक रोमांचक विचार, और यूनस का कहना है कि ये भयावह महामारी सरकारों को “दृढ़तापूर्वक साहसिक निर्णय” लेने के लिए प्रदान किया गया एक अवसर है।

लेकिन इसमें वक़्त लगेगा और इस बीच हर गुजरते हुए दिन के साथ भारत इस वायरस की गंभीर चपेट में आता रहेगा, सबसे ज्यादा नुकसान गरीबों और वंचितों को पहुंचेगा, जोकि छोटी मोटी नौकरी छूट जाने के बाद ज़िंदा रहने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हाँ, ये देखकर दिली खुशी होती है कि दुनिया भर में हजारों रोटेरियन अपनी जान जोखिम में डाल कर भी इन लोगों को सांत्वना और राहत पहुंचा रहे हैं।

Reena Singh

रशीदा भगत

Governors Council

RI Dist 2981	DG R Balaji Babu
RI Dist 2982	DG K S Venkatesan
RI Dist 3000	DG AL Chokkalingam
RI Dist 3011	DG Sanjiv Rai Mehra
RI Dist 3012	DG Alok Gupta
RI Dist 3020	DG Muttavarapu Satish Babu
RI Dist 3030	DG Shabbir Shakir
RI Dist 3040	DG Gajendra Singh Narang
RI Dist 3053	DG Harish Kumar Gaur
RI Dist 3054	DG Rajesh Agarwal
RI Dist 3060	DG Prashant Harivallabh Jani
RI Dist 3070	DG CA Davinder Singh
RI Dist 3080	DG Ramesh Bajaj
RI Dist 3090	DG Vijay Arora
RI Dist 3100	DG Manish Sharda
RI Dist 3110	DG Dinesh Chandra Shukla
RI Dist 3120	DG Karunesh Kumar Srivastava
RI Dist 3131	DG Rashmi Vinay Kulkarni
RI Dist 3132	DG Harish Motwani
RI Dist 3141	DG Sunnil Mehra
RI Dist 3142	DG Dr Sandeep Kadam
RI Dist 3150	DG Nalla Venkata Hanmanth Reddy
RI Dist 3160	DG B Chinnappa Reddy
RI Dist 3170	DG Sangram Vishnu Patil
RI Dist 3181	DG M Ranganath Bhat
RI Dist 3182	DG B Rajarama Bhat
RI Dist 3190	DG BL Nagendra Prasad
RI Dist 3201	DG Jose Chacko Madhavassery
RI Dist 3202	DG Dr Hari Krishnan Nambiar
RI Dist 3211	DG Dr Thomas Vavanikunnel
RI Dist 3212	DG PNB Murugadoss
RI Dist 3231	DG K Pandian
RI Dist 3232	DG S Muthupalaniappan
RI Dist 3240	DG Subhasish Chatterjee
RI Dist 3250	DG Rajan Gandotra
RI Dist 3261	DG Fakir Charan Mohanty
RI Dist 3262	DG Saumya Rajan Mishra
RI Dist 3291	DG Sudip Mukherjee

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions - original content - is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced with permission and attributed to RNT.

रो ई निदेशक

आमने-सामने



वर्ष 2015 में, 193 वैश्विक नेताओं ने गरीबी मिटाने, असमानता से लड़ने और 2030 तक जलवायु परिवर्तन को रोकने के 17 महत्वाकांक्षी लक्ष्यों - संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों - पर सहमति जताई। इस महामारी ने दुनिया के अधिकांश हिस्सों में सामुदायिक आर्थिक विकास को वर्षों पीछे धकेल दिया है। कोविड-19 चुनौती ने केवल इस तथ्य को सुदृढ़ किया है कि

लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, सभी को - सरकारों, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज और आम जनता - को अपनी भूमिका निभाने की आवश्यकता है। इस संकट ने लाखों लोगों को गरीबी की ओर धकेल दिया है। खाद्य असुरक्षा बढ़ गई है। बच्चे अधिक असुरक्षित हो गए हैं क्योंकि कई हिस्सों में नियमित टीकाकरण में गिरावट आ गई है या वे बंद हो गए हैं और उनके पास दस्त, निमोनिया आदि बीमारियों से लड़ने के लिए स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच बहुत कम/ खत्म हो गई है। इन क्षेत्रों में से अनेक क्षेत्रों में रोटर की एक भूमिका निभानी है।

जब तक महामारी हमारे नियंत्रण में नहीं होगी तब तक चीजें बेहतर नहीं हो सकेंगी। टीकाकरण इसे काबू में करने के तरीकों में से एक है। लेकिन अमीर/गरीब; विकसित/विकासशील के भेदभाव के बिना टीकों का समान रूप से वितरण करना एक चुनौती है। रोटर अपने पक्षसमर्थन प्रयासों के माध्यम से सरकारों, गैरसरकारी संस्थान, फार्मा कंपनियों के साथ टीकों के समान वितरण को सुनिश्चित करने के लिए एक भूमिका निभा सकती है। यह आने वाले महीनों में सामुदायिक आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने का एक बहुत अच्छा तरीका होगा।

अक्टूबर की 24 को विश्व पोलियो दिवस है। पोलियो की कहानी एक सपने की कहानी है। एक ऐसा सपना जो रोटर ने दुनिया को तब दिखाया जब 1982 में रोई बोर्ड ने दुनियाभर के बच्चों का टीकाकरण करने का संकल्प लिया। और यह चार C की कहानी है - पोलियो उन्मूलन के लिए रोटर और रोटेरियनों की प्रतिबद्धता (Commitment); सहयोग (Collaboration) - यह साझेदारियों की सफलता की कहानी है। कोई भी एक संस्था अकेले इस उपलब्धि को हासिल नहीं कर सकती थी, लेकिन एक साथ मिलकर हम ऐसा करने के बेहद करीब हैं; अनुरूपता (Consistency) - रोटेरियनों, रोटर परिवार एवं रोटर के दोस्तों के सतत, समर्पित प्रयास; और योगदान (Contribution) - इस चमत्कार को साकार करने में रोटेरियनों एवं रोटर के मित्रों के उदार, खुले दिल से किए गए योगदान महत्वपूर्ण हैं।

चूंकि अफ्रीका को पोलियो मुक्त घोषित किया जा चुका है, हमें इसे आगे ले जाकर इसका समापन करने की आवश्यकता है। एक पोलियो मुक्त दुनिया हमारी भावी पीढ़ी के लिए हमारे द्वारा छोड़ी गई सबसे अच्छी विरासत होगी। इमर्सन ने एक बार अर्थपूर्ण ढंग से कहा था, “बड़े दिल के बिना, दौलत बेकार होती है।” दौलत धन-संपत्ति का होना या ना होना ; यह एक मनः स्थिति होती है। हमारे पास कितना है यह मायने नहीं रखता बल्कि हमारे पास जो है उससे हम क्या करते हैं यह मायने रखता है। चूंकि रोटर सेवा के नए अवसर खोलती है, तो चलिए हम सभी पोलियो कोष का समर्थन करने के लिए अपने बड़े दिल का उपयोग करें।

Shivani

डॉ भरत पांडेया

रो ई निदेशक, 2019-21

का संदेश

गरीबी खत्म करने के स्थायी उपाय



लगभग 800 मिलियन लोग रोजाना 1.90 डॉलर से कम में जीवन यापन कर रहे हैं। गरीबी को खत्म करने के लिए रोटेरियनों को स्थायी समाधान प्रदान करने पर कार्य करना चाहिए।

कौशल और ज्ञान देश के आर्थिक विकास और सामाजिक विकास की प्रेरक शक्तियां हैं। कई उद्योग कोविड -19 के समय में अपने अस्तित्व को बचाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। भर्ती बंद, वेतन में कटौती और छंटनी अस्तित्व बचाने के लिए कई व्यवसायों का मंत्र बन गया है। आज के समय की मांग है कि भारतीय कार्यबल को सुदृढ़ किया जाए और अर्थव्यवस्था के संरचनात्मक मुद्दों से व्यवस्थित रूप से निपटा जाए ताकि हम एक अधिक मजबूत समाज के रूप में उभर सकें।

वैश्विक स्तर पर लगभग 74 मिलियन युवा वयस्क बेरोजगार हैं। युवा हमारी एकमात्र स्थायी संपत्ति है। हमें उनके लिए कौशल, नेतृत्व और नौकरी के अवसर उत्पन्न करने चाहिए। क्लबों को युवाओं को कुशल बनाने में भाग लेना चाहिए और इस अनिश्चित समय के दौरान नौकरी हासिल करने में उनकी मदद करनी चाहिए। रोटरी भारत साक्षरता मिशन ने इस बात को महसूस किया और, अपोलो मेड स्किल्स के साथ मिलकर प्रायोगिक रूप से *सक्षम भारत* कौशल कार्यक्रम शुरू किया ताकि सुनिश्चित प्लेसमेंट के साथ परा चिकित्सक कर्मचारियों को कुशल बनाया जा सके। प्रायोजक रोटेरियनों द्वारा लाभार्थियों का चुनाव किया जाता है और उन्हें अपोलो मेडस्किल्स के चुनिंदा केंद्रों में प्रशिक्षित किया जाता है।

एक गाँव को गोद लेना

मैं प्रत्येक क्लब से एक गांव को गोद लेने और वहाँ पर बुनियादी शिक्षा, जल, स्वच्छता, स्वास्थ्य और अन्य सुविधाओं को बेहतर बनाने में मदद करने का अनुरोध करता हूँ ताकि इसे आत्मनिर्भर बनाया जा सके और वहाँ के लोगों का भला किया जा सके।

पोलियो उन्मूलन

किसी काम को पूरा करने से बड़ा कोई आनंद नहीं है। हमने पोलियो को दुनिया से खत्म करने का वादा किया है और प्रत्येक रोटेरियन से इस लड़ाई में स्वयं को दोबारा पूरी तरह समर्पित करने का आग्रह किया। अक्टूबर 24 को विश्व पोलियो दिवस है... इसमें शामिल होकर अनुदान संचयन समारोहों, कार्यक्रमों, रैलियों, जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से यह संदेश फैलाएं, ताकि हम पोलियो को एक अतीत बना सकें।

PRID यशपाल दास के असामयिक निधन के साथ ही हमने एक रोटरी योद्धा, एक प्रिय और एक स्नेही पारिवारिक व्यक्ति एवं हम में से बहुतों के चहेते मित्र को खो दिया है। चलिए हम सभी यह प्रार्थना करें कि उनकी आत्मा को शांति मिले। अब यह निश्चित हो गया है कि भगवान को भी अच्छे लोगों की आवश्यकता है। ईश्वर उनके परिवार को इस क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

Kamal

कमल संघवी

रो ई निदेशक, 2019-21

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
RIPE Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
PRID C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RID Dr Bharat Pandya	RI Dist 3141
RID Kamal Sanghvi	RI Dist 3250
RIDE AS Venkatesh	RI Dist 3232

Executive Committee Members (2020-21)

DG Sanjiv Rai Mehra	RI Dist 3011
Chair – Governors Council	
DG Sudip Mukherjee	RI Dist 3291
Secretary – Governors Council	
DG Sangram Vishnu Patil	RI Dist 3170
Secretary – Executive Committee	
DG Prashant Harivallabh Jani	RI Dist 3060
Treasurer – Executive Committee	
DG S Muthupalaniappan	RI Dist 3232
Member – Advisory Committee	

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor

Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor

Jaishree Padmanabhan

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

ROTARY NEWS TRUST

3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.

Phone : 044 42145666

e-mail: rotarynews@rosaonline.org

Website: www.rotarynewsonline.org

Now share articles from
rotarynewsonline.org on WhatsApp.

हमें कोरोना-पूर्व की दुनिया में लौटने की आवश्यकता नहीं है: मुहम्मद यूनस

रशीदा भगत

मेरा सवाल यह है कि आखिर हम कोरोना-पूर्व की दुनिया में वापस जाना क्यों चाहते हैं? वो इसके लायक भी है? जो दुनिया इस महामारी के दौरान हम पीछे छोड़ आये हैं वह एक खुशहाल नहीं बल्कि एक भयानक दुनिया थी। एक ऐसी दुनिया जो खत्म होने के कगार पर थी।”

इन शब्दों के साथ, नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनस ने रोटरी क्लब मद्रास द्वारा आयोजित वेबिनार No going back में उपस्थित सब का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। उन्होंने कहा कि कोविड महामारी से पहले “हम सब एक तेज़ गति से दौड़ रही ट्रेन में सवार थे ... एक हाई-स्पीड बुलेट ट्रेन, जो अपने आखिरी सफर में दौड़ ती हुई तबाही की तरफ जा रही थी, जो बहुत दूर नहीं थी। मुझे लगता है कि सौभाग्य वश महामारी ने इस ट्रेन को ब्रेक लगा कर रोक दिया है और हमें उतरने का मौका दिया है, अपने चारों तरफ एक नज़र डालें और खुद से पूछें कि क्या हमें उस ट्रेन पर फिर से सवार होना चाहिए और आखिरी मंज़िल, क़यामत के सफर को पूरा करना चाहिए? या महामारी द्वारा प्रदत्त इस अवसर का लाभ उठा कर एक नई दिशा की ओर बढ़ना चाहिए।”

यूनस ने कहा कि वो ये सवाल पूछने के लिए इसलिए मजबूर हो गए हैं क्योंकि दुनिया में जिधर

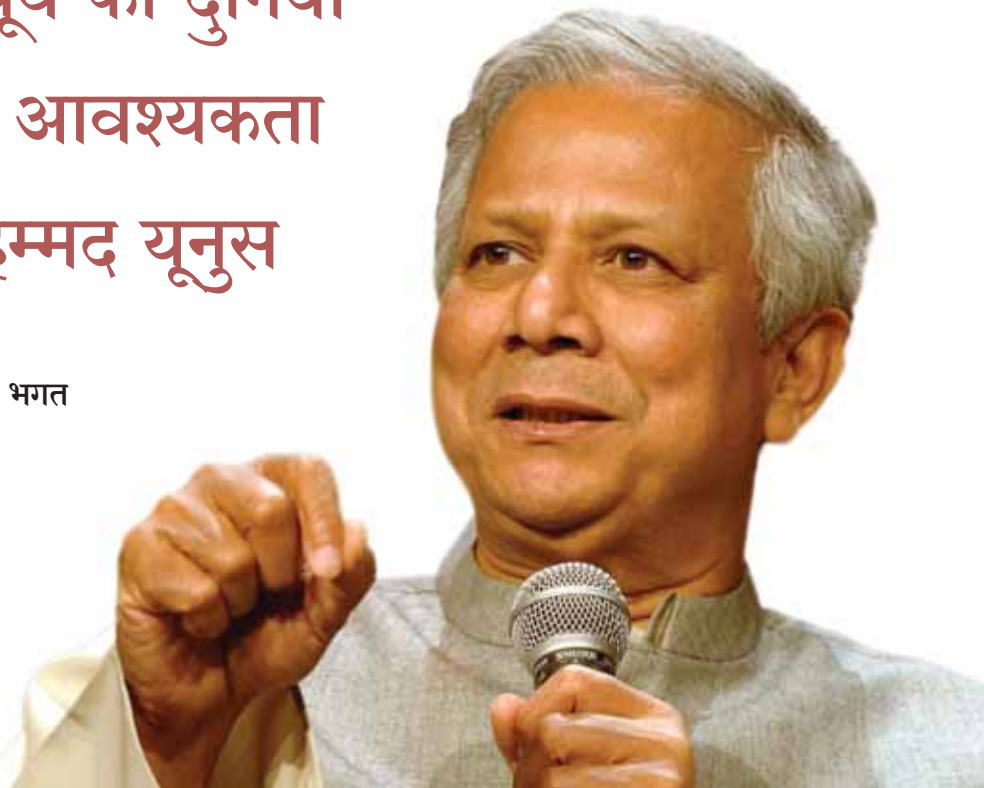
देखो हर जगह, एक ही बात हो रही थी कि कोरोना पूर्व की दुनिया में कितनी जल्दी और कैसे लौटा जाए। जिस दुनिया में हम कोरोना से पहले रहते थे “उस दुनिया में, सरकारों, नीति निर्माताओं और बड़े कारोबारियों की जाने की जल्दी और उत्सुकता को लेकर वह चिंतित थे। संकट से उबारने के लिए सरकारें बेल आउट (जमानत) पैकेजों में भारी राशि डाल रही हैं, कुछ सरकारें बिलियन डॉलर में और कुछ ट्रिलियन में।”

हम महा विनाश की ओर बढ़ रहे थे। उन्होंने इसके तीन कारण बताये; पहला ये कि ग्लोबल वार्मिंग की वजह से दुनिया पर “सिर्फ दो या तीन दशकों” में खत्म होने का खतरा मंडरा रहा था और हम आधी सदी भी जीवित नहीं रह पाते। और यह कि इस विनाश में ज्यादा वक्त नहीं बचा था, “ये हम पुरानी पीढ़ी को दोष देते हुए अपने माता-पिता, दादा-दादी, यानी हम जैसे लोगों पर गैर जिम्मेदार होने का आरोप लगाते हुए, हमारी युवा पीढ़ी को

सड़कों पर मार्च करते हुए देख सकते हैं। वे हमें इस दुनिया के विनाश का ज़िम्मेदार ठहराते हैं, जिसमें उन्हें बड़ा होना है। और वो दुनिया जहां उन्हें अपना भविष्य अन्धकार में दिखता है। उनका आरोप है कि हमने उनके सपने, उनका भविष्य चुरा लिया है।”

दूसरा कारण था कि “दुनिया की अधिकांश धन सम्पत्ति कुछ ही हाथों में सिमट कर रह गई है, और यह स्थिति एक विस्फोटक बिंदु तक पहुंच रही थी ... ठीक वैसे ही जैसे कि टिक टिक टाइम बम और हमारे पास ज्यादा समय नहीं था।” यहां भी महामारी ने दुनिया की संपत्ति को अधिक न्यायसंगत तरीके से बांटने का अवसर प्रदान किया था।

दुनिया के विनाश की ओर बढ़ने का तीसरा प्रमुख कारण बेतहाशा बढ़ती विशाल बेरोजगारी थी। यूनस ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही कि इस बार बेरोजगारी पर अलग तरह से चर्चा हो रही थी। आम तौर पर जब बेरोजगारी पर बातचीत होती है तो बात बेरोजगारों की संख्या के सम्बन्ध में होती है,



लेकिन इस महामारी के दौरान, इस चर्चा का स्वरूप बदल गया था जैसे “लोग बड़ी संख्या में अपनी नौकरी गँवा रहे हैं।” यहां तक कि चौंकाने वाली ऐसी भविष्यवाणियां भी की गई थीं कि अगले 15 वर्षों में लगभग एक अरब लोग नौकरी से बाहर हो जाएंगे। “यह शीघ्र ही विनाश की ओर जाने वाला मार्ग था और इस सब की वजह है बनावटी (कृत्रिम) तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता, कृत्रिम बुद्धि (AI) और मानव की नौकरियों छीन लेने वाली मशीनें। यह कोई खुशनुमा हालात नहीं है।”

यूनस ने इन तीन प्रमुख कारणों पर गौर करते हुए कहा, “महामारी-पूर्व की दुनिया में लौटने का मतलब होगा आत्महत्या।”

उन्होंने कहा कि इस आपदा को रोकने के, टालने के और यहां तक कि इस स्थिति को पलटने के उपाय भी थे “लेकिन हम ऐसा नहीं करना चाहते क्योंकि हम अपने आराम और सुविधा क्षेत्र में जी रहे हैं।” एक मोटे व्यक्ति का उदाहरण देते हुए, यूनस ने कहा, वह जानता है या जानती है कि उसे उसे दुबला कैसे होना है लेकिन वास्तव में उसके लिए वे कुछ करते नहीं हैं। “हम सब की परिस्थिति एक जैसी है। हम जानते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग को, चंद हाथों में इकट्ठी हो रही दौलत को और बड़े पैमाने पर बढ़ती बेरोजगारी को कैसे रोका जाए? लेकिन हम कुछ नहीं करते हैं।”

यूनस ने कहा कि “हम विनाश की तरफ बढ़ते क़दमों को पलट सकते हैं, व्यापार करने के नए तरीके इजाद करने के बारे में सोचना। मैं कहता हूँ कि व्यापार करने का वर्तमान तरीका ही गलत डिजाइन किया गया है, कि सब लोग एक ही सिद्धांत द्वारा संचालित होते हैं - वो है स्वयं का हित। इस तरह मैं अपने व्यापार की संरचना भी अपने लिए

अधिकतम लाभ अर्जित करने के लिए करता हूँ। और आज के व्यापार का निचोड़ भी यही है।”

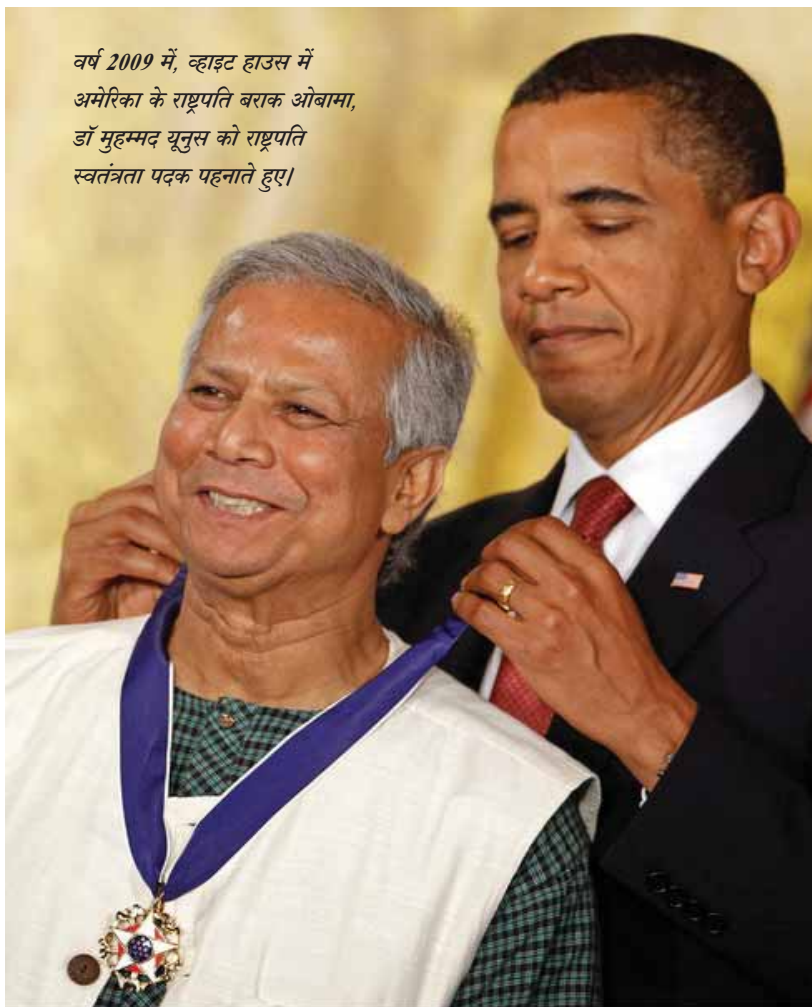
यह व्यापार इंसान की मिथ्या प्रस्तुति छवि पर आधारित था कि; “हर इंसान 100 प्रतिशत स्वार्थी नहीं होता, अगर ऐसा होता तो पूरी दुनिया में रोटरी के विस्तार की बात तो दूर, इस का जन्म ही नहीं होता ! आज आप अस्तित्व में सिर्फ इसलिए आए हैं क्योंकि आप दूसरों के लिए कुछ करना चाहते थे। हमें इस आर्थिक सिद्धांत को स्वीकार करना होगा कि हम स्वार्थी हैं और इससे दूर नहीं भागना चाहिए। हो सकता है कि हम स्वार्थी हो; पर इसके साथ साथ हम जन सामान्य के हित में भी रुचि रखते हैं और यही वो जगह है जहां रोटरी का प्रवेश होता है।”

अगर इसे स्वीकार कर लिया गया तो हमें दो प्रकार के व्यवसायों का निर्माण करना होगा ; एक वो जो हम पहले से कर रहे हैं, लाभ अर्जित करने के

लिए व्यापार और दूसरा जिसे अर्थशास्त्रियों ने कभी नहीं पहचाना, लेकिन अब इसका समय आ गया है। यह है सामाजिक व्यवसाय, इस का उद्देश्य अपने लिए पैसा कमाने के बजाय समाज में अन्य लोगों की समस्या का समाधान करना है। “एक व्यवसाय का उद्देश्य अपने लिए अधिकतम लाभ कमाना या केवल स्वयं के लिए लाभ अर्जित करना होता है; जबकि दूसरा इसके बिलकुल विपरीत है और दान देने की तुलना में अधिक कारगर है, क्योंकि दान की धनराशि भलाई के कार्यों में निकल जाती है, लेकिन लौट कर नहीं आती।”

इसलिए उन्होंने सामाजिक व्यवसाय के विचार का समर्थन किया है, जहां लाभ द्वारा अर्जित किया हुआ धन वापस सामाजिक भलाई के उसी काम में निवेश किया जाता है और बार-बार इसका पुनर्चक्रण (रीसायकल) किया जा सकता है। RIPE शेखर

वर्ष 2009 में, व्हाइट हाउस में
अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा,
डॉ मुहम्मद यूनुस को राष्ट्रपति
स्वतंत्रता पदक पहनाते हुए।



हमारी युवा पीढ़ी हमें इस दुनिया
के विनाश का ज़िम्मेदार ठहराते हैं,
उनका आरोप है कि हमने उनके
सपने, उनका भविष्य चुरा लिया है।

व्यवसाय को गलत तरीके से डिज़ाइन

किया गया है; इस आधार पर कि सभी मानव प्राणि स्वार्थ से प्रेरित हैं।

यह मानवता के प्रति गलत सोच है।

अगर यह सच है तो रोटरी

का जनम नामुमकिन होता।

मेहता द्वारा भारत में रोटेरियन के पानी और स्वच्छता और अन्य सामुदायिक परियोजनाओं पर खर्च पर की गई धनराशि पर की गई शुरुआती टिप्पणी का उल्लेख करते हुए, उन्होंने कहा, “यह सारा धन जो आप अपने कार्यक्रमों पर खर्च करते हैं, अगर इसे एक मॉडल में ढाल दिया जाए, तो इस धनराशि का पुनर्चक्रण किया जा सकता है।” एक उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा, “जब आप लोगों तक स्वच्छ पानी पहुंचाते हैं, तो इसके एवज में छोटी सी राशि बसूल कर सकते हैं, जिसका उपयोग इसके पुनर्चक्रण में किया जा सकता है और हर साल पैसे जुटाने के बजाय आप उसी पैसे का उपयोग फिर से कर सकते हैं और इस सामाजिक व्यापार को आप बड़े पैमाने पर ले जा सकते हैं।”

आने वाले समय में दुनिया को बेरोजगारी की भारी समस्या का सामना करना होगा क्योंकि ये महामारी नौकरीपेशा लोगों से उनकी नौकरी छीन लेगी, यूनस ने कहा: “शिक्षा में, हम कहते हैं कि अच्छी शिक्षा प्राप्त कर लो ताकि आप को एक अच्छी नौकरी मिल सके; हम ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि हमारी मानसिकता ऐसी ही है मानो हर इंसान की नियति एक नौकरी ही हो। लेकिन मेरा मानना है कि इंसान नौकरी करने के लिए पैदा नहीं हुआ, वह तो जन्मजात उद्यमी हैं, लेकिन हमारी शिक्षा प्रणाली ने उसके लिए अवसर के द्वार कभी नहीं खोले। बल्कि बंद कर दिए, सभी को नौकरी की खोज करने वाला बना दिया और युवाओं की रचनात्मक शक्ति खत्म कर दी।”

लेकिन एक बार हमारी शिक्षा प्रणाली को युवाओं को उद्यमी बनाने के अनुरूप बना दिया गया, तो अगला कार्य होगा हमारी वित्तीय प्रणाली को भी उनकी सहायता के उपयुक्त बनाना। एक ओर जहां पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में “हमें अपने उद्यमियों पर गर्व है, हमें उद्यमी शब्द की परिभाषा को बदलना होगा और इसे अधिक विस्तृत और समावेशी बनाना होगा।”

प्रवासी श्रमिकों का उदाहरण देते हुए, उन्होंने कहा कि उनमें से “लाखों लोग अपना हुनर बेचने, रोजगार के लिए अपने घर छोड़ देते हैं, या तो सड़कों पर अपना माल बेचते हैं, या अपने साथ विभिन्न नौकरियों के लिए ज़रूरी भिन्न-भिन्न कौशल और विशेष तकनीकें ले कर आते हैं, तभी अचानक से उनको कोरोना का दर्द होता है और हमने उनमें से लाखों को घर लौटते देखा है। मैं पूछता हूँ कि यह कैसी अर्थव्यवस्था है जो अपने प्रवासियों के साथ ऐसा व्यवहार करती है?”

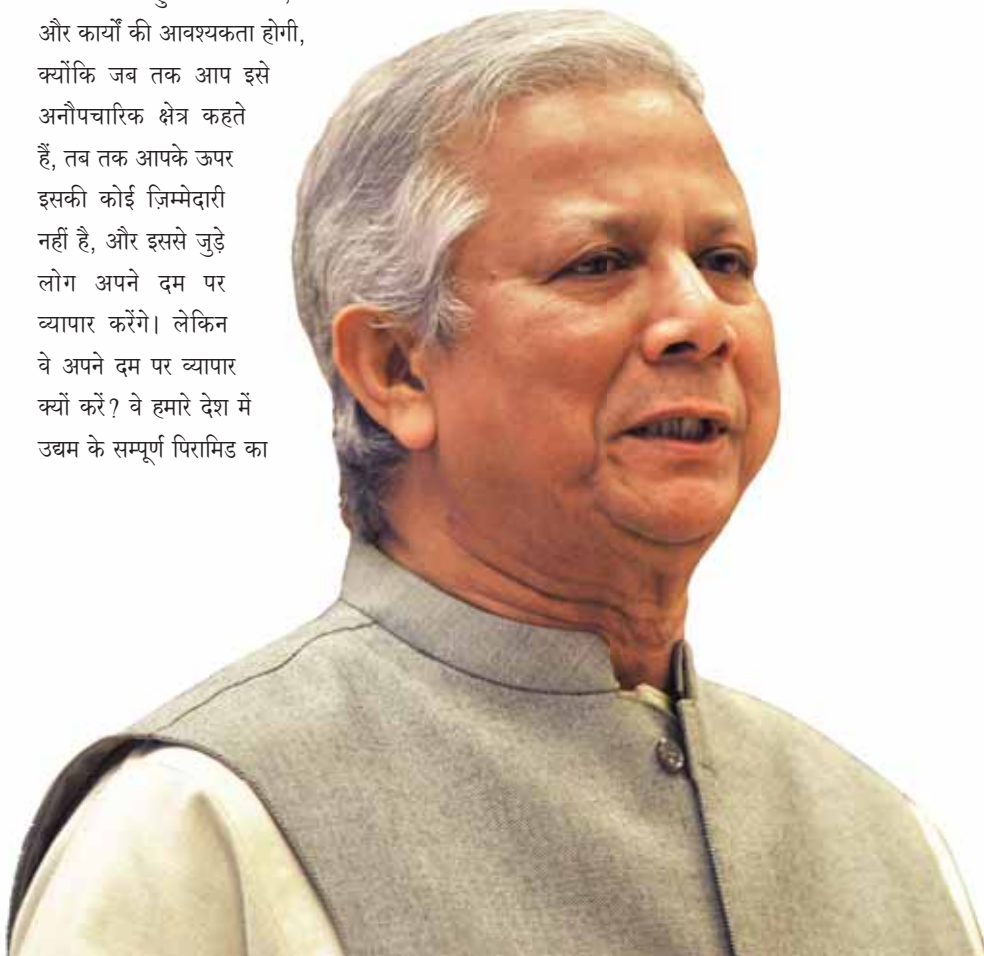
यूनस ने सुझाव दिया कि “अनौपचारिक क्षेत्र की संपूर्ण अर्थव्यवस्था को एक सूक्ष्म उद्योग क्षेत्र के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। यदि ऐसा हुआ तो आपको बहुत सारे नियमों, नीतियों और कार्यों की आवश्यकता होगी, क्योंकि जब तक आप इसे अनौपचारिक क्षेत्र कहते हैं, तब तक आपके ऊपर इसकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है, और इससे जुड़े लोग अपने दम पर व्यापार करेंगे। लेकिन वे अपने दम पर व्यापार क्यों करें? वे हमारे देश में उद्यम के सम्पूर्ण पिरामिड का

आधार हैं। इसलिए हमें सूक्ष्म उद्यमी के विचार को क्रियान्वित कर उस योजना को प्रोत्साहन देना होगा।”

उनकी मदद के लिए रोटेरियनों से आगे आने और उनके साथ साझेदारी के लिए जोर देते हुए, नोबेल पुरस्कार विजेता ने कहा, “मैं चाहता हूँ कि ऐसे उपक्रमों में रोटरी एक संयुक्त भागीदार बने इसका सहयोग करे, समर्थन दे और वित्त पोषण करे।”

माइक्रोफाइनेंस के भविष्य पर पूछे गए एक प्रश्न पर और “क्या यह इस भारी संकट से बच पाएगा,” यूनस ने मुस्कुराते हुए कहा, “मुझे लगता है कि भारत की लगभग 65-70 प्रतिशत आबादी अनौपचारिक क्षेत्र में आती है, वे अपना खयाल खुद रखते हैं और अपने ही दम पर ज़िंदा हैं, अपनी आर्थिक जरूरतों के लिए ऊंची ब्याज दरों पर किसी ना किसी साहूकार द्वारा दिए जाने वाले ऋण पर निर्भर रहते हैं; छोटा, बड़ा या पड़ोस का साहूकार।”

और इतनी मेहनत करके वो जो कुछ भी कमाते हैं उसका एक बड़ा हिस्सा साहूकारों द्वारा हड़प लिया



जाता है। “तो हम उनके लिए भी एक वित्तीय प्रणाली की व्यवस्था क्यों नहीं कर सकते? पहले कहा जाता था कि हम गरीब लोगों के लिए बैंकिंग नहीं कर सकते। पर हमने साबित कर दिया है कि यह बांग्लादेश और भारत सहित अन्य जगहों पर भी किया जा सकता है। इसके बावजूद भी यह लाखों लोगों की पहुंच के भीतर नहीं है। तो हम वित्तीय संस्था का निर्माण इस तरह से क्यों नहीं करते कि कोई भी इससे अछूता नहीं रहे। यदि हम ऐसा करते हैं, तो इन लालची साहूकारों की अवधारणा ही गायब हो जाएगी। और हम ये कर सकते हैं।”

माइक्रोक्रेडिट को “बिल्कुल वैध बैंकिंग की तरह स्थापित किया गया था। बांग्लादेश में हमने इसे छोटे स्तर पर शुरू किया और फिर भारत में यह बड़े पैमाने पर फैल गया और फिर सम्पूर्ण विश्व में ये एक अद्भुत वैश्विक घटना बन गई। और फिर भी, तुलनात्मक रूप से, वित्तीय क्षेत्र में यह सिर्फ एक छोटा सा प्रयास है क्योंकि इस सम्बन्ध में कोई सरकारी नीति नहीं है। मैं बार बार यह जोर दे रहा हूँ कि सरकार माइक्रो आन्टर्प्रनर्स (ME) मंत्रालय क्यों नहीं बनाती है। यदि आपके पास श्रम मंत्रालय है, तो (ME) मंत्रालय क्यों नहीं; जबकि संख्या में वे अधिक हैं और संभवतः अधिक शक्तिशाली भी हैं। लेकिन एक बार जब आपके पास (ME) मंत्रालय होगा, तो आपके पास इस क्षेत्र के विकास और निर्माण की और एमई बैंक बनाने की जिम्मेदारी भी होगी जिनका उद्देश्य पैसा कमाना नहीं होता है। ग्रामीण बैंक का सृजन भी पैसा बनाने के लिए नहीं बल्कि लोगों की सेवा करने के लिए किया गया था।”

इस सवाल पर कि क्या माइक्रोफाइनेंस इस महामारी से बच पायेगा, यूनस ने बांग्लादेश का उदाहरण दिया जिसने माइक्रोफाइनेंस के सफल

इंसान जन्मजात उद्यमी हैं, लेकिन हमारी शिक्षा प्रणाली ने उसके लिए अवसर के द्वार कभी नहीं खोले।

रोटरी किस प्रकार परिवर्तन ला सकती है

यह कहते हुए कि कोविड -19 ने “हमें बड़े ही अप्रत्याशित और भयावह तरीके से साहसिक निर्णय लेने का अवसर दिया था,” नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनस ने रोटरी से इस मिशन में अग्रणी भूमिका निभाने का आह्वान किया। रोटरी के प्रति अपने आदर और सम्मान को प्रदर्शित करते हुए उन्होंने कहा, “रोटरी के साथ मेरा रिश्ता बहुत पुराना है, हमने विभिन्न स्तरों पर एक साथ कई बार काम किया है। कोरोना बाद की दुनिया में आपकी भूमिका बड़ी है और महत्वपूर्ण है, सिर्फ भारत या इस उपमहाद्वीप में ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी।”

“सबसे बहुत महत्वपूर्ण भूमिका जो रोटरी निभा सकती है वह है पुराने रूढ़िवादी, विचारों को फिर से परिभाषित करने और उन पर पुनर्विचार करना। एक बार यह हमने ठान लिया कि हम उस आधी अधूरी दुनिया में नहीं लौटना चाहते जहां हम कोविड से पहले रह रहे थे, “अगला सवाल यह है कि फिर हम कहाँ जाएँ और हम उस नई दुनिया में कैसे

प्रवेश करें, जो पुरानी दुनिया से एकदम उलट है जहां ग्लोबल वार्मिंग नहीं है और जहां धन का केन्द्रीकरण कुछ ही हाथों में सीमित नहीं है,... ऐसी दुनिया जहां धन का संग्रहण नगण्य है और बेरोजगारी शून्य पर।”

उन्होंने कहा कि “हम जानते हैं कि यह काम कैसे हो सकता है और ऐसा नहीं कि पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं; हम जानते हैं कि जीवाश्म ईंधन कैसे प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन हम कुछ नहीं करते। हम जानते हैं कि प्लास्टिक खराब चीज है लेकिन इससे कैसे छुटकारा पाया जाए, हम इसका प्रयास नहीं करते हैं। हम भली भांति जानते हैं कि AI क्या है लेकिन हम इस विषय को छेड़ते भी नहीं हैं।”

वह आशावान थे कि रोटरी इसमें मदद कर सकता है। “मैं रोटरी की बात इसलिए करता हूँ क्योंकि मुझे मालूम है कि यह एक सुव्यवस्थित संगठन है और इसमें जबरदस्त ताकत है, और वो भी वैश्विक ताकत। जिस प्रकार रोटरी क्लब किसी परियोजना को हाथ में लेते हैं और पूरा करते हैं, उसे देखें।”

मॉडल को प्रदर्शित किया था। “यह देश प्राकृतिक आपदाओं के लिए जाना जाता है, और हमारे ऊपर एक के बाद एक आपदाएँ आती थीं। कोविड के समय में भी हमारे यहां बहुत बड़ी बाढ़ आई थी। लेकिन इसके बारे में किसी ने नहीं लिखा।”

उन्होंने कहा बांग्लादेश में, “बाढ़ के दौरान जब पानी आपके घर में प्रवेश कर जाता है, तो इसे सामान्य बाढ़ कहते हैं, लेकिन इसे असामान्य बाढ़ तब कहते हैं जब पानी आपकी छत से ऊपर चला जाता है और आप अपना सब कुछ खो देते हैं ... आपका घर, आपके जानवर, आपकी बचत, सब

कुछ। और यह लगभग नियमित रूप से होता ही रहता है, लेकिन ऐसे समय में भी, माइक्रो क्रेडिट ज़िंदा रहता है, गायब नहीं होता।”

उन्होंने कहा कि माइक्रो क्रेडिट कार्यक्रम की संरचना इस तरह से की गई है कि “यह लोगों के लिए काम करे और मुसीबत में लोगों के साथ खड़ा रहे और उन्हें वापस अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद करे। सामाजिक व्यवसाय का सार यही है; यह आपको अपने पैरों पर खड़े रखने के लिए बनाया गया है। कोविड -19 के दौरान, आपने अपने घरों, जानवरों, आदि को नहीं खोया है। हमारे यहां आने वाली कुछेक बाढ़ की तुलना में, यह एक

जन सामान्य की भलाई के लिए टीका



जिस प्रकार कोरोना वायरस ने अपने शिकंजे में जकड़ लिया और पूरी दुनिया को एक तरह से अंग कर दिया है और इस हताशा के बीच एक टीके की आवश्यकता तुरंत महसूस हुई, “जब मैंने वैक्सीन की स्थिति पर नज़र डाली तो ये देख कर मैं बहुत चिंतित हुआ कि सभी बड़ी कंपनियां ज़बर्दस्त मुनाफा कमाने की तैयारी कर रही हैं,” प्रो मुहम्मद यूनुस ने कहा।

तो, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, उन्होंने सोचा कि “दुनिया भर के नेताओं से यह अपील करनी ज़रूरी है कि इसे आम जनता की भलाई के लिए टीका घोषित किया जाए ताकि इसपर किसी का स्वामित्व न रहे और ना ही किसी को इससे बड़ा मुनाफा कमाने का अधिकार हो। हम पोलियो वैक्सीन से प्रेरणा लें। जोनास साक इसके अविष्कारक थे, उन्होंने कहा कि यह जनता का टीका होगा।” (एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में जब साक से इसके पेटेंट के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने अपने चिर परिचित अंदाज़ में कहा: क्या आप सूरज को पेटेंट करेंगे?)

इसी तर्ज पर, कोविड -19 वैक्सीन के लिए वह नो-पेटेंट की अवधारणा को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं, उन्हें कुछ महत्वपूर्ण लोगों का समर्थन मिला है और “अब हम इस प्रस्ताव को संयुक्त राष्ट्र में लाने की कोशिश कर रहे हैं और इसके लिए हमने प्रमुख देशों को साइन अप करने के लिए आमंत्रित किया है, जिसमें भारत भी शामिल हैं।”

यूनुस ने कहा कि चिंता का विषय यह है कि अगर ये वैक्सीन पांच या छह प्रमुख फार्मा कंपनियों के नियंत्रण में रही, जिनको पहले से ही अमेरिका, ब्रिटेन और कुछ अन्य यूरोपीय देशों द्वारा लाखों डॉलर का भुगतान किया जा रहा है, और जब यह आएगा तो जाहिर है कि पहले ये अमीरों की सेवा करेगा। “उसके बाद मध्यम वर्ग की बारी आएगी और जब तक यह लाइन के अंत में खड़े लोगों तक पहुंचेगा, तब तक या तो उनकी मृत्यु हो चुकी होगी या फिर गंभीर संकट से ग्रस्त हो चुके होंगे। लालची लोग न केवल बहुत पैसा कमाएंगे, बल्कि हर जगह नकली और एक जैसे दिखने वाले टीके भी नज़र आएंगे, जिसकी मार्केटिंग एक बड़े विपणन अभियान द्वारा की जाएगी।”

लेकिन अगर इस वैक्सीन को पेटेंट-मुक्त उत्पाद बना दिया जाए, तो वास्तविक या नकली टीकों से

अरबों डॉलर का लाभ नहीं होगा और “हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि दुनिया के गरीब लोगों को यह मुफ्त में मिलेगा। सामाजिक व्यवसाय इस टीके को गरीबों को मुफ्त दे सकते हैं और इसके लिए अमीर लोगों को ये टीका थोड़ा महंगा बेचा जा सकता है।”

इस बिंदु पर हस्तक्षेप करते हुए, RIPE शेखर मेहता ने कहा कि यूनुस ने पोलियो का उदाहरण दिया था, “और दुनिया भर से पोलियो का उन्मूलन करना रोटरी की विरासत है परम्परा है। अब हमने इस बात पर चर्चा शुरू कर दी है कि कोरोना वैक्सीन वितरण में रोटरी क्या भूमिका निभा सकती है।”

उन्होंने नोबेल पुरस्कार विजेता से सुझाव मांगा कि रोटेरियन किस प्रकार सहायता कर सकते हैं, जिसके उत्तर में यूनुस ने कहा: “यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। अंततः जब टीका आएगा, अधिकांशतः इसे दुनिया भर की सरकारों द्वारा नियंत्रित किया जाएगा। इसलिए आपको सरकार से बातचीत करनी चाहिए कि रोटरी की भूमिका क्या रहेगी। सरकारें इसका श्रेय लेना चाहेंगी और ये सुनिश्चित करेंगी कि मंत्री जी आएँ और भाषण दें, लेकिन वास्तविक कार्य किसी और को ही करना होगा। इसके लिए कूटनीतिक स्तर पर बातचीत करनी होगी। लेकिन आपको सबसे दूर दराज स्थानों पर जाने और उन लोगों तक यह टीका पहुँचाने की ज़िम्मेदारी निभानी होगी।”

ऐसे कई बियाबान और दुर्गम स्थल हैं जहाँ निकट भविष्य में कोई भी प्रवेश करने का साहस नहीं करेगा, इसलिए यह ज़िम्मेदारी रोटरी को लेनी चाहिए; भले छोटा ही सही लेकिन महत्वपूर्ण फर्क पड़ेगा। “और यहाँ मैं बात कर रहा हूँ सम्पूर्ण विश्व की। आपको लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और इसी तरह के क्षेत्रों में जाना होगा, जिन्हें सबसे अंत में टीका मिलेगा।”

चौंकाने वाली ऐसी भविष्यवाणियां

भी की गई थीं कि अगले 15

वर्षों में लगभग एक अरब लोग

नौकरी से बाहर हो जाएंगे।

छोटी और अस्थायी चीज है, आप को कष्ट हो रहा होगा लेकिन आपका परिवार अभी भी आपके साथ है।”

RIPE मेहता ने पूछा कि रोटरि को क्या करना चाहिए और यह किस प्रकार मदद कर सकता है, यूनस ने कहा: “कई चीजें कर सकते हैं, हमारे यहां हर साल समारोह आयोजित किए जाते हैं, जिनमें आप भाग ले सकते हैं; हमारे पास कुछ बड़ी कंपनियां हैं जैसे कि फ्रांस की डेनोन, मैकेन फूड्स, कनाडा की और कुछ जापानी कंपनियां। हमारे पास व्याख्यानों की श्रृंखला है, जिसमें आप भाग ले सकते हैं और वहां से नए विचार ग्रहण कर सकते हैं। रोटरि क्लब एक सोशल बिजनेस फंड

का सृजन कर सकते हैं, जो कि एक दो-तरफा फंड है जिसमें पैसा वापस आएगा, इसलिए आप अधिक प्रोजेक्ट कर सकते हैं।”

जो बेरोजगार उद्यमी बनने के इच्छुक हैं, ये व्यवसाय उन्हें नए व्यापार के विचारों के साथ आगे आने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें पेशेवर सलाह के साथ धन दे कर भी उनकी मदद करते हैं। “पहली बार आप पैसा देंगे, यह लौट आएगा और फिर अगर वह दूसरे चरण में भी पैसा चाहता है, तो उस व्यवसाय में सामाजिक व्यापार आपका दूसरा चरण हो सकता है। पहले चरण की तुलना में, सामाजिक व्यवसाय एक छोटी सी बात हो सकती है। लेकिन इस तरह आप बहुतों की मदद कर सकते हैं।” सिर्फ पांच लोगों को बेरोजगारी से मुक्त करवाना कोई रॉकेट साइंस नहीं है, लेकिन हम करते क्या हैं कि जब कोई बेरोजगार व्यक्ति हमारे पास आता है तो हम नौकरी के लिए उसकी सिफारिश कर देते हैं। लेकिन वह समाधान नहीं है। समाधान यह है कि यह आदमी दूसरों के लिए रोजगार कैसे सृजित कर सकता है। वह परिवर्तनकारी है। बांग्लादेश में हम कहते हैं कि हम नौकरी की तलाश में नहीं हैं, बल्कि नौकरी पैदा करने वाले हैं। कई सफल लोगों ने छोटी सी शुरुआत की थी, किस्मत ने उनका साथ दिया, लेकिन लाखों लोगों को यह पसंद नहीं है।”

इससे पहले, बैठक को संबोधित करते हुए, मेहता ने नोबेल पुरस्कार विजेता के साथ कुछ सामुदायिक विकास परियोजनाएं साझा कीं जो भारत में रोटरियन पानी और स्वच्छता, स्वास्थ्य, साक्षरता और शिक्षा, आजीविका बढ़ाने के क्षेत्रों में कर रहे हैं। “यह भारत में रोटरि का 100 वां वर्ष है

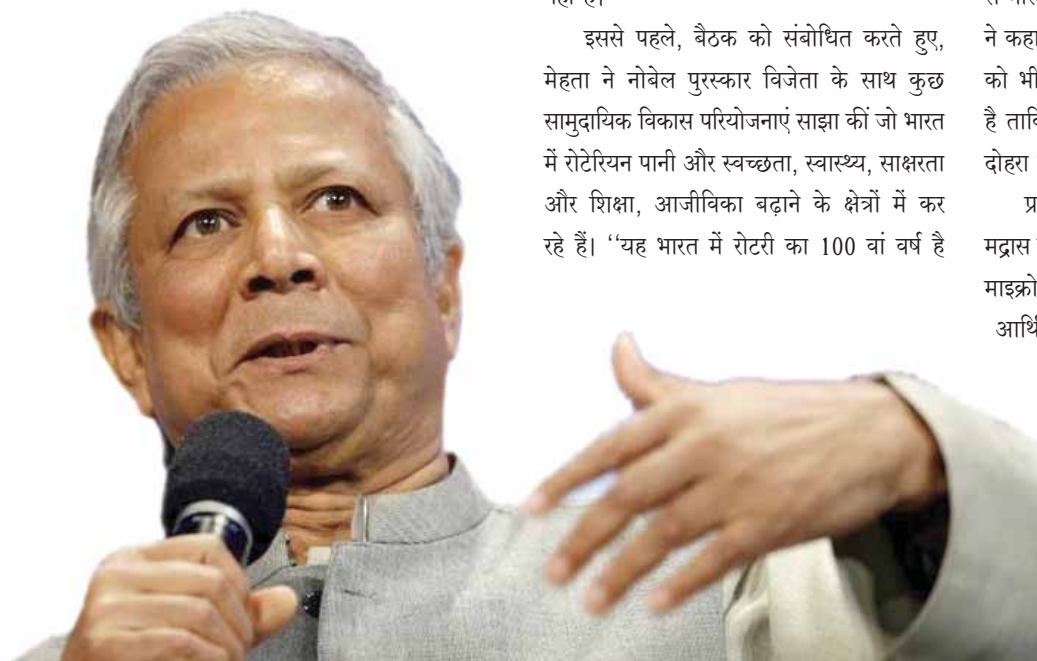
और हमने सोचा कि हमारे यहां करीब 150,000 रोटरियन हैं, समय आ गया है कि अब रोटरि राष्ट्र निर्माण में भूमिका निभाए। छोटी मोटी परियोजनाएं करना एक 100 साल पुराने संगठन के अनुरूप नहीं है, इसलिए पिछले 5-6 वर्षों से हम विभिन्न मुद्दों पर काम कर रहे हैं, जिसमें साक्षरता सबसे अहम है।”

भारत को पूर्ण साक्षर बनाना एक ऐसा जुनून है जिसे सभी रोटरियनों ने साझा किया और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने कई कदम उठाये हैं, इनमें नवीनतम पहल है सरकारी स्कूलों में ई-लर्निंग कार्यक्रम शामिल किया जाना। “2025 तक, हम भारत के प्रत्येक सरकारी स्कूल तक पहुंचना चाहते हैं और सीखने का माध्यम ऑडियो विजुअल में बदलना चाहते हैं। आपने और हमने काली सफ़ेद पाठ पुस्तकों के माध्यम से सूर्यग्रहण के बारे में सीखा है, लेकिन कल्पना कीजिए कि अब हम बच्चों को पृथ्वी, चंद्रमा, आदि की गति दिखा सकते हैं ताकि बच्चे इन को बेहतर तरीके से समझ सकें।”

उन्होंने बताया कि इस महामारी के दौरान रोटरि ने भारत सरकार के साथ एक साझेदारी की है, जिसके तहत रोटरि द्वारा उपलब्ध करवाए गए ई-लर्निंग पाठ्यक्रम की सामग्री को सरकार द्वारा शिक्षा के लिए बनाये गए 12 टीवी चैनलों के माध्यम से भारत के कोने कोने तक पहुंचाया जाएगा। मेहता ने कहा कि अब नेपाल और बांग्लादेश के रोटरियन को भी इस परियोजना में शामिल किया जा रहा है ताकि वे भी अपने देश में ई-लर्निंग मॉडल को दोहरा सकें।

प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए रोटरि क्लब मद्रास के अध्यक्ष कपिल चितले ने कहा कि “यूनस माइक्रो क्रेडिट और माइक्रो फाइनेंस की दुनिया में आर्थिक क्रांति के जनक थे। जहां दुनिया का 99 प्रतिशत धन यहां की एक प्रतिशत आबादी के पास है, इस तरह की एक अलग सोच के द्वारा अकेले ही आर्थिक मंदी की खाई को पाटने की उम्मीद की जा सकती है।”

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा



लुई, एक प्रेरक और मार्गदर्शक व्यक्ति

राजेन्द्र साबू



बाएं से : पूर्व रो ई अध्यक्ष गण लुई गिये, राजेन्द्र साबू, के आर रविंद्रन और फ्रैंक डेवलिन।

लुई विसैंट गिये के पास अद्वितीय दृष्टिकोण, निर्विवाद अखंडता और नायाब बौद्धिक क्षमता थी। उनकी दक्षता और सरलता ने उन्हें इस अग्रणी सेवा संगठन - रोटरी - का एक असाधारण नेता बनाया। वह दूर तक देख सकते थे और वह जानते थे कि सभी सुंदर भावनाएं एक अकेले सुंदर कर्म के आगे हल्की हैं। दूरदृष्टि रखने वाले और कर्म करने वाले वह व्यक्ति एक जमीनी स्तर के रोटरियन थे जो भविष्य के बारे में सोचते थे।

मैं लुई से 1983 में मॉंटे कार्लो में मिला था, जब वह विधान परिषद के एक प्रतिनिधि थे, और मैं, एक रो ई निदेशक था। मैं और उषा जल्दी ही सेलिया और लुई के दोस्त बन गए। हम उन्हें लव बर्डी कहकर चिढ़ाते थे क्योंकि वे इतनी उम्र होने के बावजूद भी बहुत युवा थे। लुई, जो 1974 में एक गवर्नर बने, मुझसे दो साल वरिष्ठ थे। वह तीन साल - 1981-83 - के लिए समूह चर्चा नेतृत्वकर्ता (अब प्रशिक्षण नेतृत्वकर्ता) थे। मुझे यह अवसर दो साल पहले मिला

था। जब हम 1983 में मिले थे, तो हम अपनी रोटरी यात्रा के अनुभवों को याद करके बहुत खुश हुए थे।

1990-91 में, लुई अध्यक्ष पाउलो कोस्टा के सहयोगी थे और मैं रो ई अध्यक्ष निर्वाचित था। पाउलो और मैं दोनों ही बहुत करीबी दोस्त थे लेकिन कुछ ऐसे संवेदनशील मुद्दे थे जो हमने लुई और मेरे सहयोगी एवं पूर्व रो ई उपाध्यक्ष जॉर्ज आर्केनाक्स की मदद से हल किए थे।

रो ई अध्यक्ष के रूप में मैंने अर्जेंटीना का दौरा किया था और लुई ने मेरी तीन दिवसीय यात्रा का आयोजन किया और वह मेरे स्थानीय सहयोगी थे। एक विनम्र भेंट हेतु हम अर्जेंटीना के राष्ट्रपति कार्लोस मेनम के कार्यालय पहुंचे। हमें आवंटित किए गए समय पर, उनके सचिव ने कहा: आम तौर पर वह 15 मिनट देते हैं लेकिन अगर वह 10 मिनट में ही कॉफी मांग ले, तो यह उनका निर्णय होगा। उस समय अर्जेंटीना में हैजा की महामारी फैली हुई थी, और प्रारंभिक शिष्टाचार भरी बातचीत के बाद, मैंने राष्ट्रपति

जी को बताया कि भारत हर साल हैजा के प्रसार से जूझता है लेकिन इसे नियंत्रित करने में सक्षम है। यदि वह चाहें, तो मैं एक सप्ताह के भीतर भारत से अर्जेंटीना के लिए कुछ विशेषज्ञों की यात्रा आयोजित कर सकता हूँ। वे चार सप्ताह तक यहाँ रुक सकते हैं और स्थानीय डॉक्टरों के साथ मिलकर इस महामारी को नियंत्रित करने की योजना बना सकते हैं।

राष्ट्रपति ने तुरंत कॉफी मँगवाई और उनके स्वास्थ्य मंत्री ने हमारे साथ लगभग एक घंटा बिताया। मैंने एक सप्ताह के भीतर भारत से तीन विशेषज्ञ डॉक्टरों और एक सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ को भेजने का आयोजन किया, और राष्ट्रीय समन्वयक के रूप में लुई के नेतृत्व वाली यह परियोजना सफल रही। वह एक यादगार अनुभव था।

क्लाइमैक्स तब आया जब 1995-96 में लुईस एक रो ई अध्यक्ष निर्वाचित थे और मैं एक न्यासी अध्यक्ष निर्वाचित था। लुई ने कहा, राजा, अगले साल पॉल हैरिस की 50वीं वर्षगांठ है। हम एक स्थायी

कार्यक्रम के साथ इस अवसर को यादगार बनाने के लिए क्या कर सकते हैं? मैंने कहा कि रोटरी लगभग हर सार्थक कार्यक्रम कर चुका है और सोचा कि नया क्या किया जा सकता है। लेकिन लुई बहुत प्रेरक थे और मैंने कहा: हम सोचेंगे। मैंने एक पॉल हैरिस सेंटर फॉर इंटरनेशनल स्टडीज़ इन पीस के बारे में सोचा, और अपने विचार की रूप रेखा प्रस्तुत की। लुई रोमांचित थे, लेकिन एक व्यावहारिक नेता होने के नाते, उन्होंने कहा कि यह एक वृहद स्तर का कार्यक्रम होगा। क्या रो ई या टीआरएफ इसे संभाल सकते हैं? 1996-97 के ग्लासगो सम्मेलन के दौरान, लुई और मैंने संयुक्त रूप से उस कार्यक्रम की घोषणा की, जिसे अब फाउंडेशन के प्रमुख कार्यक्रम, रोटरी पीस सेंटर, के रूप में जाना जाता है।

1995-96 के अंत तक, रो ई बोर्ड ने न्यासी प्रमुख के कार्यालय को वन रोटरी सेंटर की 17वीं मंजिल पर स्थानांतरित करने का फैसला किया, और न्यासियों ने किसी अन्य स्थान पर संस्थान को पूर्ण रूप से स्थानांतरित करने की धमकी दी। एक बार फिर लुई और मेरे व्यक्तिगत संबंधों ने मदद की, और हमने ओफहारे क्षेत्र के एक होटल में रो ई अध्यक्ष, दो नवनिर्वाचित अध्यक्षों, टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष और

दो आगामी अध्यक्षों के लिए दो दिन तक रुकने की व्यवस्था की। इससे उनका तनाव, क्रोध और अन्य नकारात्मक प्रतिक्रियाएं खत्म हो गईं। रो ई मंडल और टीआरएफ न्यासियों के बीच सामंजस्य बनाए रखने के लिए एक कार्यात्मक योजना तैयार की गई। मैं समझता हूँ कि तनाव मुक्त होने की यह अवधारणा अभी भी प्रचलित है।

अगस्त 1996 में अफ्रीका से पोलियो हटाओं अभियान, जिसका उद्घाटन राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला द्वारा किया गया था, शुरू करने के लिए अफ्रीका की हमारी यात्रा सार्थक और महत्वपूर्ण थी। हम में से लगभग 30 लोग राष्ट्रपति मंडेला से मिले, लेकिन सुरक्षाकर्मियों ने हमें उनसे हाथ मिलाने हेतु उनके नज़दीक नहीं जाने दिया। जैसे ही बैठक समाप्त हुई, मैंने राष्ट्रपति से रो ई अध्यक्ष लुई गियाय द्वारा उन्हें रोटरी की एंड पोलियो बटन लगाने की अनुमति मांगी। राष्ट्रपति इंकार नहीं कर सके, और शाम को हमने राष्ट्रपति मंडेला के साथ नृत्य भी किया। यह उस वर्ष का मुख्य आकर्षण था।

लुई ने कई बार भारत का दौरा किया, रो ई अध्यक्ष के प्रतिनिधि के रूप में, वह 25-28 जनवरी, 2001, तक चंडीगढ़ में थे। 26 जनवरी को भारत के

गणतंत्र दिवस पर, गुजरात में भयानक भूकंप आया। गवर्नर रंजीत भाटिया के नेतृत्व में, हमारे मंडल ने आपदा पीड़ितों के लिए धन और आवश्यक सामग्री इकट्ठा की, सेलिया और लुई इसके लिए उदारतापूर्वक दान करने वाले पहले व्यक्ति थे।

हम अनेक अवसरों... शांति केंद्र संगोष्ठियों, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और सभाओं, पर एक साथ होते थे, और हमने हमेशा एक साथ समय बिताया। इसी बीच सेलिया रोटरी पदानुक्रम में ऊपर आई और इस अद्भुत जोड़ी ने उषा और मेरे दिलों को पूरी तरह से जीत लिया।

उस दिल का एक हिस्सा चला गया है। हम उन्हें याद करते हैं। जिस व्यक्ति का रोटरी में पूरा परिवार था, जिसने अपने देश अर्जेंटीना का राजदूत बनकर रोटरी का नाम अधिक ऊँचा उठाया, जिसने रोटरी में पीढ़ियों के बीच पुल का काम किया, उन्हें रोटरी याद करेगी।

लुई गिये आगे का रास्ता दिखाने वाले पथप्रदर्शक ही नहीं थे। वह खुद एक मशाल थे, और वह एक चमकती निशानी छोड़ गए हैं।

लेखक पूर्व रो ई अध्यक्ष हैं

रोटेरियन फ़नशो टाइम्स के 100 व्यक्तियों में शामिल

टीम रोस्ली न्यूज़



डॉ टुंजी फ़नशो, रोटरी के नाइजीरिया नेशनल पोलियोप्लस अध्यक्ष, को टाइम पत्रिका द्वारा प्रतिवर्ष सूचीबद्ध विश्व के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में शामिल किया गया है। वह वाइल्ड पोलियो-फ्री नाइजीरिया के लक्ष्य को पूरा करने और अफ्रीकी क्षेत्र में वायरस को मिटाने हेतु रोटरी व उसके सहयोगियों के साथ काम करने में अपने महत्वपूर्ण नेतृत्व के लिए चिन्हित किया गया है। यह सम्मान पाने वाले वह पहले रोटरी सदस्य हैं।

पीडीजी डॉ फ़नशो एक हृदय रोग विशेषज्ञ और रोटरी क्लब लेक्की, रो ई मंडल 9110, लागोस, नाइजीरिया के सदस्य हैं।

टाइम्स 100 दुनिया के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों की ऐक्टिविज़म, नवीनता और उपलब्धि को चिन्हित करता है। पहले ये सम्मान प्राप्त करने वालों में राष्ट्र प्रमुख एंजेला मर्केल, दलाई लामा और पोप फ्रांसिस जैसे धार्मिक व्यक्ति, ओपरा विन्फ्रे और बोनो जैसी हस्तियां, बिल गेट्स जैसे परोपकारी तथा मलाला यूसुफ़ज़ई जैसे कार्यकर्ता शामिल हैं। ■

अलविदा, कैप्टन लुई

के आर रविंद्रन

लुई जिआय, रो ई के 86वें अध्यक्ष, हमें कुछ अद्भुत यादें छोड़ गए। रोटरी जगत उनका बहुत सम्मान करता था और वह दक्षिण अमेरिकी रोटरी के नेतृत्वकर्ता थे। उनकी थीम थी भविष्य को कर्म और दृष्टिकोण के साथ सवारें। एक बुद्धिमान और दूसरों से प्यार करने की असीम क्षमता रखने वाले व्यक्ति होने के नाते, उन्होंने कहा, 'मेरा मानना है कि सभ्यता हजारों ईंटों से बनी एक बड़ी इमारत की तरह होती है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति एक ईंट की तरह ही उस भव्य इमारत का समर्थन करता है जिसे हम मानवता कहते हैं।' यही कारण था कि उनकी जैकेट का रंग ईंट की तरह ही लाल था। मैं लुई को कप्तान के लिए स्पैनिश शब्द 'एल कैपिटन' कहकर संबोधित करता था।

वह एक सार्वजनिक लेखापाल और एक व्यापारी थे, और हम दोनों को एक ही चीज़ पसंद थी - रैली कार रेसिंग। लुई बहुत अच्छे थे और वह इस उच्च

स्तर की प्रतियोगिता के एक चैंपियन बन गए थे। एक रेस के दौरान आरंभ रेखा पर उन्होंने भूरी आँखों और लंबे बालों वाली एक युवती को देखा जो अपने पिता के लिए उस रेस में शामिल हुई थी। वह कहते हैं कि उस रेस की आरंभ रेखा पर उस एक पल में ही उन्होंने जान लिया था कि यह महिला, सेलिया, उनकी पत्नी बनेंगी! उन्होंने यह कभी नहीं बताया कि इतना ध्यान भंग होने के बाद वह उस रेस को जीते या हारे!

लुई और सेलिया एक खूबसूरत जोड़ी थे। सेलिया ने अपनी योग्यता के दम पर अपनी अलग पहचान बनाई। एक स्कूल शिक्षिका, एक संगीत प्रोफेसर, एक समाचार रिपोर्टर, जीवंत और आकर्षक व्यक्तित्व की धनी होने के नाते, वह 2014-15 में रो ई की उपाध्यक्ष बनीं। निश्चित रूप से वह अपने समर्पित पति के समर्थन के बिना यह सब हासिल नहीं कर सकती थीं। रोटरी में लुई के करियर का उदय तब हुआ, जब वह ब्यूस आयर्स के पास स्थित रोटरी क्लब एसेसीप्स के सदस्य बने, वही शहर जहाँ उनका जन्म हुआ था।

वह उस समय 22 वर्ष के थे और अधिकांश सदस्य उनके पिता और कुछ दादा की उम्र के थे।

पहली बार मैंने लुई को नज़दीक से तब देखा था, जब जनवरी 1993 में मैं और वनाथी एनाहेम, लॉस एंजिल्स, में ट्रेनिंग लीडर्स (चर्चा करने वाले नेता) के उद्घाटन समारोह में गए थे और उन्होंने सेलिया के साथ एक सहायक प्रबंधक के रूप में द्वार पर हमारा स्वागत किया। PRID कीथ बर्नहैम संचालक थे।

मुझे दूसरे वर्ष भी बुलाया गया था और वह मेरे प्रबंधक बन गए और उनकी टीम को 'जिआय के ग्लोबल जीनियस' के नाम से जाना जाता था। मैंने तब लुई में एक पैदाइशी नेतृत्वकर्ता और एक पूर्ण व्यक्ति के गुणों को देखा। यह सिर्फ रोटरी के बारे में उनकी गहन जानकारी नहीं थी। किसी व्यक्ति का जल्दी से आँकलन करने और उस व्यक्ति के स्तर पर खुद को समायोजित करने की उनकी क्षमता भी नहीं थी; यह अंग्रेज़ी, स्पैनिश और पुर्तगाली भाषा में उनकी शानदार वाक शक्ति कौशल भी नहीं था।



बाएं से : PRIP लुई गिये, सेलिया, वानती और TRF ट्रस्टी चेर के आर रविंद्रन, PRIP फ्रैंक डेवलिन और ग्लोरिया रीटा।

वह अक्सर अंग्रेजी में अपने भाषण की शुरुआत यह दावा करके करते थे कि उनकी अंग्रेजी अच्छी नहीं है, लेकिन कोई भी यह बात मानता नहीं था क्योंकि उनकी अंग्रेजी उत्कृष्ट थी। लेकिन मेरा मानना है कि वह एक नेता इसलिए है क्योंकि, जैसा कि किसी ने कहा था, वह कोई निराशावादी नहीं है जो हवा के बारे में शिकायत करता है, न ही आशावादी है जो हवा के बदलने की उम्मीद करता है। बल्कि वह एक ऐसे नेता है जो हवा की दिशा में बहते हैं। इसके साथ ही, उनमें सामाजिक कौशल थे - पियानो में निपुण, मांस के एक टुकड़े को भूनने में निपुण, और नृत्य मंच पर अपने पैरों को थिरकाने में निपुण!

एक साल बाद जब लुइ एक अध्यक्ष के रूप में नामित हुए तब वह पहली प्रमुख समिति थी जिसमें मैंने सेवा दी थी। लुइ ने अपनी थीम को विकसित करने के लिए मुझे अपनी समिति में शामिल किया। उस समिति के अध्यक्ष PRID हॉवर्ड वेन और उपाध्यक्ष PRIP पाओलो कोस्टा थे। मैंने उन्हें अध्यक्ष के पद की जगह लिए बिना उस समिति को निपुणता के साथ संचालित करते देखा था। पाओलो और लुइ, स्पष्ट रूप से पक्के दोस्त, के बीच झूठी लड़ाई और धक्का-मुक्की को देखना भी अच्छा था - जब पाओलो अध्यक्ष थे तब लुई उनके सहायक थे।

जब मुझे 2004 में न्यासी बोर्ड में नामित किया गया था, तब लुइ न्यासी अध्यक्ष थे.. उन्होंने मुझे निवेश समिति में भेज दिया। पहली बैठक के बाद मैं उनके पास गया और उस समिति से मुझे मुक्त करने के लिए कहा क्योंकि यह मेरे लिए बहुत जटिल था। वह मुझे एक तरफ ले गए और कहा "जब आप अध्यक्ष बन जाएंगे तो आपको निवेश के बारे में जानने की आवश्यकता पड़ेगी। इसलिए, वहीं रहकर उस विषय को सीखें!"

जब वह रो ई अध्यक्ष थे, तो टीआरएफ न्यासी प्रमुख राजेंद्र साबू थे। वे रोटरी शांति केंद्रों के मूल वास्तुकार थे और फिर से वे दोनों ही थे जो 1996 में "किंग पोलियो आउट ऑफ अफ्रीका" अभियान शुरू करने के लिए नेल्सन मंडेला के साथ दक्षिण अफ्रीका में थे। वे दोनों वास्तव में उस वर्ष एक शक्तिशाली टीम थे।

लुई वह उस्ताद थे जिन्होंने कई वर्षों तक टीआरएफ की फ्यूचर विज़न समिति का संचालन किया और इसे सफल बनाया। हमारा संस्थान उनका



कोलंबो में PRIP रवींद्रन के घर पर लुई गये और सिलिया।

बहुत ऋणी है। समिति के अध्यक्ष के रूप में उनका दृष्टिकोण स्पष्ट था कि संस्थान को क्या चाहिए और उसे कहाँ तक जाना चाहिए। उनकी समिति में PRIP रॉन बर्टन, PRIP मार्क मलोनी और वर्तमान न्यासी गुलाम वाहनवटी शामिल थे।

जब मैं खुद अध्यक्ष था, तो वह उन तीन पूर्व अध्यक्षों में शामिल थे जिन पर मैं बहुत भरोसा करता था। उन्होंने कभी भी मुझे अपनी सलाह और सहायता से निराश नहीं किया और मैंने उन्हें एक शाम अपने घर पर बहुत ही शानदार मलबेक वाइन की दो बोतलों के साथ मिलने आने हेतु आमंत्रित किया, जो वह अर्जेंटीना से लाए थे। उन्हें क्यूबा में रोटरी को फिर से शुरू करने के लिए मेरे द्वारा नियुक्त किया गया था।

2001 की एक सुबह लुई न्यूयॉर्क से इवेंसटन फोन पर बात करते हुए एक ऊँची मंजिल के होटल के कमरे से बाहर देख रहे थे जिसमें वह ठहरे हुए थे, और उन्होंने आसमान में एक कम ऊँचाई पर उड़ने वाले विमान को देखा और उसको देखकर चकित हुए। और अगले ही पल, विमान सीधे वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की इमारत में जा घुसा! वह वास्तव में 9/11 की घटनाओं के साक्षी थे।

लुई में एक उदारता थी, संवेदनशीलता की एक विशालता, साथी रोटेरियनों के लिए एक प्यार जो उन सभी लोगों द्वारा महसूस किया गया था जो उनके संपर्क में थे। श्रीलंका में हमारे घर पर एक शाम मैंने देखा कि कैसे उन्होंने रात्रिभोज पर मेरे अन्य क्लब साथियों के साथ बैठने हेतु खाने की मुख्य टेबल छोड़ दी थी - अपनी कहानियों से उन्हें प्रसन्न किया और उनके साथ जुड़ गए, और लुइ एक बढ़िया कहानीकार थे - 15-20 मिनट के अंतराल में वह परिश्रम, संघर्ष और संकल्प पर चर्चा कर सकते थे। उन्होंने और सिलिया ने रोटरी की अध्यक्षता में चार चाँद लगा दिए थे, उसे ताजा सांसें दी और सुंदरता एवं प्यार के लिए एक ठहराव दिया।

अलविदा, कैप्टन! हम आपके दिव्य चेहरे और आपकी मनमोहक मुस्कान को याद करेंगे और मैं हेमलेट से शेक्सपियर के सुंदर शब्दों को दोहराता हूँ "गुड नाइट, स्वीट प्रिंस; भगवान करें कि स्वर्गदूतों की उड़ान आपको आपके शाश्वत विश्राम की ओर ले जाए।"

लेखक पूर्व रो ई अध्यक्ष हैं

डोनेशन के साथ विश्व पोलियो दिवस मनाएं



1990 की दशक के शुरूआत में, पोलियो अभी भी मेरे देश में चिंता का विषय था। श्रीलंका पोलियो समिति के अध्यक्ष के रूप में मैं रोटेरियनों, सरकारी अधिकारियों और UNICEF प्रतिनिधियों की एक टॉस्क फोर्स का हिस्सा था जिन्होंने नेशनल इम्यूनाइजेशन डेज (NIDs) सहित पोलियो उन्मूलन प्रयासों को गति दी।

पर वह मुश्किल दिन थे, श्रीलंका में गृहयुद्ध छिड़ गया था। सरकार ने कहा कि NID केवल संघर्ष क्षेत्रों के बाहर ही हो सकता है। इसका यह मतलब था कि देश के एक तिहाई बच्चों का टीकाकरण नहीं हो पाएगा - एक अस्वीकार्य प्रस्ताव। रोटरी ने UNICEF के साथ मिलकर संघर्ष विराम स्थापित करने के लिए शुरूआत की। दुनिया के सबसे डरावने अनिश्चित विद्रोही नेताओं में से एक के साथ संपर्क करना आसान नहीं था, और बातचीत के दौरान हम रोटरी की अच्छी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के प्रति सजग/सावधान थे।

कुछ सप्ताह बाद, मेरे सचिव ने मेरे कार्यालय में एक पत्र दिया, उसके हाथ कांप रहे थे। खुद विद्रोही नेता के द्वारा हस्ताक्षरित पत्र, इसे पढ़ा गया: “प्रिय रवींद्रन, यदि आप दो दिनों के लिए अपनी सरकार को युद्ध समाप्त करने के लिए मना सकते हैं तो हम भी दो दिनों के लिए अपनी बंदूकें रखने के लिए तैयार हैं, क्योंकि हमारा युद्ध बच्चों के साथ नहीं है।”

NID को जल्द ही शुरू कर दिया गया और रोटरी के प्रतीक चिन्ह वाले वाहनों ने रेडक्रॉस के समान ही सम्मान एवं शिष्टाचार प्राप्त करते हुए विद्रोहियों के कब्जे वाले क्षेत्रों में टीकाकरण बूथ की यात्रा की। बाधाएं तभी तक दुर्गम लगती हैं जब तक हम उन्हें पार नहीं कर लेते।

मार्च 2020 में, पोलियो कार्यक्रम ने पोलियोटीकाकरण को अस्थायी रूप से बंद करने का कठोर निर्णय लिया, जबकि रोटरी सदस्यों ने जिस पोलियो इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण करने में मदद की थी उसका उपयोग कोविड-19 के उपचार के लिए किया जा रहा था। लेकिन अब जंगली पोलियो वायरस अफ्रीकी प्रान्तों से लुप्त हो गया है, अब यह केवल शेष दो देशों में ही घूम रहा है, हम निरंतर आगे बढ़ रहे हैं।

विश्व पोलियो दिवस 24 अक्टूबर को है और हमारे लिए यह रोटरी के पोलियो उन्मूलन प्रयासों के लिए धन जुटाने एवं जागरूकता बढ़ाने के प्रति शानदार अवसर है। वर्चुअल इवेंट प्लानिंग फंडिंग टूल के लिए endpolio.org/worldpolioday पर जाएं और अपने क्लब कार्यक्रमों को रजिस्टर करें। कृपया पोलियो को समाप्त करने के लिए अब दान करने पर विचार करें ताकि बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के द्वारा इसे 2:1 के अनुपात में मिलाया जा सके। महामारी के रूप में पोलियो के आगे फैलने का गंभीर खतरा है। आपकी मदद पहले से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है।

Aravind Kumar

के आर रवींद्रन
फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष

सही DRFCC को चुनें

नवंबर 2004 में, रोई मंडल ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि प्रत्येक क्लब की उसकी स्थायी समितियों के अंतर्गत एक रोटरी संस्थान समिति होना चाहिए। जब रोटेरियन अपने संस्थान और उसके द्वारा दुनिया में किए जाने वाले अच्छे कार्यों के बारे में जानेंगे, केवल तब ही वे आर्थिक रूप से और अपना समय एवं प्रतिभा के माध्यम से संस्थान का समर्थन करेंगे।



इसी प्रकार, हर मंडल में एक मंडल रोटरी संस्थान समिति धन एकत्रित करने वाली गतिविधियों में भाग लेने हेतु रोटेरियनों को शिक्षित, प्रेरित और प्रोत्साहित करने में सहायता करती है। इस समिति का नेतृत्व मंडल रोटरी संस्थान समिति अध्यक्ष (DRFCC) करता है। यह एक महत्वपूर्ण कार्य है और, प्रभावी होने के लिए, DRFCC के कार्य में निरंतरता होनी चाहिए और इसलिए उसे तीन साल के कार्यकाल के लिए नियुक्त किया जाता है।

DRFC को मंडल में संस्थान अनुदान और धन एकत्रित करने वाली गतिविधियों में भाग लेने हेतु रोटेरियनों को शिक्षित, प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। अनुभव यह बताते हैं कि जिन रोटेरियनों ने टीआरएफ कार्यक्रमों में भाग लिया है, या पहली बार यह देखा है कि संस्थान किस तरह से जीवन परिवर्तित करता है, उनके द्वारा संस्थान को समर्थन देने और इसके लिए योगदान करने की संभावना अधिक होती है। ऐसा कहा जाता है, साधारण शिक्षक बताता है। अच्छा शिक्षक समझाता है। श्रेष्ठ शिक्षक प्रदर्शित करता है। महान शिक्षक प्रेरित करता है।

अक्टूबर के मध्य में, उन मंडलों के DGEयों को एक नए DRFCC को चुनने के लिए एक अधिसूचना प्राप्त होगी जिनके मंडलों में DRFC का तीन साल का कार्यकाल जून 2021 में समाप्त हो रहा है। हालांकि अधिसूचना में इसका विवरण दिया जाएगा, फिर भी एक महत्वपूर्ण बात यह है कि DGE को DGN और DGND को शामिल करके यह सुनिश्चित करना होगा कि DRFCC उनके द्वारा संयुक्त रूप से चुना जाए। मैं नवनिर्वाचित मंडल नेतृत्वकर्ताओं से अनुरोध करता हूँ कि वे मंडल की भलाई के लिए DRFCC का चुनाव सावधानीपूर्वक एवं समझदारी के साथ करें।

जैसा कि बिल कॉस्बी ने कहा था, सही काम के लिए सही व्यक्ति का चयन करना ही एक नेतृत्वकर्ता की सबसे बड़ी जिम्मेदारी होती है।

Gulam A. Wadhvani

गुलाम ए वाहनवती
फाउंडेशन ट्रस्टी

यश ने अच्छाई को आकर्षक बना दिया

राजेंद्र साबू



वह दृढ़ता, उद्देश्य एवं सेवा की शुद्धता वाले एक नायक थे। उन्होंने हमारे दिलों में दोस्ती की चिंगारी सुलगाई। PRID यश पाल दास सादगी, मिलनसारिता, उदारता और विनम्रता की मूर्त थे। प्रतिबद्धता उनका धर्म था; उनकी सत्यनिष्ठा जगजाहिर थी; उनकी विश्वसनीयता एक खुली किताब थी; उनकी व्यावसायिकता एक प्रमुख गुणवत्ता थी। शांति, स्थिरता और धीरज उनके आभूषण थे। वह एक अत्यंत सज्जन व्यक्ति थे।

उनके पिता PDG एच के दास की वजह से, मैं उन्हें 1970

की शुरुआत से जानता था। यश रोटरी के प्रति बहुत जल्दी आकर्षित हो गए थे और जल्द ही मुझे उनसे लगाव हो गया था। और फिर भी, मेरे रोई अध्यक्ष रहते हुए जब वह मंडल गवर्नर के पद के लिए खड़े हुए तो उनका चुनाव रोई मंडल द्वारा मंडल के कुछ प्रावधानों का उल्लंघन करने के कारण रद्द कर दिया गया था। लेकिन वह अयोग्य घोषित नहीं हुए थे, और दोबारा चुनाव होने पर वह एकमत से जीते। इस वाक्य के बावजूद, यश और उनकी पत्नी मंजू उषा और मेरे करीबी बन गए।

मजाकिया स्वर में बात करते हुए उन्होंने कहा, रोई निदेशक के

कार्यकाल के दौरान यश ने वजन बढ़ा लिया था, लेकिन बाद में उन्होंने उससे भी ज्यादा वजन कम किया। मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने ऐसा कैसे किया और उनका जवाब था, “मैंने तला हुआ भोजन, शक्कर और मादक पेय का सेवन बंद कर दिया था।” मुझे पता था कि उन्हें ये तीनों पसंद थे, लेकिन जब ऐसा करने की जरूरत हुई, तो उन्होंने वह करके दिखाया।

भीषण बाढ़ के बाद उत्तराखंड की पहाड़ियों में स्कूलों के निर्माण की चुनौती यश के नेतृत्व का प्रतीक है। अंबाला में रोटरी कैसर अस्पताल उनकी प्रतिबद्धता का

एक और उदाहरण है। तपेदिक के खिलाफ लड़ाई उनकी जिम्मेदारी की भावना को दर्शाती है। भारत को पोलियो मुक्त बनाने में उनकी भूमिका उनके जुनून को दर्शाती है।

आज, 23 सितंबर को जब यश का जन्मदिन है, मैं इन भावनाओं को साझा कर रहा हूँ। इस दिन रात-दिन बराबर होते हैं। यह यश के चरित्र को दर्शाता है, पूर्ण संतुलन - अंदर और बाहर दोनों तरफ समान। वह एक सम्पूर्ण इंसान थे जिन्होंने अच्छाई को आकर्षक बनाया।

लेखक पूर्व रोई अध्यक्ष हैं

रोटरी ने एक ईमानदार और प्रतिभाशाली नेता को खो दिया

अशोक महाजन

मेरे मित्र यशपाल दास, जो पूर्व रोई निदेशक और अंबाला शहर के प्रतिभाशाली बेटे हैं, का 22 सितंबर को नई दिल्ली में निधन हो गया। मेरे लिए वह एक दोस्त से बढ़कर थे... मेरे भाई जैसे। इतने सालों तक मैं उनका गुणगान करता रहा और अब उन्होंने मुझे अश्रुपूर्ण नयनों से एक श्रद्धांजलि लिखने को मजबूर कर दिया है।

उन्होंने रोटेरियनों को वो अच्छाई दिखाई जो हम हमारी दुनिया के लिए कर सकते हैं और हम में से प्रत्येक को भरोसा दिलाया कि हम इस दुनिया को रहने लायक एक बेहतर जगह बनाने के लिए चमत्कार कर सकते हैं। उन्होंने हमें दिखाया कि रोटरी के माध्यम से सेवा चुनौतीपूर्ण होने के साथ ही सुखद और मजेदार हो सकती है।

यश एक आशावादी व्यक्ति थे जो अपने जीवन में रोटरी को पहले रखते थे। 1993-1994 के दौरान

मेरे साथी मंडल गवर्नर के रूप में, मैंने उन्हें विशिष्ट रूप से बहुमुखी प्रतिभा का धनी पाया। लेकिन अपने व्यवसाय, जिसमें उन्होंने एक नैतिक व्यवसायी के रूप में इतनी प्रतिष्ठा हासिल की, से परे वह लोगों के लिए जीते हैं।

वह सब कुछ थे, एक उत्कृष्ट रोटेरियन, एक प्रेरक वक्ता, एक दूरदर्शी नेता, लेकिन इन सबसे बढ़कर, वह एक बहुत ही अच्छे इंसान थे। जो लोग उनके साथ थे या जो उनके संपर्क में आए, वह उनके सभ्य शिष्टाचार की प्रशंसा किए बिना और यश की संक्रामक और मादक सकारात्मक ऊर्जा से अछूते नहीं रह सकते थे।

मेरे साथ इंडिया नेशनल पोलियोप्लस कमेटी में एक साथी सदस्य होने के नाते, उन्हें पोलियो उन्मूलन हेतु किए गए अथक परिश्रम के लिए बहुत सम्मान और प्रशंसा प्राप्त हुई। उन्होंने दिखाया कि वह एक

अनंत आशावादी थे और दुनिया से एवं भारत से पोलियो को उन्मूलित करने को लेकर बहुत उत्साहित थे। और गढ़वाल हिमालय, वह क्षेत्र जो बाढ़ से तबाह हो गया था, मैं गुणवत्तापूर्ण 25 स्कूलों का निर्माण करने के उनके उत्कृष्ट कार्य को कौन भूल सकता है। उत्तराखंड के फाटा में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के निर्माण के साथ-साथ उन्होंने व्यक्तिगत रूप से इसकी देखरेख की थी।

उन्होंने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सभाओं और रोटरी सम्मेलनों में भाग लिया और रोटरी नेतृत्वकर्ताओं की एक नई पीढ़ी में जोश भरा जिन्होंने वापस जाकर अपने मंडलों में सेवाएं दीं।

वाई पी, जैसा कि उन्हें प्यार से बुलाया जाता था, भारत में एक अभिनव रोटरी का निर्माण करने में विश्वास करते थे। वह ऊपर से नीचे तक सभी को साथ लेकर चलने में विश्वास करते थे। उन्हें विभिन्न



फरवरी 2020, कोलकाता में शताब्दी शिखर सम्मेलन में PRID यश पाल दास (दाएं), राजश्री बिड़ला, चेरपरर्सन, आदित्य बिड़ला सेंटर फॉर कम्युनिटी इनिशियेटिव्स एंड रूरल डेवलपमेंट, और PRID अशोक महाजन के साथ।

रो ई नेताओं द्वारा उन समितियों में शामिल होने हेतु बुलाया जाता था जो रोटरी मंडलों और क्लबों के प्रशासन से संबंधित विवादास्पद मुद्दों से निपटती थी। रो ई बोर्ड की सबसे शक्तिशाली कार्यकारी समिति के अध्यक्ष के रूप में उनका चयन होना यह बताता है कि सभी बोर्ड सदस्यों को उनकी क्षमता पर विश्वास है कि वह रोटरी के सामने आने वाले किसी भी मुद्दे को संभाल सकते हैं। वह हमेशा ऐसे समाधान लाते थे जो बिगड़ी बात को बनाकर हर चीज़ ठीक कर देते थे। उन्हें रोटरी के सबसे अच्छे विचारों वाले नेताओं में से एक माना जाता था।

जुनून, करुणा और चरित्र की जीती-जागती मिसाल होने के नाते, रोटेरियनों के लिए उनकी सलाह यह थी कि उन्हें ऐसी सकारात्मक सोच की ताकत विकसित करनी चाहिए जो रोटरी को भारत के 1.3 बिलियन लोगों के दिमाग में बैठा दें।

उन्होंने नैतिकता, मूल्यों, परिवार और रिश्तों को बहुत महत्व दिया। दैनिक जीवन के साथ रोटरी के उनके एकीकरण ने सदस्यों के लिए निजी एवं सार्वजनिक अखंडता को विकसित करना आसान बना दिया।

रो ई निदेशक (2011-2013) के रूप में उनका कार्यकाल उल्लेखनीय था क्योंकि उन्होंने रोटरी क्लबों को सशक्त बनाने और क्लब के सदस्यों को रोटरी कोष का उपयोग करते हुए सख्त वित्तीय अनुशासन का पालन करने और बड़े समुदाय के साथ अच्छा व्यवहार करने हेतु प्रेरित किया।

अंबाला में टाटा समूह के मोटर वाहन खुदरा नेटवर्क के एक नेतृत्वकर्ता के रूप में, उन्हें अपनी विशेषज्ञता और नेतृत्व के लिए कई पुरस्कार मिले। मैंने हमेशा उनसे कहा कि उनके क्लब द्वारा अंबाला में की गई रोटरी परियोजनाएं किसी भी क्लब के द्वारा करने के लिए सबसे अच्छी परियोजनाएं हो सकती हैं और उन्होंने शेष भारत की तरह ही अंबाला में भी रोटरी का नाम ऊपर उठाया है।

वह ऐसे वक्ता थे जिन्हें रोटरी एवं अन्य स्थानों पर सभी लोग बहुत पसंद करते थे और अपनी कुशाग्र बुद्धि एवं प्रासंगिक किस्सों के साथ वह रोटरी के माध्यम से अच्छा करने के एक से एक तरीके बताते थे। उनकी पत्नी मंजु ने यश को आजीवन आवश्यक समर्थन प्रदान किया। जब दान करने और समुदाय

मृदु भाषी, सौम्य आचरण, उदार...

शेखर मेहता



यश पाल दास का निधन चौंकाने वाली और अविश्वसनीय घटना है। मैंने उनसे तीन दिन पहले बात की थी जब वह अस्पताल में थे और वह उत्साही और आशावादी ही थे।

क्या आदमी थे वह... मृदुभाषी, सौम्य स्वभाव वाले, विनम्र और हर चीज के बारे में अत्यधिक सकारात्मक।

उनके और मेरे मध्य एक विशेष बंधन था, विशेष रूप से उन दो वर्षों के कारण जो हमने रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के निदेशक मंडल में एक साथ बिताए थे। उन्होंने वहाँ अपनी भूमिका बहुत अच्छी तरह से निभाई। इन बैठकों में वह कम बोलते थे, लेकिन जब वह बोलते थे तो उनकी बात में वजन होता था। अध्यक्ष के रूप में कल्याण बेनर्जी और बोर्ड के सदस्यों के रूप में हम दोनों, हमें अक्सर मज़ाक में भारतीय माफिया कहकर संबोधित किया जाता था।

हर दिन बोर्ड की बैठक के बाद, हम चारों (यश, मंजू, राशी और मैं) रात के खाने के लिए बाहर जाते थे और कुछ बढ़िया वक्त बिताते थे। मैं अपने डाइइट कोक के गिलासों और उनके व्हिस्की के पेगों के बीच तालमेल बैठाने की कोशिश करता था। यह मानना बहुत मुश्किल है कि वह अब हमारे बीच नहीं है। मेरे पास उनकी इतनी प्यारी यादें हैं जो लगातार मेरे दिमाग में चल रही हैं और बहुत पीड़ा पहुँचा रही हैं।

मैंने और राशी दोनों ने एक बहुत ही प्रिय मित्र खो दिया है, जो हमें बहुत याद आएंगे। हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि वो मंजू और उनके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति दें।

ॐ शांति

लेखक रो ई के निर्वाचित अध्यक्ष हैं

की सेवा करने की बात आती थी तो यह दंपति बहुत उदार रहते थे।

जो क्षति हमने महसूस की है उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। एक बेहतर वक्ता, यशपाल दास ने, इस दुनिया के मंच से अपनी अंतिम विदा ली। एक दृढ़ संकल्प वाले इंसान, एक ऐसे व्यक्ति जिन्होंने वही काम किया जो उन्हें करना चाहिए था, आज वो हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन

उनकी यादें अमर रहेंगी। एक ऐसे दिग्गज के निधन पर सम्पूर्ण रोटरी जगत शोक व्यक्त करेगा। रोटेरियन उन्हें एक उदाहरण के तौर पर याद रखेंगे कि एक व्यक्ति को कैसा होना चाहिए, किस चीज के लिए खड़ा होना चाहिए और ईमानदार एवं चरित्रवान होकर कैसे जीना चाहिए।

लेखक पूर्व रो ई निदेशक हैं

म्यूनिसपल स्कूल के छात्रों को रोटरी क्लब बॉम्बे हार्बर से मिले स्मार्टफोन

रशीदा भगत

इस साल का स्वतंत्रता दिवस मुंबई के कोलाबा म्यूनिसपल स्कूल के कक्षा 10 के 51 छात्रों के लिए यादगार था क्योंकि उन सभी को रोटरी क्लब बॉम्बे हार्बर के सदस्यों की तरफ से उपहारस्वरूप चमचमाते हुए नए स्मार्टफोन प्राप्त हुए।

40 सदस्यों वाले इस क्लब ने इस स्कूल के सुविधाओं से वंचित बच्चों द्वारा ऑनलाइन कक्षाओं में हिस्सा लेने के लिए इस भाव प्रदर्शन को करने का निर्णय लिया, क्योंकि यह 2021 में होने वाली बोर्ड परीक्षाओं में उनके प्रदर्शन के लिए महत्वपूर्ण होगा।

क्लब अध्यक्ष जयेश पांड्या कहते हैं कि उन्होंने विशेष रूप से इस स्कूल के वरिष्ठ छात्रों को

मोबाईल फोन देकर उनकी मदद करने का चुनाव इसलिए किया क्योंकि “हमारे क्लब का लगभग 20 वर्षों से इस विशेष स्कूल के साथ कोई ना कोई जुड़ाव रहा है।” पिछले कुछ वर्षों में, सदस्यों ने एक बास्केटबाल कोर्ट का निर्माण किया, विज्ञान प्रदर्शनियाँ आयोजित की, छात्रों के कौशलों को विकसित करने के लिए करिअर मार्गदर्शन दिया एवं स्कूलों की जरूरत अनुसार विशिष्ट खेल उपकरण एवं अन्य सुविधाएं प्रदान की।

जैसे-जैसे कोरोना महामारी ने मुंबई के साथ-साथ पूरे भारत एवं पूरी दुनिया में अपना शिकंजा कसा, तो एक बार फिर से “हम छात्रों की मदद करना चाहते थे और इसलिए हमने इस विषय में

प्राचार्य से चर्चा की।” प्राचार्य ने सुझाव दिया कि कक्षा 10 के 120 छात्रों में से अधिकांश छात्रों के पास स्मार्टफोन नहीं है, जो अब उनके लिए ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने हेतु आवश्यक है। इसलिए प्राचार्य एवं छह शिक्षकों की मदद से, 51 विद्यार्थियों, दिहाड़ी मजदूरों, झुगियों में रहने वालों एवं सुविधाओं से वंचित लोगों के बेटे-बेटियों की पहचान की और क्लब ने उन्हें मोबाईल फोन उपहारस्वरूप देने की जिम्मेदारी अपने हाथों में ली।

पांड्या समझाते हैं कि वे “इन बच्चों को कोई भी एक फोन नहीं देना चाहते थे। हम उन्हें ऐसा उपकरण देना चाहते थे जिसमें पर्याप्त मेमोरी और वे सुविधाएं हो जिससे कि वे उचित रूप से उनकी



बाएं से : क्लब सदस्य शतिन पांड्या, दिलीप जॉनी, निलेश रूपारेल, शरद दावे, अध्यक्ष जयेश पांड्या, कालाश गुप्ता, मसूद सैफुद्दीन म्यूनिसपल स्कूल कोलाबा में छात्रों के साथ।

उनके फरिश्ते

कोलाबा म्यूनिसिपल स्कूल के कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों, मुस्कान शेख और ए आशीष के लिए, रोटरी क्लब बॉम्बे हार्बर के रोटेरियन किसी फरिश्ते से कम नहीं है। 'मेम, जयेश पंड्या सर और क्लब के अन्य सदस्य हमारे स्कूल की 20 वर्षों से मदद कर रहे हैं। उन्होंने हमें किताबें दी हैं, कक्षाओं के बाद हमारी काउंसलिंग की है, हमारे लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की हैं और हमें पुरस्कार दिए हैं और अब उन्होंने हमें सबसे बड़ा और सबसे रोमांचक उपहार, एक स्मार्टफोन, दिया है,' 15 साल की मुस्कान प्रशंसा करते हुए कहती है।

दिहाड़ी मजदूर महबूब शेख की बेटी मुस्कान, उसके माता-पिता और दो अन्य भाई-बहनों के साथ अंबेडकरनगर की झुग्गियों में रहती है। 'मेरा परिवार एक मोबाईल फोन नहीं खरीद सकता और मैं इस बात को लेकर बहुत चिंतित थी कि

कैसे मैं ऑनलाइन कक्षाओं में शामिल हो पाऊँगी और कार्यपत्रों एवं गृहकार्यों को कैसे पूरा कर पाऊँगी। लेकिन अब रोटरी क्लब द्वारा दिए गए इस स्मार्ट फोन की मदद से, मैं अपने कार्यपत्रों को पूरा करने एवं उन्हें समय से जमा कर सकती हूँ,' *रोटरी न्यूज* के साथ हुई बातचीत में उस जिंदादिल लड़की ने कहा। अंग्रेजी में बात करने पर जोर देते हुए, जो वह बड़े आत्मविश्वास के साथ करती है, वह आगे कहती है, 'और ऐसा करना बहुत बड़ी राहत है! मेरी सभी चिंताएँ अब दूर हो गई हैं।'

मुस्कान पहली घंटी बजते ही फोन उठा लेती है, जिससे यह साबित होता है कि यह उपकरण उसके लिए कितना बेशकीमती है। उसकी प्रतिदिन दो घंटी की तीन कक्षाएँ होती हैं, और उसके तीनों भाई-बहन भी स्कूल में पढ़ते हैं। वह वादा करती है कि वह कड़ी मेहनत करके एक डिग्री कोर्स करने के बाद एक



अपनी माँ के साथ मुस्कान शेख।



ए आशीष (बीच में)

मनोचिकित्सक बनेगी। इस पेशे को चुनने का कारण पूछे जाने पर, वह कहती है, 'क्योंकि मैं दिमाग के सभी रहस्यों को जानना चाहती हूँ।'

ए आशीष एक ड्राइवर का बेटा है, और अपने दो अन्य भाइयों के साथ मराठी माध्यम में पढ़ता है, 'मेरी छोटी बहन, 8, अंग्रेजी माध्यम में पढ़ती है, वह गर्व से कहता है। ऐसा क्यों पूछे जाने पर, वह सरलतापूर्वक कहता है, 'क्योंकि वह हम सभी में सबसे होशियार है और वह बहुत छोटी उम्र से ही अंग्रेजी बोल सकती थी।'

उसे स्मार्टफोन चलाना सीखने में ज्यादा दिक्कत नहीं आई क्योंकि उसके पिता, राजपाल नाथुवाल्मीकि, के पास पहले से ही एक स्मार्टफोन है 'और मैं उसे कभी-कभी चलाता था। लेकिन अब मेरा स्वयं को फोन होने से बहुत राहत है

और जब मेरी कक्षाएँ नहीं होती, तो मैं उसे अपने भाई-बहन को उनकी कक्षाओं हेतु इस्तेमाल करने के लिए दे देता हूँ।' 16 वर्षीय छात्र के मन में रोटेरियनों के प्रति आदर और आभार है क्योंकि

'उनका क्लब अतीत से ही हमारे स्कूल की मदद करता आ रहा है।'

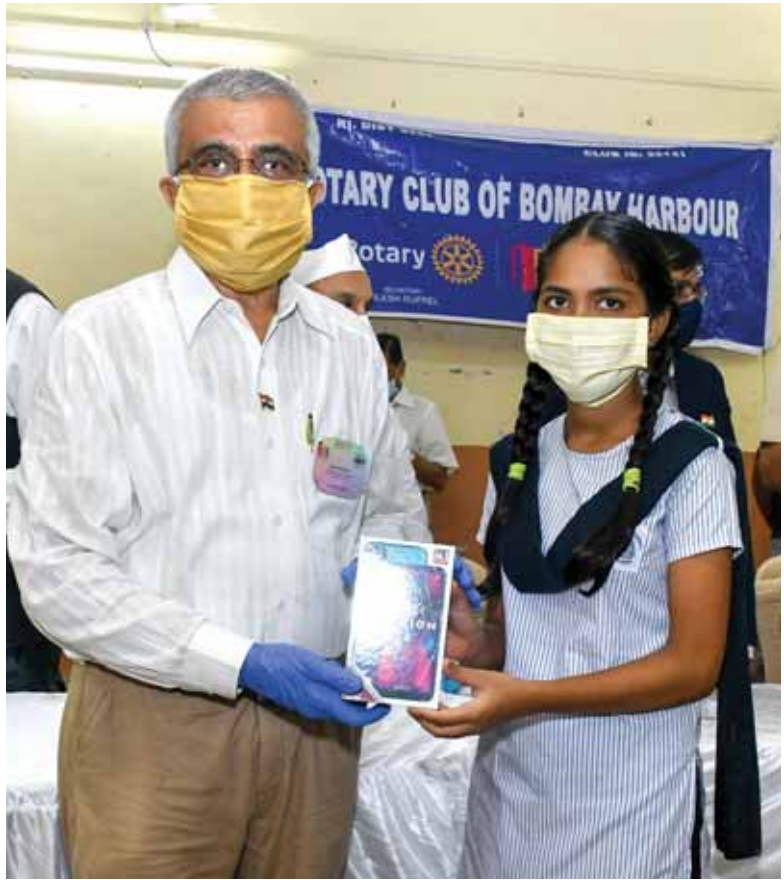
उसका सपना एक पुलिस ऑफिसर बनने का है और इस लक्ष्य के लिए, वह कड़ी मेहनत करने, विज्ञान में डिग्री हासिल करने और फिर पुलिस सेवा में शामिल होने का वादा करता है।

मैं उनसे पाँच मिनट के भीतर उनकी अच्छी गुणवत्ता वाली तस्वीरों को मेरे व्हाट्सएप पर भेजने का अनुरोध करती हूँ। *रोटरी न्यूज* की जयश्री उत्साहपूर्वक टिप्पणी करती है: यदि रोटेरियन इतनी तेजी से ऐसा कर सके तो...

ऑनलाइन कक्षाओं में भाग ले सकें और अध्ययन सामग्री स्टोर कर सकें।”

क्लब सदस्यों के साथ-साथ गैर-रोटेरियन मित्रों एवं रिश्तेदारों की मदद से 51 उपकरण खरीदने हेतु आवश्यक ₹3.5 लाख इकट्ठा किए गए। एक बार फिर से, एक मोबाइल फोन डीलर को जानने वाले एक रोटेरियन ने उनसे बात करके एक बढ़िया छूट के साथ ही ऑनलाइन कक्षाओं के लिए “उपयुक्त सही प्रकार का मॉडल चुनने में मदद की। हम उन्हें फोन का सही मॉडल देने के बारे में बहुत सतर्क थे क्योंकि पिछले साल इस स्कूल की बोर्ड परीक्षाओं में सफलता दर 94 प्रतिशत से अधिक थी, और हम चाहते हैं कि यह स्कूल अपना अच्छा रिकॉर्ड बनाए रखे,” उन्होंने आगे कहा।

छोटी सभाओं और सामाजिक दूरी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, 51 छात्रों को दो बैचों में बुलाया गया और रोटेरियनों एवं मधुकर पालकर, शिक्षा अधिकारी, BMC (बॉम्बे म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन), सहायक पुलिस आयुक्त दलवी एवं अन्य गणमान्य लोगों के हाथों से उन्हें मोबाइल वितरित किए गए। सिम कार्ड को सक्रिय करने के लिए चार जिओ प्रतिनिधि भी



क्लब सदस्य दिलीप जानी एक छात्र को मोबाइल फोन देते हुए।



क्लब अध्यक्ष जयेश पांड्या एक छात्र को मोबाइल फोन देते हुए।

मौजूद थे - रोटेरियनों ने सेवा प्रदाता के पास पहले ही आधार कार्ड एवं अन्य आवश्यक दस्तावेज जमा कर दिए थे और साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों को पहले चार महीनों के लिए निःशुल्क कनेक्टिविटी भी प्रदान की। भविष्य के नवीकरण छात्रों को ही करने होंगे, लेकिन अगर उनमें से किसी को कोई समस्या आती है, तो क्लब के सदस्यों ने उनकी मदद करने का वादा किया है।

पांड्या कहते हैं कि परियोजना निदेशक देवांग वोरा के नेतृत्व एवं रोटेरियन निलेश रूपरेल एवं दिलीप जानी द्वारा समर्थित इस परियोजना के लिए 15 रोटेरियनों ने अपना योगदान दिया है।

इस परियोजना के अलावा, रोटरी क्लब बॉम्बे हार्बर के सदस्यों ने अन्य कोविड-राहत कार्य किए जैसे जुलाई के महीने में 4,000 मुफ्त भोजन वितरण करना एवं अस्पतालों को महत्वपूर्ण चिकित्सीय उपकरण देने में अन्य क्लबों का सहयोग करना। ■

रोटरी ने हैदराबाद में खोला प्लाज़्मा बैंक

किरण ज़ेहरा



प्लाज़्मा बैंक के उद्घाटन पर रोटरी क्लब हैदराबाद डेक्कन के अध्यक्ष VVSN राजू, केंद्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी को सम्मानित करते हुए। चित्र में DG एन वी हनमंत रेड्डी (दाएं) और पूर्व अध्यक्ष शरथ चौधरी (बाएं) भी शामिल हैं।

रोटरी क्लब हैदराबाद डेक्कन, रो ई मंडल 3150, ने शहर के रोटरी चल्ला ब्लड बैंक में प्लाज़्मा बैंक की शुरुआत की। नई सुविधा का उद्घाटन केंद्रीय गृह राज्य मंत्री जी किशन रेड्डी द्वारा किया गया, जो गंभीर मामलों के इलाज हेतु डॉक्टरों द्वारा निर्धारित किए जा रहे कोविड आघ प्लाज़्मा की बढ़ती मांग को पूरा करेगा।

TRF और रोटरी क्लब नेपियेरविल, शिकागो, रो ई मंडल 6450 की साझेदारी में 2018 में वैश्विक अनुदान के माध्यम से खरीदे गए रक्तदान वैन को सेवा में लगाया जाएगा। क्लब के पीआर निदेशक आनंद कांकरिया ने कहा, “यह संग्रह के उपकरण, डोनर बेड और अल्पकालिक भंडारण समाधान जैसे रक्त दान प्रक्रियाओं में आवश्यक सभी चीजों से सुसज्जित है। हाल ही में इसे कीटाणुनाशक जेटींग मशीनों से

सुसज्जित किया गया है, जिसका इस्तेमाल हर बार ब्लड संग्रह के बाद वैन को साफ करने के लिए किया जाता है था।” यह विशेष वैन कोविड से ठीक हुए मरीजों को अपनी सुविधा के अनुसार समय तथा स्थान और सुविधा के साथ प्लाज़्मा दान करने में सक्षम बनाएगी।

दाताओं की उनके घरों तक जाकर एंटीबॉडी और अन्य रक्त मापदंडों की पूर्व-जांच की जाएगी। कंकरिया का कहना है कि प्लाज़्मा डोनर या तो ब्लड बैंक में आकर या घर पर रहते हुए ही ब्लड डोनेट कर सकते हैं। “इसका उद्देश्य स्वैच्छिक रक्तदान को प्रोत्साहित करना तथा सरकारी अस्पतालों के गरीब और जरूरतमंद मरीजों को मुफ्त में रक्त प्रदान करना है।” क्लब के सदस्यों की पत्नियाँ, मरीजों को सही डोनर ढूँढने में मदद कर रहे हैं। वे आगे कहते हैं, “हम न केवल सही मैच ढूँढते हैं, बल्कि संभावित

दाताओं को भी बुलाते हैं और उन्हें कोविड रोगियों के जीवन को बचाने हेतु प्रेरित करते हैं।” उन्होंने आगे कहा कि, लेकिन प्लाज़्मा बैंक की वास्तविक सफलता तब होगी, “जब दाता खुद आगे आएंगे। हमने कोविड से ठीक हुए और अपना प्लाज़्मा दान करने के इच्छुक मरीजों को परेशानी मुक्त और सुरक्षित दान अनुभव और सुविधा प्रदान की है, ताकि वे केवल सर्वाइवर की जगह कोविड सेव्यर बन सकें।” मरीज और दाता www.plasmaforyou.org पर पंजीकरण कर सकते हैं।

क्लब ने 74वें स्वतंत्रता दिवस को चिह्नित करने हेतु एक वृक्षारोपण अभियान भी चलाया। क्लब के सदस्य देवेंद्र सुराणा ने अपने कारखाने में 10,000 पेड़ लगाए, जबकि अन्य सदस्यों ने अपने निवास तथा कार्यालय परिसर में पौधे लगाए हैं। ■

शिलांग के एक रोटेरियन भूखों को खाना खिलाते हैं

जयश्री

शिलांग की आहार रसोई दैनिक रूप से कम से कम 300 लोगों को निःशुल्क भोजन प्रदान करती है। 2018 में अर्धेदु चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा इसकी शुरुआत की गई थी, जिसमें पीडीजी मानस चौधरी, रोई मंडल 3240, प्रबंधक न्यासी है। इस न्यास का गठन उनके भाई अर्धेदु की याद में किया गया था जिनकी हेलीकॉप्टर दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। “वह एक बड़े दिलवाले विधायक थे, जो मेघालय के लोगों के बीच काफी लोकप्रिय थे। उनकी पुण्यतिथि (22 सितंबर) पर भूखों को खाना खिलाने के लिए एक कार्यक्रम की

शुरुआत करना एकदम उचित था,” चौधरी कहते हैं, आगे कहते हुए कि उनके न्यास का आदर्श वाक्य *स्वयं से ऊपर सेवा* है जो रोटरी के आदर्श वाक्य के समान ही है। *शिलॉन्ग टाइम्स* के पूर्व संपादक रहते हुए, उन्हें पत्रकारिता के क्षेत्र में सेवा देने के लिए तत्कालीन राष्ट्रपति अब्दुल कलाम द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने एक मंत्री के रूप में भी राज्य मंत्रिमंडल में सेवा दी।

न्यास की इस रसोई में शुद्ध शाकाहारी भोजन एक टीम द्वारा तैयार किया जाता है जिसमें एक

रसोइया और तीन सहायक शामिल हैं और भोजन को एक वैन से दोपहर 12 बजे झालुपारा नामक एक स्थान पर ले जाया जाता है, जहाँ लोग फुटपाथ पर एक कतार में धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं। मेज़ आवश्यक प्रोटोकॉल के साथ सेट की गई है - कूड़ादान, हाथों की धुलाई का एक स्टेशन और साबुन। “हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारे झमेहमानफ खाना खाने से पहले अपने हाथ धो लें क्योंकि उनमें से कई इतने ज्यादा भूखे होते हैं कि भोजन को देखते ही सीधे बिना हाथ धोएं उसकी ओर बढ़ जाते हैं,” वह मुस्कुराते हैं। खाना स्टेनलेस स्टील की प्लेटों में परोसा जाता है और “दूसरी या तीसरी बार भोजन की मांग को कभी इनकार नहीं किया जाता। उनमें से कई लोग डिब्बा लेकर आते हैं और अपना रात का खाना भी पैक कर लेते हैं।” वह कहते हैं कि एक 80 वर्षीय महिला जो बहुत कम खाती है, हर दिन अपने शारीरिक रूप से विकलांग पड़ोसी के लिए थोड़ा भोजन ले जाती है।

स्वयंसेवकों का एक दल करीब एक घंटे तक चलने वाली इस पूरी प्रक्रिया में मदद करता

है। शुरुआत में भोजन के लिए ₹5 की एक टोकन राशि ली जाती थी।

“इसके पीछे विचार यह था कि उन्हें निःशुल्क भोजन करने में संकोच महसूस न हो। इसके अलावा, हर निवाले की कीमत समझी जानी चाहिए।” लेकिन इस महामारी के चलते गरीबों पर बहुत मार पड़ी है, इसलिए अप्रैल से भोजन मुफ्त में वितरित किया जा रहा है।





मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि
मैं करियर से एक राजनैतिक नहीं हूँ,
मैं एक रोटैरियन हूँ।

PDG मानस चौधरी
संस्थापक अर्धेदु चेरिटेबल ट्रस्ट

लॉकडाउन के दौरान, आहार पहल का महत्व बढ़ गया क्योंकि सड़क किनारे के भोजनालय और रेस्तरां बंद हो गए थे। यहाँ तक कि समर्थ व्यक्ति भी दोपहर के इस भोजन के लिए आते थे। हालांकि, जब कोविड का संकट अपने चरम पर था तो कुछ दिनों के लिए इस कार्यक्रम को रोकना पड़ा। “जब हमने काम फिर से शुरू किया तो मैं एक बूढ़े आदमी से मिला, जो नियमित रूप से हमारे स्टाल पर

आते थे। उन्होंने अपने थैले में से ब्रेड का एक पैकेट निकाला और कहा, ‘इसमें पाँच दिनों से केवल इसे ही खाकर जीवित रहा। जब भी मुझे भूख लगती मैं इसमें से एक टुकड़ा खाकर इसे वापस थैले में रख लेता और थोड़ा पानी पी लेता था। कई लोग अपने दैनिक भरण-पोषण के लिए आहार पर निर्भर हो गए हैं और जब लॉकडाउन की घोषणा की गई, तो यह उनके लिए दोहरी मार थी,’ चौधरी कहते हैं।



स्थानीय पुलिस के अनुरोध पर इस दल ने पल्टन बाज़ार के एक और स्थान पर भोजन वितरित करना शुरू किया। स्वयंसेवक कोविड संरक्षण प्रोटोकॉल का पालन करते हैं, जिसमें मास्क, सैनिटाइज़र और शारीरिक दूरी बनाए रखना शामिल है। खाना परोसने से पहले, पूरे क्षेत्र और टेबल को ब्लीचिंग पाउडर और कीटाणुनाशक से सैनिटाइज़ किया जाता है।

मेनू में आमतौर पर चावल, दाल, रोटी, चटनी, सब्जी और बहुत सारी हरी मिर्च और नमक शामिल होता है, एक ऐसा सम्मिश्रण जो हमेशा सबका पसंदीदा होता है, चौधरी कहते हैं, आगे कहते हुए कि इतना भोजन किसी भी रेस्तरां में आराम से ₹100 का मिलता है। कई स्थानीय नागरिक दिन के भोजन को प्रायोजित करते हैं, मिठाई, पेस्ट्री,

फल आदि की पेशकश करते हैं, या तो किसी खुशी का अवसर मनाने के लिए या अपने प्रियजनों को याद करने के लिए, या केवल बंचितों को भोजन प्रदान करने की खुशी महसूस करने के लिए। “चाहे वजह कोई भी हो, पर यह वास्तव में सबकी चिंताओं को दूर करता है।” हाल ही में, IPDG डॉ. देवाशीष दास ने मंडल गवर्नर के रूप में सफलतापूर्वक कार्यकाल पूर्ण करने की अपनी संतुष्टि को साझा करने के लिए एक दिन का भोजन प्रायोजित किया।

चौधरी कहते हैं कि वे गरीबों और समर्थ लोगों के बीच भेदभाव नहीं करते। भोजन इतना स्वादिष्ट और स्वास्थ्यकर होता है कि यहाँ के समर्थ नागरिक भी यहाँ खाते हैं। वह एक ऐसे मौके को याद करते हैं जब लखनऊ से पर्यटकों से भरी एक

बस के यात्री वहाँ पर उतरे। वे निराश्रित नहीं दिख रहे थे। “मुझे लगा कि वे देखना चाहते हैं कि वहाँ पर क्या चल रहा है लेकिन उन्होंने कहा कि वे खाना चाहते हैं। हम यह जानने के लिए उत्सुक थे कि वे इस भोजन को क्यों खाना चाहते हैं जो गरीबों के लिए है। उन्होंने कहा, ‘हमने ड्राइवर से कहा कि हम शुद्ध शाकाहारी भोजन खाना चाहते हैं, और वह हमें यहाँ ले आया।’ उन्होंने खाना खाया, हमें शुभकामनाएं दी और चले गए।”

एक दिन के लिए भोजन तैयार करने की लागत ₹15,000 तक आती है। अन्य न्यासों और परोपकारी लोग इस न्यास को बड़े पैमाने पर योगदान देते हैं। इसके साथ ही, मेघालय सरकार अपनी सार्वजनिक वितरण प्रणाली से हर महीने 10 क्विंटल चावल आवंटित कर रही है, और किराने का सामान थोक दरों पर खरीदा जाता है। चौधरी के गृह क्लब, रोटरी क्लब शिलॉन्ग, ने भी अपना योगदान देकर सहायता की। हाल ही में, इस न्यास के साथ इस क्लब ने जनता को साबुन, सैनिटाइजर और मास्क वितरित किए, और सर्दियों के दौरान उन्हें कंबल और ऊनी कपड़े प्रदान किए।



वेन्यू में PDG डॉ देवाशीष दास।

अन्य सेवाएं

2005 में गठित यह न्यास पानी की बारहमासी कमी को दूर करने के लिए शहर के घरों में कम दरों पर पानी की आपूर्ति करता है। 2007 से, स्कूली बच्चों को रियायती दरों पर एक बस सेवा प्रदान की जा रही है। यह उन माता-पिता के लिए एक बड़ा वरदान है, जो विभिन्न कारणों से अपने बच्चों को स्कूल लाने ले जाने में असमर्थ हैं, चौधरी कहते हैं। यह न्यास वंचितों को वित्तीय और भौतिक सहायता एवं योग्य विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति भी प्रदान करता है।

अपने भाई की मृत्यु के दो महीने बाद, चौधरी ने विभिन्न कॉर्ट्स के अनुरोध पर अपने बड़े भाई की जगह एक विधायक के रूप में दो कार्यकाल तक सेवा दी, और विधायक निधि से लिए गए हर पैसे का लेखा-जोखा तुरंत करने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से एक प्रशंसा पत्र प्राप्त किया। “मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि मैं करियर से एक राजनैतिक नहीं हूँ, मैं एक रोटेरियन हूँ,” वह मुस्कराते हुए कहते हैं।

वह 1980 में रोटरी से जुड़े और पिछले साल मंडल प्रशिक्षक थे। उन्हें अगले वर्ष के लिए विधान परिषद का मंडल प्रतिनिधि चुना गया है। ■

RI मंडल 3232 ने रोटरी पत्रकारों के एक समूह का गठन किया

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 3232 ने विभिन्न क्लबों के उत्साही रोटेरियनों एवं एनेट्स से भरे रोटरी पत्रकारों के एक दल का गठन किया है ताकि मंडल द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी को एक बड़े समुदाय तक प्रसारित किया जा सके। हाल ही में एक आभासी मंच के माध्यम से उनके लिए एक 'रोटरी राइटर्स काँग्रेस' का आयोजन किया गया था।

इन शौकीन पत्रकारों की भूमिका गवर्नर के मासिक पत्र 'Power play', रोटरी के वेबपेज, फ़ेसबुक, ट्विटर और यूट्यूब के माध्यम से एक ब्रांड के रूप में रोटरी में मूल्यों को संग्रहीत करने, मिलाने एवं जोड़ने की है। अंतिम उद्देश्य रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि करने का है।

मंडल 3232 के सार्वजनिक छवि के अध्यक्ष नचिअप्पन ने कहा कि यह

विचार डीजी एस मुत्तुपलनियप्पन ने दिया था, और "इस कार्यक्रम का उद्देश्य रोटेरियनों, एन्स और एनेट्स को लेखन की कला सीखने के लिए प्रोत्साहित करना, उन्हें GML में योगदान करने का अवसर प्रदान करना, और उन्हें प्रशिक्षित करना है।



रंगराज पांडे, चाणक्य यूट्यूब चैनल के संस्थापक और मुख्य कार्यकारी।



DG मुत्तुपलनियप्पन और उनकी पत्नी कमला।

उनके लिए ऐसी अन्य कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी।"

कार्यशाला को संबोधित करते हुए, लोकप्रिय यूट्यूब चैनल चाणक्य के संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी रंगराज पांडे, जिनके बड़ी संख्या में प्रशंसक मौजूद हैं, ने कहा कि पत्रकारों को सही जानकारी पेश करना चाहिए और निष्पक्ष होना चाहिए, और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की दिशा में काम करना चाहिए। उन्होंने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देने वाले कुछ वास्तविक-जीवन के उदाहरणों को प्रस्तुत किया, यह कहते हुए कि मीडिया के एक वर्ग द्वारा फैलाए जाने वाले द्वेषपूर्ण एवं झूठे प्रचार को समुदाय का एक बड़ा हिस्सा बहिष्कार एवं अस्वीकार करता है। पत्रकारों को ईमानदार होना चाहिए और प्रभावी रूप से सच कहना चाहिए

और इस तरह से कहना चाहिए जो आम आदमी को भी समझ में आए।

रोटरी न्यूज़ की संपादक रशीदा भगत ने लाभार्थियों को कवर करके और उनके जीवन में लाए जा रहे परिवर्तन को प्रदर्शित करके इन रोटरी पत्रकारों को मंडल में रोटरी क्लबों द्वारा कार्यान्वित की जा रही परियोजनाओं के बारे में बात करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

डीजी मुत्तुपलनियप्पन ने कहा कि उन्हें यह विचार इसलिए आया क्योंकि उनका यह मानना है कि "रोटेरियन जो काम करते हैं, उसे उस कार्यक्षेत्र में जाने वाले रोटरी पत्रकारों द्वारा जमीनी स्तर से कवर किया जाना चाहिए।"

ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम हर माह आयोजित किए जाएंगे, Powerplay की संपादक सुकन्या श्रीराम ने कहा। ■

कभी शरणार्थी रहे, इस रोटेरियन ने हजारों की हृदय शल्य चिकित्सा निःशुल्क कराई है

रशीदा भगत



इंडोनेशिया से एक बाल लाभार्थी।

वो सिर्फ 9 साल का बच्चा था, जब उसकी गर्भवती माँ और दो वर्षीय भाई के साथ उसे लाहौर में पुलिस उन्हें रेलवे स्टेशन ले गई थी। “वो 13 अगस्त, 1947 की रात थी, हमारी कॉलोनी धू धू करके जल रही थी और हर जगह शोर, धुआँ और चीख-पुकार मची हुई थी। जान बचाने के लिए हमें भागना पड़ा था और पुलिस ने कहा कि हम आपको केवल एक ही स्थान पर छोड़ सकते हैं, वो है रेलवे स्टेशन,” ओ पी खन्ना याद करते हैं, जो 1972 से रोटरी क्लब बेंगलोर इंदिरानगर के सदस्य हैं। “ट्रेन खचाखच भरी हुई थी और लोग छत पर लटक रहे थे। क्योंकि मेरी माँ गर्भवती नज़र आ रही थी और हम बच्चे थे, हमें अंदर जगह दे दी गई।” वे सुरक्षित जालंधर पहुंच गए, लेकिन उनके पिता जो उस दिन लाहौर में थे और नहीं जानते थे कि वे भारत के लिए रवाना हो गए थे, उन्हें पता चलने में लगभग तीन सप्ताह लग गए थे कि उनका परिवार सुरक्षित भारत पहुंच गया था। हाँ, बाद में वह ज़रूर वे उनको मिल गए थे।

“वो पहला वाकया था जब ईश्वर मुझ पर मेहरबान हुआ था,” भारतीय उपमहाद्वीप के बंटवारे के उन भयावह क्षणों को याद करते हुए कृतज्ञ रोटेरियन कहते हैं।

दूसरा वाकया 1998 में, जब संयुक्त राष्ट्र के कार्य से विदेश जाते हुए उन्हें दिल का दौरा पड़ा, लेकिन सौभाग्य से समय पर सही इलाज हो गया। तो वह व्यक्ति, और उसके भीतर रहने वाला 9 वर्ष का बच्चा जो “सिर्फ तीन जोड़ी कपड़े लेकर भारत आया था, एक चैरिटी की स्थापना करना चाहता थे,” उस पर समाज का जो ऋण है उससे उद्धार होने के लिए। “मेरी पत्नी और बच्चों ने पूरा सहयोग दिया और 2001 में मैंने बेंगलुरु के मणिपाल अस्पताल के साथ मिलकर नीडी हार्ट्स फाउंडेशन (NHF) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य



ओ पी खन्ना (बाएं) अध्यक्ष नीडी हार्ट फाउंडेशन (NHF) एक गणमान्य अतिथि के साथ NHF का दौरा करते हुए।

उन जरूरतमंद मरीजों की जान बचाने में सहायता करना था जिन्हें दिल के ऑपरेशन की ज़रूरत थी,” वे कहते हैं।

स्थापना के बीस साल बाद, इस अगस्त तक, NHF ने ऐसे 10,000 लोगों की जान बचाई है जिन्हें हृदय शल्य चिकित्सा की आवश्यकता थी लेकिन यदि ये फाउंडेशन नहीं होता तो वे इसका खर्च नहीं उठा सकते थे। “पर समाज की इस सेवा के लिए, भारतीय रोटेरियनों के

साथ-साथ मैं रोटरी फाउंडेशन को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने मेरे मिशन में मेरी सहायता की है। भारतीय रोगियों के अलावा, NHF ने बांग्लादेश, पाकिस्तान, नेपाल और इंडोनेशिया सहित 12 देश के रोगियों की हृदय शल्य चिकित्सा करवाई है।

जरूरतमंद हृदय रोगियों की मदद करने के लिए फाउंडेशन लगभग ₹25 से ₹30 लाख सालाना खर्च करता है, इस के लिए धन

की व्यवस्था, अपनी स्वयं की आय से, अपने परिवार के सदस्यों और विदेश में रहने वाले रिश्तेदारों द्वारा किये गए दान से, कुछ योगदान टीआरएफ अनुदान से और अपने स्वयं के रोटरी क्लब की मदद से होती है।

आईआईटी खड़गपुर से स्नातक खन्ना स्वयं एक टेक्नोक्रेट हैं और मशीन टूल्स और वेल्डिंग तकनीक के विशेषज्ञ हैं, जिन्होंने अपना खुद का व्यवसाय स्थापित किया है। “मैं 14 कंपनियों के बोर्ड पर था लेकिन दिल का दौरा पड़ने के बाद, मैंने यह संकल्प लिया था कि इन कॉर्पोरेट्स से मिलने वाली फीस की सम्पूर्ण राशि NHF में जाएगी। यह मेरे और कंपनियों दोनों के लिए फायदे का सौदा था; कंपनियां सीधे NHF को निदेशक के शुल्क का भुगतान करती हैं और उन्हें कर में छूट मिलती है और जबकि खन्ना को इन कंपनियों

से हुई कमाई पर आयकर का भुगतान नहीं करना पड़ता है, क्योंकि यह पैसा सीधे दान में जाता है,” उन्होंने स्पष्ट किया।

इसलिए अपनी आमदनी देने और अपने परिवार के सदस्यों के योगदान के बाद, उन्होंने अन्य NGOs (गैर-सरकारी संगठनों) और अस्पतालों के साथ चेणी (समझौता ज्ञापनों) पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत, गरीब रोगियों के लिए कम लागत पर, गुणवत्ता से समझौता किए बिना, सर्जरी करवाई, जिसके लिए फंड्स NHF ने उपलब्ध करवाए थे।

इन वर्षों में, यहां तक कि PRIP राजेंद्र साबू, RIPE शेखर मेहता और PRID सुशील गुप्ता, दिल की जटिल सर्जरी के लिए NHF में मरीजों को भेजते हैं, जो किसी कारणवश से उन स्थानों पर नहीं हो सकती थीं और हमारे यहां ये ऑपरेशन सफलतापूर्वक संपन्न हुए।

PRIP राजेंद्र साबू, RIPE शेखर मेहता और PRID सुशील गुप्ता, दिल की जटिल सर्जरी के लिए NHF में मरीजों को भेजते हैं, जो किसी कारणवश से उन स्थानों पर नहीं हो सकती थीं और हमारे यहां ये ऑपरेशन सफलतापूर्वक संपन्न हुए।

अगर हम बच्चे में समरूप हृदय वाल्व की अपेक्षा कृत्रिम या प्लास्टिक वाल्व डालते हैं तो बच्चे की बढ़ती उम्र के साथ इसका आकार नहीं बढ़ेगा और ये 4-5 साल बाद बेकार हो जाएगा।



एक होमोग्राफ्ट की कटाई।

स्थानों पर नहीं हो सकती थीं और हमारे यहां ये ऑपरेशन सफलतापूर्वक संपन्न हुए,” खन्ना ने कहा। चार अन्य NGO के साथ-साथ मणिपाल अस्पताल भी NHF के साझेदार है और 2001 से पहले “जब हम NHF की स्थापना के बारे में चर्चा कर रहे थे, प्रसिद्ध हृदय सर्जन डॉ देवी शेट्टी (जो अब बेंगलुरु में नारायण हृदयालय के प्रमुख हैं) उस समय मणिपाल अस्पताल में थे। हालांकि उन्होंने मणिपाल छोड़ दिया है, पर वो आज भी हमारे साथ सलाहकार के रूप में जुड़े हुए हैं।”

वर्ष 2006 में NHF ने एक और महत्वाकांक्षी परियोजना प्रारम्भ की थी - एक सजातीय वाल्व हृदय वाल्व बैंक की स्थापना। रोटरी क्लब बेंगलोर इंदिरानगर, NHF और मणिपाल अस्पताल की संयुक्त पहल वाला यह बैंक मणिपाल अस्पताल में स्थापित किया गया था और इसमें लगभग ₹1 करोड़ निवेश किये गए। परियोजना के एक भाग के लिए 43,112 डॉलर का एक टीआरएफ से वैश्विक अनुदान लिया गया था, जिसमें बेंगलोर क्लब के अंतर्राष्ट्रीय भागीदार थे रोटरी क्लब एलखोर्न, विस्कॉन्सिन, अमेरिका।

अभी तक 200 से अधिक जरूरतमंद बच्चे कार्डियक सर्जरी द्वारा मानव हृदय वाल्व का उपयोग कर एनएचएफ बैंक के माध्यम से लाभान्वित हुए हैं। खन्ना बताते हैं कि यह हृदय वाल्व बैंक विशेष रूप से बच्चों के लिए बनाया गया है क्योंकि “अगर हम बच्चे में समरूप हृदय वाल्व की अपेक्षा कृत्रिम या प्लास्टिक वाल्व डालते हैं तो बच्चे की बढ़ती उम्र के साथ इसका आकार नहीं बढ़ेगा और ये 4-5 साल

बाद बेकार हो जाएगा।” होमोग्राफ्ट्स वो वाल्व टिशू होते हैं जिन को या तो मृत्यु के 24 घंटों के भीतर केडेवर्स से निकाला जाता है या फिर ब्रेन-डेड डोनर्स से निकाल कर प्रत्यारोपित किया जाता है लेकिन केवल उसी अवस्था में जबकि डोनर संक्रमण, अस्वस्थता और संरचनात्मक हृदय रोगों से मुक्त हों। आम तौर पर आयोरटिक, पल्मोनरी और माइट्रल वाल्वों को लगाया जा सकता है, लेकिन इन वाल्वों को संसाधित करना पड़ता है और लगभग माइनस -180 डिग्री सेंटीग्रेड पर संग्रहीत किया जाता है। क्योंकि इस तरह के मानव हृदय वाल्वों को संग्रहीत करने के लिए अत्यंत कम तापमान की आवश्यकता होती है, इसलिए हर वाल्व के भंडारण की लागत ही ₹10,000-₹15,000 के बीच पड़ती है।

खन्ना का कहना है कि बच्चों और वयस्कों दोनों में जटिल हृदय रोगों के इलाज में ये प्रत्यारोपित वाल्व महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। “वास्तव में, यदि ऐसे होमोग्राफ्ट उपलब्ध नहीं हों तो बच्चों में हृदय की कुछ समस्याओं का तो इलाज किया ही नहीं जा सकता। और अगर बाजार में कुछ वैकल्पिक वाल्व और कंड्यूट उपलब्ध हैं तो भी वे बहुत महंगे हैं और आम आदमी की पहुंच से बहुत दूर हैं।”

जरूरत

एक आकलन के अनुसार हर साल भारत में पैदा होने वाले बच्चों में लगभग 1,50,000-2,00,000 हृदय की समस्याओं के साथ पैदा होते हैं, लेकिन “इनमें से केवल लगभग 15,000-20,000 बच्चों को ही किसी तरह का सर्जिकल उपचार मिल पाता है। बाकी पर्याप्त धन या जागरूकता के अभाव में धीरे-धीरे मर जाते हैं। इसलिए हम हमारे गैर-लाभकारी होमोग्राफ्ट हार्ट वाल्व बैंक के माध्यम से अल्पविकसित हृदय रोगियों, विशेष रूप से बच्चों और महिलाओं के उपचार के लिए इन वाल्वों की आपूर्ति करते हैं। इतना सब रो क्लब बेंगलोर इंदिरानगर, टीआरएफ, यूएस क्लब, और मणिपाल अस्पताल के सहयोग से संभव हुआ है, और इस परियोजना की लागत के एक भाग की राशि - 43,112 डॉलर - टीआरएफ से वैश्विक अनुदान के माध्यम से प्राप्त हुई है।

200 बच्चे जिनके दिल का इलाज इस वाल्व बैंक के माध्यम से हुआ उनकी सफल शल्य चिकित्सा मणिपाल, जयदेव, नारायण हृदयालय और अन्य अस्पतालों में हुई है। इस लेख के लिखते समय - अगस्त के अंत तक - यहाँ लगभग 50 होमोग्राफ्ट्स उपलब्ध हैं, लेकिन उन्हें केवल चार सप्ताह तक ही संग्रहीत किया जा सकता है।■

गंदेवी में फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं की मदद

किरण ज़ेहरा



DG प्रशांत जानी, उनकी पत्नी हिता और ए जी मिहिर ठक्कर, एक PHC में सुरक्षात्मक आश्रयों को सौंपते हुए।

रात के लगभग 11 बज रहे थे जब रोटरी क्लब गंदेवी, रो ई मंडल 3060 के सदस्य परिमल नायक को डॉ प्रज्ञेश परमार का परेशानी भरा फोन आया। परमार ने बताया कि, “हमारे पास मास्क या पीपीई नहीं थी और हमें कल कोविड रोगियों का इलाज करना था। मुझे पता है कि आपका क्लब जरूरत के समय हमेशा मदद करता है।” अगली सुबह गाडच में स्थित ग्रामीण प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र जहां परमार काम करते हैं, उन्हें क्लब से एक केयर पैकेज मिला। उन्होंने आगे कहा, “मैं सही था, रातोंरात हमें पीपीई, मास्क और सैनिटाइजर मिल गए। मैं रोटेरियन को इसके लिए धन्यवाद देता हूं।”

रोटरी क्लब गंदेवी गुजरात में 35 ग्रामीण पीएचसी और बाल स्वास्थ्य केंद्रों से जुड़ी हैं। नायक ने कहा, एक के बाद एक हमें पीपीई, मास्क, सैनिटाइजर और थर्मामीटर के लिए इन केंद्रों से कॉल आए। “वे हमारे पास आए क्योंकि उन्हें हमारे ऊपर विश्वास है। कोरोना के प्रकोप के शुरुआती दिनों के दौरान, मास्क, दस्ताने और सैनिटाइजर स्थानीय स्तर

पर कम हो गए थे।” वे कहते हैं, “लेकिन हम बढ़ती जरूरतों से अवागत थे, और इसलिए हमने अपने पुराने सहयोगियों तक पहुंचने तथा वैश्विक अनुदान आवेदन दाखिल करने का फैसला किया।”

अब तक, क्लब ने 42,000 अमेरिकी डॉलर की कोविड-राहत सामग्री का दान दिया है। टीआरएफ, AIPNO (उत्तरी ओहियो, अमेरिकी भारतीय

कोविड के अधिकांश योद्धा हमारे सहयोगी, परिवार के सदस्य, मित्र और साझेदार हैं और उन्हें अपना काम करने हेतु सहयोगी की आवश्यकता है।

परिमल नायक
सदस्य, रोटरी क्लब गंदेवी

चिकित्सक संघ) और सहयोगी क्लबों - रोटरी क्लब बारडोली, वापी वेस्ट, रो ई मंडल 3060; एग्नो ड्यूड हिल्स, रो ई मंडल 6900, यूएस; रो ई मंडल 3054, 3053 - के सहयोग के बिना ये दान संभव नहीं थे। “कोविड के अधिकांश योद्धा हमारे सहयोगी, परिवार के सदस्य, मित्र और साझेदार हैं और उन्हें अपना काम करने हेतु सहयोगी की आवश्यकता है। इसके लिए टीआरएफ को धन्यवाद, जिसने हमारे अनुदान को मंजूरी दी गई थी, जिससे हम उनकी मदद कर सके।”

लगभग 1,200 एन95 मास्क, 27,000 ट्रिपल-लेयर्ड डिस्पोजेबल मास्क, 650 बायो ट्रेप मास्क और 8,000 खादी मास्क, 26,000 दस्ताने, 1,500 पीपीई किट, 7,000 सैनिटाइजर, और 50 इन्फ्रारेड थर्मामीटर पीएचसी, भोजन के साथ पांच सरकारी और धर्मार्थ अस्पतालों, पुलिसकर्मियों और स्वास्थ्य कर्मचारियों को दान किए गए। वे कहते हैं, “हमने अस्पतालों को मैप किया है और एक-एक कर उनके पास जा रहे हैं।” ■

रोटरी ने एक रोटरेक्ट क्लब के साथ अरुणाचल में अपनी उपस्थिति दर्ज की

वी मुत्तुकुमारण

RAC नामसाई की चार्टर
अध्यक्ष खुशबू शर्मा।

उगते सूरज की भूमि पर आपका स्वागत है। 1990 में रोई मंडल 3240 के गठन के तीन दशकों के इंतजार के बाद, 14 अगस्त को अधिकृत किए गए रोटरेक्ट क्लब नामसाई के माध्यम से, रोटरी अब अरुणाचल प्रदेश में मौजूद है, उस उत्तर-पूर्वी राज्य में जो अपनी प्राकृतिक खूबसूरती और वास्तविक सुंदरता के लिए जाना जाता है।

दिलचस्प बात है कि इससे पहले, अरुणाचल प्रदेश राज्य में रोटरी मौजूद नहीं थी। जिसका अर्थ है कि एक रोटरी क्लब के पहुँचने से पहले ही यह रोटरेक्ट क्लब इस उत्तरी पूर्वी राज्य में पहुँच गया।

इस प्रक्रिया में कुछ अन्य रिकॉर्ड भी बनाए गए - यह नया क्लब दक्षिण एशिया का ऐसा चौथा क्लब है जो एक अन्य रोटरेक्ट क्लब, RAC तिनसुकिया द्वारा अधिकृत किया गया है; और एक रोटरेक्ट क्लब द्वारा एक अन्य क्लब को प्रायोजित किए जाने की इस दुर्लभ उपलब्धि को हासिल करने में यह मंडल इस क्षेत्र में दूसरे स्थान पर है।

निश्चित रूप से, DRR तुषार जालान बेहद खुश है। “हमारे मंडल ने RSAMIDO की रिकॉर्ड बुक में अपनी जगह बनाई है और हमने उनसे सभी दस्तावेज प्राप्त कर लिए हैं। 15 नए रोटरेक्टों के साथ, यह नया क्लब चार्टर अध्यक्ष खुशबू शर्मा के नेतृत्व में अरुणाचल में गठित किया गया था। 30 जून, 2021 के अंत तक हमें पूरी उम्मीद है कि हम 35-40 सदस्यों की बढ़त हासिल कर लेंगे,” वह कहते हैं। RAC नमसाई, एक समुदाय-आधारित क्लब, का गठन संभव नहीं हो पाता यदि इन तीन व्यक्तियों - जालान, मंडल महासचिव अमित मोरे और बेशक खुशबू - के आदिवासियों एवं मंडल अधिकारियों के साथ अच्छे संबंध इस क्लब के गठन को आसान नहीं बनाते, DRR कहते हैं।

छह महीने की कड़ी मेहनत

एक सीमावर्ती प्रदेश होने के नाते, अरुणाचल चीन के साथ एक लंबी सीमा साझा करता है और “सुरक्षात्मक एवं रणनीतिक कारणों की वजह से आमतौर पर सरकार यहाँ पर गैर सरकारी

संगठनों को काम करने की अनुमति नहीं देती है। साथ ही, आदिवासी भी बाहरी लोगों के साथ अपने स्थान को साझा करने को लेकर बहुत संवेदनशील है, जालान समझाते हैं।” लेकिन रोटरी के ब्रांड मूल्य और युवाओं के मध्य रोटरेक्ट की पहुंच को देखने के बाद, “जिला आयुक्त आर के शर्मा ने हमें क्लब शुरू करने की अनुमति दी और हम खुश हैं कि मुख्यमंत्री पेमा खांडू का आशीर्वाद हमारे साथ है, खुशबू कहती है।”

वह अब एक साल के भीतर इस राज्य में एक रोटरी क्लब खोलने हेतु जालान के साथ काम कर रही है। रोटरी क्लब तिनसुकिया ने अरुणाचल प्रदेश में एक रोटरेक्ट क्लब की स्थापना करने के लिए जालान को लॉजिस्टिक और अन्य सहायता प्रदान की है।

हालांकि, जिला आयुक्त कार्यालय से एक विशेष टीम द्वारा इस क्षेत्र का दौरा करने, आदिवासियों से बातचीत करके उनकी प्रतिक्रिया प्राप्त करने और एक आदिम स्थान पर इस तरह के युवा क्लब की शुरुआत करने के अच्छे-बुरे नतीजों का अध्ययन करने जैसी सभी औपचारिकताओं को पूरा करने में छह महीने लग गए। खुशबू की इस दूरस्थ इलाके में एक बढ़िया छवि होने के कारण स्थानीय लोगों से मिली सकारात्मक प्रतिक्रिया के बाद, “हमें डीसी से अनापत्ति प्रमाण पत्र (NOC) मिल गया।”

एक महान प्रतिज्ञा

12 जुलाई को अपने शपथ ग्रहण समारोह के दौरान, जालान ने अरुणाचल, मणिपुर और मिजोरम में रोटरेक्ट क्लबों की शुरुआत करने का संकल्प लिया था, “क्योंकि मेरा सपना है कि मेरे DRR कार्यकाल के दौरान पूर्वोत्तर भारत के सभी हिस्सों में रोटरेक्ट फैल जाए।” उनका अगला पड़ाव मणिपुर है, इसके बाद मिजोरम (अक्टूबर) है जहाँ रोटरेक्ट क्लब शुरू करने की तैयारी की जा रही है। जालान इंटरकॉन ग्लोबल के मालिक है, एक कंपनी जो कंपनी नियंत्रण, ब्रांडिंग और विपणन के क्षेत्र में कार्य करती है और उनके पास उम्दा चाय के लिए जाना जाने वाला जालान समूह का एक सफल पारिवारिक व्यवसाय है। “मैं निरपवाद रूप से रोटरेक्ट को बढ़ावा देने के लिए उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के शीर्ष पुलिस अधिकारियों, स्थानीय अधिकारियों और उद्यमियों के साथ अपने अच्छे संबंधों का उपयोग करता हूँ।”



RIPE शेखर मेहता और राशी के साथ DRR तुषार जालान।

टैगलाइन ‘कोविड से अग्रणी योद्धाओं की सुरक्षा’ के साथ चलाया गया *प्रोजेक्ट रक्षितम* एक बहुत बड़ी सफलता साबित हुआ क्योंकि 30 क्लबों के 400 रोटरेक्टर अब तक ₹2 लाख मूल्य के फेस शील्ड्स, हैंड सैनिटाइज़र और पेडल सैनिटाइज़र पंप वितरित कर चुके हैं। रोटरेक्टरों द्वारा स्व-वित्त पोषण के माध्यम से इस परियोजना के लिए धन जुटाया गया।

परियोजना सम्मान ने 500 से अधिक कोविड योद्धाओं को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया। “हमने अपने पूरे मंडल के एम्बुलेंस चालकों, सफाई कर्मचारियों, नर्सों, बैंक कर्मचारियों, पुलिसकर्मियों, कचरा बीनने वालों और डॉक्टरों सहित अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं को सम्मानित किया।”

प्रोजेक्ट सहायता

‘असम को आपकी आवश्यकता है’ टैगलाइन के साथ चलाई गई एक विशाल बाढ़-राहत परियोजना ने युवाओं और जनता का ध्यान आकर्षित किया। जालान बताते हैं, “हर साल असम के लगभग पांच मिलियन लोग और हजारों जानवर एवं मवेशी ब्रह्मपुत्र नदी में आने वाली बाढ़ से प्रभावित होते हैं।” जब उन्होंने DRR के रूप में पदभार संभाला, तो उन्होंने 12 अलग-अलग रोटरी, रोटरेक्ट क्लबों और मंडलों के साथ साझेदारी की ताकि बाढ़ से प्रभावित लोगों के लिए राहत एवं पुनर्वासन कार्य करने हेतु धन एकत्रित किया जा सके। अगस्त तक, “हमने असम में पांच स्थानों पर बाढ़ राहत शिविर

स्थापित करने के लिए ₹1.5 लाख जुटा लिए हैं। रोटरेक्ट शिविरों में शरण पाने वाले लोगों को दैनिक जीवन के लिए राशन किटें, भोजन, किराने का सामान और आवश्यक वस्तुएं जैसे कि गंदे, काँइल और बर्तन आदि दिए गए। बाढ़ शिविरों में लगभग 1,500 परिवारों को शरण दी जा रही है।

अधिक क्लब, अधिक सदस्य

यद्यपि रोई रजिस्ट्री के अनुसार रोई मंडल 3240 में 60 क्लब है पर उनमें से केवल 40 क्लब ही सक्रिय हैं जिनके पदाधिकारी रोटरेक्टरों को सामुदायिक परियोजनाएं करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। उन्होंने 878 रोटरेक्टरों की मंडल सदस्यता के साथ अपने DRR कार्यकाल की शुरुआत की थी और उनका लक्ष्य इस संख्या को 1,000 से अधिक करने का है। सितंबर तक, चार नए क्लब शुरू किए गए और एक समारोह के दौरान एक ही दिन (अगस्त 28) में 175 नए सदस्यों को शामिल करके एक ऐतिहासिक घटना को अंजाम दिया गया।

वह कहते हैं, “हमें विश्वास है कि जून 2021 तक छह नए क्लबों की शुरुआत की जाएगी और हमारी सदस्य संख्या 71 प्रतिशत बढ़कर 1,500 के करीब पहुँच जाएगी।” और उम्मीद है कि, अगले साल इस समय तक अरुणाचल प्रदेश में एक नया रोटरी क्लब स्थापित हो जाएगा जो 115-वर्षीय पुराने सेवा संगठन के लिए एक निर्णायक क्षण होगा, वह कहते हैं। ■

जब एक कॉर्पोरेट अपनी सीएसआर निधि लेकर बार-बार रोटरी क्लब गोरखपुर के पास आया

रशीदा भगत

रोटरी क्लब गोरखपुर द्वारा स्थापित
हैंडवाश स्टेशन।

इस सब की शुरुआत 2018-19 में तब हुई जब क्लब के तत्कालीन सचिव एमपी कंदोई ने अपने क्लब, रोटरी क्लब गोरखपुर, रो ई मंडल 3120, के सदस्यों को सुझाव दिया कि उन्हें उत्तरप्रदेश के गोरखपुर के जंगल कोरिया में स्थित एक स्कूल - पूर्व माध्यमिक विद्यालय - को अपनाना चाहिए। रोटेरियनों के मन में साक्षरता को लेकर जुनून था और इसलिए उन्होंने स्कूल को सुसज्जित किया और हाथों की धुलाई के स्टेशन, शौचालय, और शिक्षण सामग्रियाँ प्रदान की, जिसमें ई-शिक्षण सुविधाओं से युक्त स्मार्ट कक्षाएं शामिल हैं।

स्कूल के सौंदर्यीकरण ने स्थानीय समुदाय का काफी ध्यान आकर्षित किया और जिन लोगों ने इस स्कूल में रोटेरियनों द्वारा किए गए बेहतरीन काम को देखा उसमें से एक थी जापान की टोयो इंजीनियरिंग कंपनी जो गोरखपुर में एक उर्वरक कारखाने की स्थापना कर रही है। कॉर्पोरेट ने पीडीजी अनूप अग्रवाल, मंडल 3120 के सीएसआर अध्यक्ष, जो इस क्लब के सदस्य भी हैं, से अपने सीएसआर फंड का उपयोग करने हेतु संपर्क किया। अग्रवाल कहते हैं, “उन्होंने मुंबई में रोटरी के साथ कुछ काम किया था, जहाँ उनका मुख्यालय स्थित है, और उन्होंने कहा कि वे इस साझेदारी और काम की गुणवत्ता को लेकर बहुत खुश थे।”

कंपनी 32,500 डॉलर की सीएसआर निधि देने के लिए तैयार थी, लेकिन उसकी एकमात्र शर्त यह थी कि क्लब को शहर की सीमा पर स्थापित हो रहे

टोयो इंजीनियरिंग द्वारा दी गई
सीएसआर निधि की कुल राशि
₹1.2 करोड़ से अधिक है।

उर्वरक कारखाने के निकट स्थित सरकारी स्कूलों में सुधार के लिए धन का उपयोग करना होगा, क्योंकि इससे उनके कामगारों के बच्चों को लाभ मिलेगा। और यह काम 31 मार्च 2019 तक पूरा हो जाना चाहिए।

अग्रवाल ने आगे कहा कि शुरू में टोयो इंजीनियरिंग ₹20 लाख देना चाहती थी, लेकिन जब उस निधि से काम शुरू किया गया तो और अधिक धन की आवश्यकता पड़ी, और जब उनसे कहा गया कि टीआरएफ वैश्विक अनुदान के माध्यम से रोटरी भी पैसा लगाएगी तो वे ₹23 लाख देने को तैयार हो गए।

परिणाम 60,129 डॉलर का वैश्विक अनुदान था, जिसमें टोयो इंजीनियरिंग ने 30,875 डॉलर दान किए थे।

इन पैसों की मदद से, क्लब ने डेस्क-बेंच के 391 सेट, 14 शौचालय, 12 स्मार्ट कक्षाएं



क्लब द्वारा उपलब्ध कराए गए फर्नीचर पर बच्चे बैठकर पाठ पढ़ते हैं।

(ई-शिक्षण सुविधाओं से पूर्ण रूप से सुसज्जित), नौ जल आपूर्ति प्रणालियाँ, 12 हाथों की धुलाई के स्टेशन, 38 पंखे और 9 ठंड जल वितरक प्रदान करके 10 स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में परिवर्तित करने का कार्य शुरू किया।

इस परियोजना की शुरुआत अप्रैल 2018 में हुई और 31 मार्च 2019 को यह पूर्ण हो गई, ठीक उतने ही समय में जितना कॉर्पोरेट द्वारा निर्धारित किया गया था, और वे रोटेरियनों द्वारा किए गए कार्य से बहुत प्रसन्न थे। “कार्य की जांच करने के

लिए उन्होंने अपने प्रतिनिधियों को भेजा, जिसके बाद उन्होंने ना केवल संतुष्टि व्यक्त की, बल्कि उनकी कंपनी के सचिव सुहास पटवर्धन ने हमसे एक बार फिर यह कहकर संपर्क किया कि वे हमारे साथ अपनी और अधिक सीएसआर निधि साझा करना चाहते हैं। इस बार हमें बताएं कि आपको कितनी निधि की आवश्यकता है और ऐसे कौन से क्षेत्र हैं जिनमें आप काम करेंगे,” अग्रवाल मुस्कुराते हैं।

“हमने सुझाव दिया कि हम अधिक स्कूलों का उत्थान करेंगे और स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में



एक स्कूल में RID भरत पांड्या।



भी काम करेंगे, कंदोई ने कहा। इस बार 16 स्कूलों का चयन किया गया; इनमें पहले से ही शौचालय मौजूद थे, लेकिन शिक्षा अधिकारियों ने कहा कि इन स्कूलों को अन्य सुविधाओं की आवश्यकता है, जैसे कि परिसर का सौंदर्यीकरण, ई-लर्निंग सुविधाओं के साथ स्मार्ट-कक्षाओं की स्थापना, हाथों की धुलाई के स्टेशन, बेंच और डेस्क, पंखे, व्हाइट बोर्ड, इत्यादि, जिसके लिए क्लब राजी हुआ और उसने सभी 16 स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में परिवर्तित करने पर सहमति जताई। इस परियोजना के लिए टोयो इंजीनियरिंग ने 58,825 डॉलर के कुल वैश्विक योगदान में से 39,875 डॉलर का योगदान दिया।

सीएसआर निवेश के अपने तीसरे चरण में, जिसके लिए इस कंपनी ने फिर से रोटरी क्लब गोरखपुर को चुना, इस बात का निर्णय लिया गया कि कैंसर का पता लगाने और अन्य रोगों की जांच के लिए कुछ अत्याधुनिक उपकरण एक परोपकारी न्यास द्वारा चलाए जाने वाले अस्पताल, गुरु श्री गोरखनाथ चिकित्सालय, को दिए जाएंगे।

इस परियोजना के लिए स्वीकृत वैश्विक अनुदान 134,028 डॉलर का है, जिसके लिए टोयो का सीएसआर योगदान 91,650 डॉलर (₹67.8 लाख) से अधिक है। रेडियोलॉजी के लिए ₹40 लाख की लागत वाली अल्ट्रासाउंड कलर डॉपलर मशीन एवं

₹54.75 लाख की लागत वाली एक अन्य नैदानिक उपकरण का ऑर्डर दे दिया गया है।

“कोविड महामारी के कारण इस परियोजना में देरी हो गई है; यह अस्पताल गोरखनाथ मंदिर से जुड़ा हुआ है, जिसके साथ उत्तरप्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ का गहरा संबंध है। हम 17 अक्टूबर को सीएम द्वारा इस परियोजना का उद्घाटन किए जाने की योजना बना रहे हैं, उस दिन हमारा क्लब अपना 75वां साल पूरा करेगा,” अग्रवाल कहते हैं।

इस परियोजना पर कुल ₹1.7 करोड़ (252,982 डॉलर) खर्च किए गए थे, और ऐसा RIPE शेखर मेहता द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों का पालन करते हुए किया गया, जिसके अनुसार 100 साल पूरा कर चुका एक संगठन - रोटरी क्लब कलकत्ता की स्थापना के साथ ही 100 वर्ष पहले रोटरी भारत में आई थी - को “बड़ी एवं साहसिक परियोजनाएं” करना चाहिए। इसमें टोयो इंजीनियरिंग द्वारा दी गई सीएसआर निधि की कुल राशि 1.2 करोड़ से अधिक है।

कंदोई आगे कहते हैं, “टोयो इंजीनियरिंग हमारे क्लब द्वारा किए गए काम से इतनी खुश है कि वह एक बार फिर से सामुदायिक कल्याण परियोजनाओं के अगले दौर के लिए हमें और अधिक सीएसआर निधि देने हेतु आगे आई है।” ■



टोयो इंजीनियरिंग हमारे क्लब द्वारा किए गए काम से इतनी खुश है कि वह एक बार फिर से सामुदायिक कल्याण परियोजनाओं के अगले दौर के लिए हमें और अधिक सीएसआर निधि देने हेतु आगे आई है।

एम पी गंदोई

पूर्व अध्यक्ष, रोटरी क्लब गोरखपुर

नागपुर के रोटेरियनों ने कोविड जांच सुविधा को बेहतर बनाया

टीम रोटेरी न्यूज

रोई मंडल 3030 के रोटेरी क्लब नागपुर डाउनटाउन ने नागपुर के इंदिरा गांधी सरकारी मेडिकल कालेज अस्पताल में वायरल रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक लैब (VRDL) को एक उच्च तकनीक, स्वचालित RNA/DNA एक्सट्रैक्शन उपकरण प्रदान किया। 42,250 की लागत वाले ग्लोबल ग्रांट प्रोजेक्ट को रोटेरी क्लब शिकागो कॉस्मोपॉलिटन, रोई मंडल 6450, यूएसए एवं TRF के सहयोग से क्रियान्वित किया गया था। परसिस्टेंट फाउंडेशन ने अपने CSR पहल के हिस्से के रूप में ₹15 लाख का योगदान दिया और लक्ष्मी कंस्ट्रक्शंस ने 2 लाख रुपये का योगदान दिया।

प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्री वीरेंद्र पात्रिकर ने बताया कि “VRDL एकमात्र लैब है जहां विदर्भ, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के लोगों के लिए कोविड-19 हेतु जांच की जाती है।” उन्होंने कहा कि यह नया उपकरण लैब में परीक्षण क्षमताओं को चार

गुना तेजी से बेहतर बनाएगा। “पहले RND/DNA एक्सट्रैक्शन मैनुअल रूप से किया जाता था जिसके कारण हमारे पीसीआर सिस्टम का उपयोग नहीं हो पाता था और हम रोज केवल 150 नमूनों का ही परीक्षण कर सकते थे। अब हम इस परिष्कृत गैजेट से 500-600 परीक्षण कर सकते हैं।” डॉ रवीन्द्र खडसे, VRDL सहयोगी ने बताया।



डीजी शम्बीर शाकिर, IGGMH के डीन डॉक्टर अजय केओलिया और समीर बेनरे, परसिस्टेंट सिस्टम के मुख्य निदेशक की उपस्थिति में जिलाधिकारी श्री रविंद्र ठाकरे द्वारा मशीन को लैब को सौंपा गया। क्लब के अध्यक्ष निशिकांत काशीकर, भूतपूर्व अध्यक्ष संदीप देशपांडे, उपाध्यक्ष अभिजीत देशपांडे, क्लब की सेक्रेटरी प्रतीक्षा मायी, कोषाध्यक्ष प्राजक्ता मंगरूलकर, विनोद अठावले भी उपस्थित थे।■

रोटेरी क्लब मांडवी ने अखबार बांटने वाले लड़कों को सम्मानित किया



रोई मंडल 3054, रोटेरी क्लब मांडवी के रोटेरियनों ने स्थानीय दैनिक समाचार पत्र कच्छलोक के सहयोग से अखबार बांटने वाले 35 लड़कों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया, जो लॉक डाउन और कोविड महामारी का सामना करते हुए सुबह-सुबह ही अखबारों को कड़ी मेहनत करते हुए घर तक पहुँचाते हैं। क्लब ने उन्हें फेस मॉस्क, सैनिटाइजर और राशन किट वितरित किए। क्लब की सदस्य भाविन गणात्रा ने कहा कि “लड़के एक भी दिन छोड़े बगैर, अपने रिस्क पर मांडवी में लगभग 9,450 घरों में समाचार पत्र वितरित करते हैं।”

क्लब ने ऑनलाइन फंड ट्रांसफर के माध्यम से पी एम केयर फंड में ₹25,000 का योगदान दिया। ■

RILM का मिशन: 2025 तक साक्षर हो भारत

जयश्री

RILM के अध्यक्ष पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी ने हाल ही में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक के साथ zoom मीट को संबोधित करते हुए कहा, “रोटरी इंडिया लिटरेसी मिशन (RILM) का उद्देश्य 2025 तक भारत में अपने प्रमुख कार्यक्रम ‘TEACH’ के माध्यम से संपूर्ण साक्षरता का लक्ष्य है। RILM के अध्यक्ष RID कमल संघवी और RIPE शेखर मेहता ने इस कार्यक्रम की एंकरिंग की, जिसमें 1,000 प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह फेसबुक और यूट्यूब पर भी लाइव स्ट्रीम किया गया।

बेनर्जी ने कहा कि, “2014 में अपने गठन के बाद से, आर.आई.एल.एम. शिक्षकों के प्रशिक्षण और

वयस्क साक्षरता में काफी प्रगति की है। आशा किरण कार्यक्रम ने 40,000 बच्चों को औपचारिक स्कूली शिक्षा में वापस लाने में मदद की है; 20,000 स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में बदल दिया गया है और भारत भर के सरकारी स्कूलों में 4,000 पुस्तकालय बनाए गये हैं। और उनके समर्थन हेतु केंद्र और राज्य सरकारों की सराहना की।” उन्होंने आगे कहा, “जब तक हम भारत को पूरी तरह से साक्षर नहीं बना लेते, तब तक हम इस तरह की और साझेदारी हेतु तत्पर हैं।”

युवाओं को रोजगारपरक बनाने की पहल में, RILM ने अपोलो हॉस्पिटल्स समूह के साथ साझेदारी में, एक पैरामेडिकल वर्कफोर्स

बनाने हेतु एक नया ‘मेडिस्किलिंग’ कार्यक्रम शुरू किया है। संघवी ने कहा, “यह अस्पतालों, फार्म सियों, नैदानिक केंद्रों में लोगों को रोजगार प्रदान कर सकता है।” तीन महीने के पाठ्यक्रम, जिसमें अन्यथा ₹50,000 का खर्च आया, रोटरी द्वारा संदर्भित लोगों को ₹4,500 प्रति व्यक्ति में पेश किया जाता है, और इसमें 30 दिन की ऑनलाइन कक्षाएं और 60 दिनों के लिए चिकित्सा संस्थानों में प्रशिक्षण शामिल हैं। उन्होंने रोटेरियन से आग्रह किया कि वे अपने क्षेत्र के बेरोजगार युवाओं के लिए इस कोर्स को प्रायोजित करें। अपोलो में 28 स्किलिंग केंद्र हैं और केंद्र को बड़े समूह हेतु किसी विशिष्ट शहर में

व्यवस्थित किया जा सकता है। उन्होंने कहा, “मैं एक वर्ष में कम से कम ₹50,000 उम्मीदवारों को प्रशिक्षित करना चाहूंगा।

संघवी ने डिजिटल शिक्षण में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की तत्काल आवश्यकता को दोहराया। महामारी कि वजह से हाल के दिनों में ऑनलाइन शिक्षा में तेजी देखी गई है। ई-लर्निंग अब सामान्य बात है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को अपने कौशल को बढ़ाने और उच्चतम करने की जरूरत है ताकि वे डिजिटल रूप से समझदार बन सकें।

RILM ई-लर्निंग टूल्स का उपयोग करने हेतु महाराष्ट्र में 70,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है और दिल्ली में 5,000 शिक्षकों को पांच-दिवसीय कार्यशाला में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। संघवी ने कार्यशालाओं के समन्वय हेतु रोटेरियन स्वाति हरकल, रोटरी क्लब वाई, रो ई मंडल 3132, और प्राण मेहता, रोटरी क्लब दिल्ली सैनिक फार्मस, रो ई मंडल 3011 को धन्यवाद दिया और कहा कि RILM राष्ट्रव्यापी रूप से ऐसे ही प्रशिक्षण कार्यक्रमों का समर्थन करेंगे। एक महीने में 500,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है।

RILM अध्यक्ष ने रोटेरियन से अधिक हैप्पी स्कूल बनाने का आग्रह किया। “एक स्कूल को बदलने में सिर्फ ₹300,000-₹500,000 लगते हैं। कोई बच्चा





रमेश पोखरियाल निशंक
केन्द्रीय शिक्षा मंत्री

तभी सीख सकता है और विकास कर सकता है जब सीखने का माहौल अच्छा हो।”

RIPE मेहता ने जुलाई में निशंक की उपस्थिति में, रोटरी और NCERT के बीच कक्षा 1-12 के छात्रों के लिए इलेक्ट्रॉनिक शिक्षण सामग्री प्रदान करने हेतु हस्ताक्षर किए गए ऐतिहासिक समझौते का स्मरण किया। मंत्री ने बताया, हिंदी और अंग्रेजी में चार महीने की सामग्री तैयार है और इसे NCERT के निदेशक प्रो हृषिकेश सेनापति के साथ साझा किया गया है।

उन्होंने कहा, वयस्कों की साक्षरता के बारे में बात करते हुए मेहता ने कहा कि इंटरैक्टर्स और रोटरेक्टरों ने अब तक एक लाख निरक्षर वयस्कों को साक्षर में बदला है। भारत में लगभग 27 करोड़ वयस्क निरक्षर हैं। इसमें से 7 करोड़ सीखने हेतु अधिक उम्र के हो सकते हैं। शेष 20 करोड़ में से, रोटरी 10 करोड़ वयस्कों को साक्षर बनाएगी, और अनुरोध किया कि सरकार रोटरी के साथ पांच-पृष्ठ की बुकलेट लाने हेतु एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करे, जो युवाओं को वयस्कों को पढ़ाने में आसान होगी, जो साक्षर वयस्कों के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए NIOS परीक्षा में शामिल होंगे। उन्होंने कहा, “रोटरी, अपने सहयोगियों

के साथ, 15 लाख स्वयंसेवकों में शामिल हैं, जिनमें ब्रह्मकुमारियां, गायत्री परिवार, अखिल भारतीय मुस्लिम पेशेवर, स्काउट और गाइड, रोटेरियन, रोटरेक्टरों, इंटरैक्टर्स और आरसीसी शामिल हैं। आइये 2025 तक भारत को साक्षर बनाने हेतु साथ मिलकर मिशन मोड पर काम करते हैं।”

मंत्री निशंक ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, “संगठन के रूप में आपकी क्षमताओं और शक्ति का शिक्षा विभाग द्वारा हर तरह से समर्थन किया जाएगा।” उन्होंने कहा कि साक्षरता कार्यक्रम को उत्साही दृष्टिकोण की आवश्यकता है। “यह सिर्फ शामिल होने वाले लोगों की संख्या की बात नहीं है जिन्हें आप शामिल कर सकते हैं, यह उन उत्साही लोगों की बात है जिन्हें आप लाएंगे और समझेंगे कि आप अपने जुनून और कौशल को कैसे काम में ला सकते हैं।”

उन्होंने साक्षरता को बढ़ावा देने में छात्रों और शिक्षकों को शामिल करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा, “यह सुनिश्चित करने हेतु कि अशिक्षा के खिलाफ इस लड़ाई में उनकी मदद करने का कोई रास्ता बन सके, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि किसी भी परिवार में कोई भी व्यक्ति अनपढ़ नहीं है। अपने साक्षरता मिशन में व्यावसायिक प्रशिक्षण पर भी विचार करें।”

उन्होंने नई शिक्षा नीति और कैसे यह युवाओं के सीखने के तरीके को बदल देगा, इस बारे में भी बताया।

उन्होंने गुणवत्ता ऑनलाइन शिक्षण सामग्री प्रदान करने में रोटरी की भागीदारी की सराहना की। निशंक ने कहा कि ‘एक क्लॉस, एक चैनल’ का कार्यक्रम उन बच्चों तक पहुंचता है, जिनके पास स्मार्टफोन या इंटरनेट कनेक्शन नहीं है और “यह सराहनीय है कि हम रिकॉर्ड समय में 31 करोड़ छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षण मंच बनाने में सक्षम हो सके हैं।” ■

मिडनाइट स्नैक्स

हांक सार्टिन



ताइपे में सूरज ढलने के बाद ही खरीददारी शुरू हो जाती है: शहर का नाइट मार्केट (रात का बाज़ार) फुटपाथ और सड़कों पर जीवंत हो उठता है, जहांकि विक्रेता रात भर के खरीदने, बेचने, खाने, पीने के लिए स्टॉल लगाते हैं। कुछ सड़कों पर शामियाना लगाया जाता है और हर शाम को फैला दिया जाता है। 2021 के रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के लिए 12-16 जून को जब आप ताइपे आएंगे, तब आप ताइपे के इस रोजमर्रा के जीवन के जीवंत भाग का अनुभव करने के लिए समय निकालें या हमें कहना चाहिए कि हर नाइट लाइफ के लिए।

शिलिन नाइट मार्केट एक सदी से भी अधिक समय से चल रहा है और शायद शहर में सबसे प्रसिद्ध (और सबसे अधिक व्यस्त) है। पास के नेशनल पैलेस म्यूजियम का विजिट करें और फिर बाजार जाएं जो शाम को शुरू हो जाता है। जियानटेन मेट्रो स्टेशन के पास शिलिन मार्केट में आउटडोर फूड स्टॉल हैं, अन्य माल यांगमिंग प्लाजा पर उपलब्ध हैं। एक और प्रसिद्ध गंतव्य स्थल लिंजियांग स्ट्रीट का नाइट मार्केट है - जिसे टोंगहुआ स्ट्रीट नाइट मार्केट के नाम से भी जाना जाता है, लेकिन ताइपे 101 टॉवर के पास स्थित होने के बावजूद भी पर्यटक इस मार्केट में कम ही जाते हैं। सभी बाजारों में भीड़-भाड़ कम ही रहती है और वीकएंड की बजाय वीकनाइट्स पर ज्यादा पर्यटक आते हैं।

नाइट मार्केट में जाने से पहले रात का भोजन (या रात का भोजन जरा सा भी नहीं करें) हल्का करें ताकि आपके पास मजेदार ताइवानी स्ट्रीट फूड का स्वाद लेने के लिए जगह हो। स्प्रिंग ऑनियन पेन-केक, फ्राइड पकौड़ी, और ग्रील्ड सॉसेज ट्राई करें जो कई प्रकार के हैं। स्टिन्की टोफू जैसा कि नाम से स्पष्ट है, पर यह स्वादिष्ट है, इसे डीप फ्राई किया जाता है और लहसुन की चटनी के साथ परोसा जाता है या आप अपनी पसंद के सॉस के साथ नूडल्स खाने का निर्णय कर सकते हैं।

अधिक जानें और पंजीकरण

करें convention.rotary.org पर/



एक समस्त महिला क्लब ट्रांसजेंडर के भय से मुक्ति दिलाने के लिए संघर्षरत है

रशीदा भगत



बाएं से : PDG ज़मिर पाशा, उनकी पत्नी शकीला, एस हेमलता, पूर्व अध्यक्ष रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली शक्ति और (रिटाइर्ड) मेजर जनरल एन आर के बाबु।

बात दिसंबर 2018 की है, जब एस हेमलता, 41 सदस्यों वाले एक समस्त महिला क्लब, रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली शक्ति की अध्यक्ष बनने की तैयारी में जुटी हुई थी, अन्य सभी आगामी नेताओं की तरह वह भी एक ऐसे विशिष्ट परियोजना की तलाश में थी जिसे उनके कार्यकाल 2019-20 के दौरान उनका क्लब हाथ में ले सके।

ये उस समय की बात है जब मेरे क्लब की सदस्य, सुनीता रेड्डी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं एक ऐसी परियोजना को आकार देने में रुचि लूंगी जो ट्रांसजेंडर बच्चों को आवास शिक्षा, सम्मान दिलाने, के साथ साथ, समाज में इज़्ज़त के साथ जिंदगी गुजारने में सहायक हो। उस प्रोजेक्ट के तहत वे ट्रांसजेंडर

या जेंडर नॉन -फॉर्मिंग (त्रच्छु) बच्चों के लिए एक होस्टल का निर्माण कर रही थीं, उन्होंने याद किया।

हुआ यूं, उस समय, सुनीता के पति, एनआरके बाबू, भारतीय सेना से सेवानिवृत्त मेजर जनरल और त्रिची शहर में एक चैरिटेबल ट्रस्ट (स्वामी शिवानंद विद्या समिति) द्वारा संचालित हाई स्कूल, श्री शिवानंद बालालय के सीईओ थे और आज भी है। स्कूल में 100 विशेष बच्चों सहित 450 बच्चे हैं, लेकिन इनमें ट्रांसजेंडर या जीएनसी बच्चा केवल एक है।

हेमलता को तुरंत ये विचार जैच गया और अपने कार्यकाल में इसे क्लब प्रोजेक्ट बनाने का निर्णय कर लिया। मंडल द्वारा 8 लाख रुपये का अनुदान, क्लब के सदस्यों द्वारा दान किए गए 1 लाख रुपये, उनमें से एक सदस्य सिंधुजा, एक आर्किटेक्ट, इस कार्य के लिए

जिनकी फीस ₹ 1 लाख होती, उन्होंने पूरी तरह से निशुल्क सेवाएं दीं, और इस सब के साथ ₹ 10 लाख की परियोजना का शिलान्यास 27 जुलाई, 2019 को हुआ। इस अगस्त के अंतिम सप्ताह में छात्रावास का उद्घाटन पीडीजी ज़मिर पाशा ने किया, जिसमें मेजर जनरल बाबू, वर्तमान क्लब अध्यक्ष वल्लरमथी, सचिव प्रिया वनराज और हेमलता ने भाग लिया।

GNC बच्चों की दयनीय स्थिति

प्रिंटिंग और कॉरपोरेट गिफ्टिंग का व्यवसाय करने वाली हेमलता ने कहा कि जब वह इस प्रोजेक्ट पर शोध कर रही थीं तो उन्होंने पाया कि ऐसे ट्रांसजेंडर बच्चों की दशा वाकई दयनीय है। “अधिकांश मामलों में, सामाजिक अभिशाप के कारण, माता-पिता इन

बच्चों को अस्वीकार कर देते हैं, उन्हें घर से बाहर फेंक देते हैं।” नाजुक और कम उम्र में, ये बच्चे अपराधी गिरोह के बुरे हाथों में पड़ जाते हैं जहां उन्हें अपराध और हिंसा के जीवन में झोंक दिया जाता है। हालांकि अब सरकार ने कानून में संशोधन कर दिया है कि यदि माता-पिता ने अपने जीएनसी बच्चों को घर से बाहर निकाला तो उन्हें कारावास भेजा जा सकता है।

छात्रावास के लिए जमीन, जहां दो मंजिला इमारत प्रस्तावित थी और जिसमें बंक बेड पद्धति के आधार पर 38 बच्चे रह सकते हैं, स्कूल ने क्लब को दान दी थी, स्कूल इन बच्चों को प्रवेश दे कर उन्हें अच्छी शिक्षा मुहैया करवाने के लिए भी प्रतिबद्ध है।

हेमलता ने कहा कि वर्तमान में कोविड महामारी के कारण स्कूल बंद है, इसलिए नए नवेले छात्रावास को अभी बच्चे नहीं मिले हैं। उन्होंने यह कहते हुए प्रसन्नता व्यक्त की कि हमारे इतने बड़े समाज में



ऊपर : DG ए एल चोक्कलिंगम और PDG एम मुरुगानन्दम, ट्रांसजेंडर जागरूकता Zoom कार्यक्रम में शामिल हुए।

ऐसे मां बाप भी हैं जो अपने GNC बच्चों की देखभाल कर रहे हैं, उनकी मदद करते हैं और उन्हें अच्छी शिक्षा दे रहे हैं।

अगस्त के मध्य में उनके क्लब ने Zoom पर ट्रांसजेंडर अवेयरनेस प्रोग्राम आयोजित किया था जिसकी अध्यक्षता RID 3000 से डीजी चोक्कलिंगम ने की। उन्होंने कहा, “डीजी चोक्कलिंगम ने इस परियोजना की भरपूर प्रशंसा की है, हमने इस परियोजना का नाम *शिवशक्ति* रखा है और और मुझे इस वर्ष के लिए, ट्रांसजेंडर कल्याण और सशक्तिकरण कार्यक्रम के लिए मंडल अध्यक्ष नियुक्त किया है,” उन्होंने बताया कि “इस परियोजना की मुख्य समिति में स्थानीय सरकार के बाल कल्याण अधिकारी भी सदस्य है।”

क्लब को 38 ट्रांस या GNC बच्चे मिलेंगे कहाँ से, इस बारे में उनका कहना था कि ऐसे बच्चों की पहचान करने में यह अधिकारी हमारी मदद करेंगे और इस बारे में सोशल मीडिया पर हमारे रोटेरियन भी जागरूकता फैलाएंगे। “चूँकि यह एक आवासीय सुविधा है, भारत में कहीं से, कोई भी हमारे पास ऐसे ट्रांस या GNC बच्चे को भेज सकता है, जिसका कोई घर बार नहीं है, हम यहां उसे छात्रावास में ठहराएंगे और इस स्कूल में पढ़ाएंगे।” अगर वो स्कूल फीस नहीं भर सकता तो वह कहती हैं, उसके लिए क्लब के सदस्य प्रायोजक ढूँढ लेंगे।

उन्होंने कहा ऐसे युवा वयस्कों की सहायता के लिए हमारा क्लब सिलाई कार्यक्रम और आजीविका



कल्कि सुब्रमण्यम, ट्रांसजेंडर अधिकार कार्यकर्ता।

बढ़ाने के अन्य कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए तत्पर हैं।

इसके अतिरिक्त, यह परियोजना GNC बच्चों के साथ सामान्य बच्चों की तरह व्यवहार करने और उन्हें अच्छी शिक्षा देने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता का प्रसार करेगी। कल्कि सुब्रमण्यम का उदाहरण देते हुए, एक ट्रांसजेंडर एक्टिविस्ट, अभिनेत्री और लेखिका जो उनकी वर्चुअल मीट में मुख्य अतिथि भी थीं, उन्होंने कहा कि कल्कि एक लड़का पैदा हुई थीं और बाद में उसने सेक्स चेंज का ऑपरेशन करवाया था।

“क्योंकि उसके माता-पिता ने उसे बाहर निकाल नहीं फेंका, हर प्रकार से सहयोग किया और उसे पढ़ाया, जिसकी वजह से आज वो समाज का एक सार्थक सदस्य बन कर, ऐसे बच्चों की सहायता के लिए अपना स्वयं का NGO शुरू कर सकी थी।”

सभा को संबोधित करते हुए कल्कि ने कहा, इन बच्चों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है, “भेदभाव रहित वातावरण जहां वे गरिमा के साथ रह सकते हैं। अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए, उन्होंने ट्रांसजेंडर बच्चों को उनके स्वयं के परिवारों में जोड़ने के लिए कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता पर बल दिया। इसके लिए माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों, शिक्षकों, मीडिया और चिकित्सा और न्यायिक विरादरी के लिए एक जागरूकता कार्यक्रम की आवश्यकता है जिसे भली भाँती विचारपूर्वक बनाया जाए,” उन्होंने कहा। जब तक GNC बच्चों के लिए इस तरह की सहायता पद्धति विकसित नहीं की जाती है, तब तक उनके उज्ज्वल भविष्य की कल्पना नहीं कर पाएंगे।

अपने उद्बोधन के प्रारंभ में डीजी चोकलिंगम ने इस परियोजना की अध्यक्ष हेमलता, सह-अध्यक्ष

चूँकि यह एक आवासीय सुविधा है, भारत में कहीं से, कोई भी हमारे पास ऐसे ट्रांस या GNC बच्चे को भेज सकता है, जिसका कोई घर बार नहीं है, हम यहां उसे छात्रावास में ठहराएंगे और इस स्कूल में पढ़ाएंगे।

एस हेमलता, मंडल अध्यक्ष ट्रांसजेंडर कल्याण और सशक्तिकरण कार्यक्रम

विजयश्री और समन्वयक कविता के प्रयासों की प्रशंसा की – ट्रांसजेंडरों को होने वाली समस्याओं के बारे में अधिक से अधिक जागरूकता फैलाने के लिए और उनके बेहतर जीवन की संभावनाओं को बढ़ाने के प्रयासों के लिए। भारी संख्या में उपस्थिति वाली इस आभासी बैठक में लगभग 300 रोटेरियनों ने भाग लिया था और डीजी को उम्मीद थी कि वे सभी ट्रांसजेंडरों की दयनीय स्थिति के प्रति संवेदनशील होकर उनकी मदद के लिए आगे आएंगे।

श्री शिवानंद बालालय के सीईओ मेजर जनरल एनआरके बाबू ने जानकारी दी कि यह छात्रावास जीएनसी बच्चों की व्यवस्था किस प्रकार करेगा। “यह छात्रावास न केवल उन्हें ठहराएगा, यह उन्हें

स्वीकार भी करेगा, उनका पालन पोषण करेगा और सबसे महत्वपूर्ण बात, उन्हें सामान्य बच्चों जैसा महसूस करवाएगा और अन्य सभी बच्चों द्वारा उन्हें स्वीकार किया जाएगा। यह उन माता-पिता के

ट्रांसजेंडर या GNC बच्चों के लिए छात्रावास।





श्री शिवानंदा बालालय, टिचि में छात्र।

लिए भी एक जरिया होगा जो सामाजिक अभिशाप के कारण अपने GNC बच्चों से निजात पाना चाहते हैं।”

डॉ कविता फेन, मनोचिकित्सक और रोटेरियन ने ट्रांसजेंडर बच्चों के साथ व्यवहार करते हुए लोगों को ध्यान रखने योग्य पांच बिंदुओं की सूची दी।

- हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि वे अलग क्यों हैं और फिर दूसरों को भी सिखाएं।

क्योंकि उसके माता-पिता ने उसे बाहर निकाल नहीं फेंका, हर प्रकार से सहयोग किया और उसे पढ़ाया, जिसकी वजह से आज वो समाज का एक सार्थक सदस्य बन कर, ऐसे बच्चों की सहायता के लिए अपना स्वयं का NGO शुरू कर सकी थी।

कल्कि सुब्रमण्यम के बारे में हेमलता कहती हैं।

- शब्द चोट पहुंचा सकते हैं और जान भी ले सकते हैं। इसलिए, लोगों को जीएनसी बच्चों का सम्मान करना सिखाएं।
 - समावेशी बनें: अपने बच्चों को सहनशीलता सिखाएं। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के माता-पिता अपने बच्चे के संक्रमण के दौरान बहुत तकलीफ से गुजरते हैं। ऐसे बच्चों को विलग न करें। उन्हें जन्मदिन की पार्टियों और अन्य सामाजिक कार्यक्रमों में आमंत्रित करें। यह घर से भागने की प्रवृत्ति को रोकने में मदद करेगा।
 - भेदभाव का विरोध करें। उनके समर्थन में अपनी आवाज उठाएं। सिर्फ घर बैठे सहानुभूति व्यक्त करना बेकार है। अपनी कार्रवाई के माध्यम से अपनी सहानुभूति और समर्थन दिखाएं और हर संभव तरीके से मदद करें।
 - सक्रिय रहें और ट्रांस फोबिया से निपटने की आवश्यकता पर जागरूकता फैलाएं।
- मंडल 3000 के ट्रेनर पीडीजी एम मुरुगनंदम ने हमारे प्राचीन महाकाव्यों, जैसे महाभारत से ट्रांसजेंडरों के अस्तित्व और स्वीकृति के उदाहरण दिए। उन्होंने शिखंडी की कहानी सुनाई, जो पुरुष था, लेकिन महिला रूप में जन्म लिया था। शिखंडी राजा द्रुपद की बेटी और बड़ी बहन थी द्रौपदी की जिसने पांडव भाइयों

से शादी की थी। हालाँकि, शिखंडी लड़की पैदा हुई थी, पर पालन पोषण एक पुरुष के रूप में किया गया था, उसे युद्ध और राज्य की शिक्षा दी गई थी। जब शिखंडी अपना लिंग बदलता है, तो वह शिखंडी बन जाती है, एक योद्धा, पीडीजी ने कहा और रोटेरियनों से ट्रांसजेंडरों के लिए सहानुभूति रखने का आग्रह किया। उन्होंने तीसरे लिंग के लिए बेहतर अवसर उपलब्ध करवाने की वकालत करने और अग्रणी भूमिका निभाने के लिए महिला रोटेरियनों को बधाई दी।

कल्कि सुब्रमण्यम ने ट्रांसजेंडरों द्वारा बनाई गई पेंटिंग्स की नीलामी आयोजित की थी। ट्रांसजेंडर्स को तात्कालिक समर्थन देने हेतु रोटेरियनों ने पेंटिंग्स खरीदीं जिनकी मांग अच्छी रही,

प्रेमलता ने कहा, “लेकिन, वास्तव में कार्यक्रम की सफलता का तब पता चला जब जूम मीटिंग खत्म होने के बाद, साथी रोटेरियनों ने आयोजकों से अपने संस्थान और संगठनों में ट्रांसजेंडरों को नियुक्ति देने की मंशा जाहिर की। रोटेरियनों से मिले इस समर्थन के बाद, रो इ मंडल 3000 अधिक से अधिक ट्रांस लोगों को समर्थ बनाने के प्रति आश्वस्त है ताकि वो निर्भीक होकर आगे आएँ और कहें : ममैं यही हूँफ़ हम उस दबी हुई चिंगारी को सुलगा कर चैंजमेकर बनने के प्रति आशान्वित हैं।” ■

एक रोटरी कोविड केंद्र ने मरीजों के दिलों को जीता

किरण जेहरा



पाकीज़ा अपनी माँ को खिलौने दिखाती हुई।

अहमदनगर, महाराष्ट्र, में रोटरी कोविड केयर सेंटर में एक प्लास्टिक विभाजक के पीछे से, रज़िया उसकी सात साल की बेटी पाकीज़ा सलीम से मोबाइल फोन पर बात करते हुए उसे दुलार करती है। कोविड पाज़िटिव निकलने के बाद से, बच्ची को रोई मंडल 3132 के पाँच रोटरी क्लबों - अहमदनगर, अहमदनगर मिडटाउन, अहमदनगर प्रियदर्शनी, अहमदनगर सेंट्रल और अहमदनगर इन्टेग्रिटी - द्वारा स्थापित इस सुविधा में लाया गया था। पाकीज़ा अपनी सिसकिया भरती हुई माँ को प्रसन्नता के साथ वह खिलौने दिखाती है जिसके साथ वह खेलती है। उसके बाद से वह ठीक हो गई और उसे छुट्टी दे दी गई। क्लबों ने बच्चों के खेलने के लिए मनोरंजक वस्तुओं को सोच-समझकर शामिल किया है।

केंद्र से 90 बच्चों सहित 1,000 से अधिक अलक्षणी कोविड रोगियों का इलाज किया है। क्षितिज ज़वारे, रोटरी क्लब अहमदनगर मिडटाउन के अध्यक्ष कहते हैं, WHO और सरकारी मानदंडों के अनुरूप सुविधा स्थापित करने में हमें ₹10 लाख का खर्चा आता है। स्थानीय अस्पताल इस केंद्र में मरीजों को भेजते हैं और गरीबों से कोई शुल्क नहीं वसूला जाता। मरीजों के मनोबल को बढ़ाने के लिए हम उन्हें रोज सुबह शपथ दिलाते हैं: मैं कोरोना से लड़ रहा हूँ, मैं जीतूँगा और अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाऊँगा, वह आगे कहते हैं।

क्लब के सदस्य और केंद्र प्रभारी डॉ राजुकर कहते हैं, अलक्षणी रोगियों को अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता नहीं है। इस तरह के केंद्र गंभीर मामलों के लिए कीमती अस्पताल के बिस्तर बचाते हैं। दो ऑक्सीजन सिलेंडर तैयार रखे गए हैं और आपात स्थिति में, हम एक अतिरिक्त एम्बुलेंस की मदद से रोगी को अस्पताल



बाएं से : अध्यक्ष गण अमित बोरकर, रोटरी क्लब अहमदनगर, गीता गिल्डा, रोटरी क्लब अहमदनगर प्रियदर्शनी, दिगंबर रोकडे, सतकार, प्रिंसिपल-गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक कॉलेज, क्षितिज जवोर, अध्यक्ष रोटरी क्लब अहमदनगर मिडटाउन, DG हरीश मोटवानी, प्रसन्ना खजागीवाले, अध्यक्ष रोटरी क्लब अहमदनगर सेंट्रल और रफिक मुंशी, अहमदनगर इन्टेग्रेटी, कोविड देखभाल केंद्र के उद्घाटन पर।



सफल उपचार के बाद 76-वर्षीय खरवास घर लौटते हुए।

में स्थानांतरित करेंगे। दो डॉक्टर और चार नर्स शिफ्ट में काम करते हैं।

सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज के बालक छात्रावास में अहमदनगर नगर निगम के सहयोग से स्थापित इस 150 बिस्तरों के केंद्र में स्टाफ क्वार्टर, पल्ल ऑक्सीमीटर, सीसीटीवी, लॉन्ड्री इकाई और एक बायोमेडिकल वेस्ट मैनेजमेंट खंड जैसी कई सुविधाएं हैं। सभी डॉक्टरों और चिकित्सा कर्मचारियों को पीपीई किटें प्रदान की जाती हैं।

76 वर्षीय खरवास के लिए, जिन्हें हाल ही में छुट्टी दे दी गई है, यहाँ की सबसे दिलचस्प बात उनके बिस्तर के पास रखी गर्म पानी की केतली थी। बहुत बढ़िया है! बस एक बार बटन दबाने से पानी गरम हो जाता है, वह चुटकी लेते हुए कहते हैं कि क्लब के सदस्य भगवान का काम कर रहे हैं। ऐसे समय में जब हमारे परिवार के सदस्य हमारे साथ नहीं हो सकते, रोटेरियन सुनिश्चित कर रहे हैं कि हमें गर्म भोजन और आरामदायक नींद मिल सके। मैं उन्हें तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ।

केंद्र में ₹15 लाख की लागत से स्थापित रसोई से मरीजों को ताजा, गर्म, पोषण-युक्त भोजन परोसा जाता है। उन्हें आयुर्वेदिक दवाएं भी दी जाती हैं। रसोई को चालू रखने के लिए सभी क्लब धन और राशन दान करते हैं, जवारे कहते हैं। हाल ही में केंद्र ने रोगियों के साथ गणेश चतुर्थी और स्वतंत्रता दिवस मनाया। ■

आदिवासी विद्यार्थियों को मिला शीर्ष तकनीकी पेशेवरों से बातचीत करने का मौका

रशीदा भगत

एक बार फिर से यह साबित करते हुए कि रोटेरियन वास्तव में मकार्य करने वाले लोगफ होते है और भयानक आपदाओं से विचलित न होते हुए, एवं दो अध्यक्षीय थीम - 'रोटरी दुनिया को जोड़ती है' और 'रोटरी अवसर प्रदान करती है' - के मुताबिक चलते हुए रोटरी क्लब सिकंदराबाद वेस्ट रो ई मंडल 3150 और रोटरेक्ट क्लब BITS पिलानी, हैदराबाद कैंपस, के रोटेरियनों ने एक अनूठी परियोजना शुरू की।

चूँकि कोरोना महामारी ने दुनिया भर में अपना शिकंजा कस लिया है, इसलिए दूरदराज के ग्रामीण इलाकों के आदिवासी विद्यार्थियों के एक समूह को कौशल विकास प्रशिक्षण, सलाह और कैरियर मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए गुरुकुल शीर्षक नामक एक कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम के माध्यम से एक आभासी सौगात दी गई।

भविष्य की प्रौद्योगिकियों, जिसका ज्ञान युवा स्नातकों को शीर्ष तकनीकी कंपनियों में नौकरी पाने हेतु आवश्यक है, पर तीन घंटे की एक पावर-पैक कैरियर संगोष्ठी में फेसबुक, गूगल, आईबीएम, टीसीएस, पेप्सिको, टेक महिंद्रा, आदि जैसे कॉर्पोरेटों के वरिष्ठ कर्मियों ने साइबर जगत द्वारा प्रदान की जाने वाली अनंत संभावनाओं पर विद्यार्थियों से बात की, रोटरी क्लब सिकंदराबाद वेस्ट क्लब के अध्यक्ष एस. दिवाकर रेड्डी ने कहा।

उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी का उद्देश्य आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों तक इस तरह की वैश्विक कंपनियों के शीर्ष नेतृत्व की पहुंच प्रदान करना था। तेलंगाना ट्राइबल वेलफेयर रूरल डिग्री कॉलेज के विद्यार्थियों, "जो तेलंगाना राज्य के दूरस्थ इलाकों से आते हैं, के पास इस तरह की शीर्ष

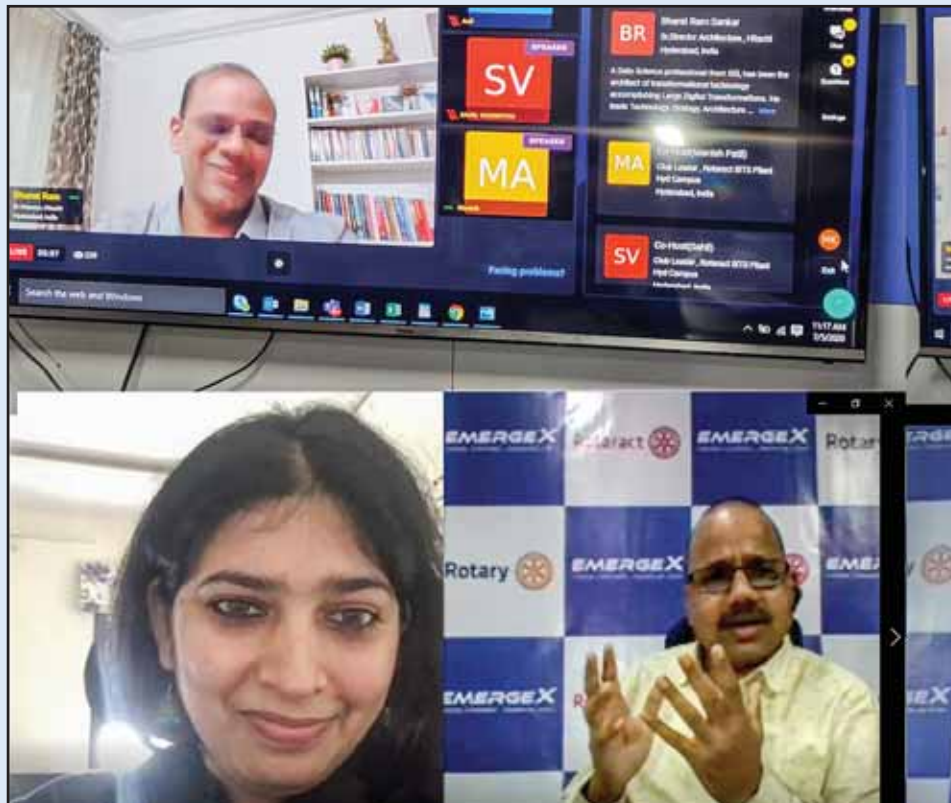
तकनीकी कंपनियों के आठ नेतृत्वकर्ताओं को सुनने और सवाल-जवाब सत्रों में उनके साथ बातचीत करने का इस तरह का पहला अवसर था। अधिकांश विद्यार्थी राज्य के जनजातीय क्षेत्रों से आने वाली पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वाले बच्चे हैं, और उन सभी का जीवन में कुछ बड़ा कर दिखाने का सपना है।"

कैंपस भर्ती

फेसबुक की एशिया पैसिफिक की नियुक्ति प्रमुख, अर्चना वडाला के साथ बातचीत में, क्लब के पूर्व

अध्यक्ष कमल जैन ने उनसे इस बारे में सवाल किए कि उम्मीदवारों में ऐसे कौन से आवश्यक गुण होने चाहिए जो उनके जैसे नियोजता फेसबुक जैसे संगठन के लिए साक्षात्कार लेते वक्त उम्मीदवारों में तलाश करते हैं।

उन्होंने कहा कि युवा स्नातकों के लिए आवश्यक है कि वे शुरुआत से ही अपनी प्राथमिकताओं को सही तरीके से परिभाषित करें और यह तय करें कि वे किस चीज़ को लेकर सबसे अधिक उत्साहित हैं। "आपके करियर का शुरुआती हिस्सा उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना महत्वपूर्ण यह तय करना



है कि आप किस चीज़ को लेकर उत्साहित हैं।” प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बेशक सभी नियोक्ता किसी विशेष काम के लिए आवश्यक प्रमुख कौशलों की तलाश करेंगे, “लेकिन कुछ अलग तरह के कौशल होना भी महत्वपूर्ण है, और संचार उन कौशलों का एक बड़ा हिस्सा है। वे आपके स्पष्ट उच्चारण और आपके सुनने के कौशल के साथ ही आपके आत्म-विश्वास को भी परखेंगे।”

चूंकि “हम एक वैश्विक वातावरण में काम करते हैं, इसलिए नियोक्ता विभिन्न पार कार्यात्मक कौशलों की भी तलाश करते हैं। कंपनियां रचनात्मकता और नवीनता, आपके द्वारा लाए गए विचारों और समस्या को सुलझाने की आपकी क्षमता को भी देखती हैं।” चूंकि आने वाले समय में बहुत सी नई तकनीकें आएंगी और वे अपने साथ नई तरह की विशिष्ट समस्याएं लाएंगी। इसलिए “कंपनियां ऐसे लोगों की तलाश कर रही हैं जो उन समस्याओं का समाधान कर सकें और उनको लेकर शिकायत न करें,” अर्चना ने आगे कहा।

भारत में गूगल की उद्योग प्रमुख, मयूरी कांगो, ने प्रतिभागियों से जीवन में सफल होने के लिए अपने जुनून का पालन करने का आग्रह किया।

उन्होंने अपने शुरुआती वर्षों के बारे में बात की, जब उन्होंने एमबीए करने हेतु अमेरिका जाने से पूर्व कुछ बॉलीवुड फिल्मों में अभिनय किया था और फिर कॉर्पोरेट जगत में अपना करियर शुरू किया।

साइबर सुरक्षा पर बात करते हुए, पेप्सिको के डिजिटल अनुभव के उप-निदेशक जयदीप लखने ने एक दिलचस्प सवाल पूछा: “हम सब अपने दैनिक जीवन में कितने तालों का सामना करते हैं... अपने घर, अपने बेडरूम, अलमारी, कार, ऑफिस, आदि। हम सभी हर दिन 5, 10 या उससे भी अधिक तालों का सामना करते हैं। लेकिन क्या हमारे पास उन सभी तालों के लिए एक ही चाबी होती है? नहीं। इसी तरह, हर दिन हम अपने बैंक खातों, कंप्यूटर लॉगिन और अन्य एप्लीकेशनों के लिए अलग-अलग यूजर आईडी का उपयोग करते हैं, लेकिन उनके लिए एक ही पासवर्ड नहीं रख सकते और न ही ऐसा करना चाहिए। बेशक, केवल एक पासवर्ड का होना बहुत अच्छा होता; लेकिन जिस क्षण आप ऐसा करते हैं, आप पर हमला होने और घुसपैठ होने का खतरा होता है, और आपकी पहचान कोई और छीन सकता है। इसलिए प्रमाणीकरण का अगला चरण शुरू किया गया।

प्रौद्योगिकी के भविष्य पर बात करते हुए, हिताची वेंतरा में आर्किटेक्चर के वरिष्ठ निदेशक, एक डेटा विज्ञान पेशेवर, भरत राम ने अत्याधुनिक समाधानों के महत्व के बारे में बात की, और बताया कि कैसे इस तरह की तकनीक का उपयोग करते हुए भारत के कुछ बेहतरीन स्मार्ट शहरों, जिसमें हैदराबाद भी शामिल है, का निर्माण किया गया। इसके अलावा उभरती तकनीकों का ज्ञान होना भी महत्वपूर्ण है; फॉर्च्यून 500 कंपनियों में से 52 प्रतिशत कंपनियां गायब हो गई हैं क्योंकि वे डिजिटल नहीं हो सकें। उन्होंने ब्लॉकबस्टर वीडियो का उदाहरण दिया, जो अमेरिका में किराए पर घरेलू फिल्मों और वीडियो गेम की सेवाएं प्रदान करते थे। नेटफ्लिक्स का दूर-दूर तक नाम और निशान भी नहीं था; लेकिन आज ब्लॉकबस्टर वीडियो गायब हो गया है और नेटफ्लिक्स फल-फूल रहा है।

दक्षिणावर्त ऊपर बाएं से: भरत राम, मयूरी कांगो, प्रवीणेंद्र राव, अनिल कुमार, एस कमल जैन और अर्पणा वडाला।

हम अपने बैंक खातों, कंप्यूटर लॉगिन और अन्य एप्लीकेशनों के लिए अलग-अलग यूजर आईडी का उपयोग करते हैं, लेकिन उनके लिए एक ही पासवर्ड नहीं रख सकते और न ही ऐसा करना चाहिए।

वक्ताओं से आदिवासी संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए सवालों पर, क्लब के पूर्व अध्यक्ष और मंडल प्रशिक्षक अनिल कुमार ने कहा, “दिलचस्प बात यह है कि उनमें से अधिकांश प्रश्न कैम्पस प्लेसमेंट और भर्ती से संबंधित थे। 350 प्रतिभागियों में से लगभग 80 आदिवासी कॉलेज के थे और बाकी अन्य सिंगापुर, मुंबई, दिल्ली और बेशक तेलंगाना राज्य के दूर दराज के छोटे-छोटे शहरों और गांवों से थे। और प्रतिभागी यह जानने के लिए उत्सुक थे कि क्या ये कॉर्पोरेट, कैम्पस प्लेसमेंट हेतु उनके संस्थानों में आएंगे।”

संगोष्ठी के दौरान, विद्यार्थी इस तरह के करियर काउंसलिंग और मार्गदर्शन सत्रों को जारी रखने को लेकर बहुत उत्सुक थे। इसलिए क्लब ने मार्गदर्शकों का एक समूह बनाने का फैसला किया है - उनमें से लगभग 10 लोग ऐसे होंगे जो क्लब की 45 लोगों की सदस्यता में से होंगे और कानून, चिकित्सा, वित्त, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े होंगे। “हम इस कॉलेज के साथ वीडियो संपर्क स्थापित करेंगे और विद्यार्थियों के लिए हर हफ्ते विभिन्न विषयों एवं व्यवसायों पर एक मार्गदर्शन सत्र आयोजित करेंगे,” कुमार ने कहा।

इस संगोष्ठी का एक और सकारात्मक परिणाम वह मांग थी जिसकी वजह से क्लब हर महीने इस तरह की आभासी बैठकें आयोजित करता है। “और हमने हर महीने ऐसा करने का फैसला किया है। यह संगोष्ठी जुलाई में आयोजित की गई थी; अगस्त में हमने रोबोटिक्स और प्रस्तुतिकरण तैयार करने की कला पर एक संगोष्ठी आयोजित की थी। सितंबर में, सामाजिक मीडिया की ताकत पर संगोष्ठी आयोजित की गई थी और अक्टूबर में यह संगोष्ठी क्लाउड तकनीक और कैम्पस प्लेसमेंट को समझने पर होगी।” ■

RI मंडल 3250 ने दुनिया के प्रत्येक रोटेरियन के लिए एक पेड़ लगाने का किया संकल्प

किरण ज़ेहरा



पौधे, संरक्षण, वनों का प्रबंधन और उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले लाभों को समझें। इस तरह हम अधिक टिकाऊ भविष्य बना सकते हैं।” इन शब्दों के साथ RIPE शेखर मेहता ने रोई मंडल 3250 की ज़ूम मीटिंग के दौरान 1.2 मिलियन पेड़ लगाने की पहल वसुंधरा को लॉन्च किया, जो दुनिया भर में हर रोटेरियन को एक पेड़ लगाने हेतु समर्पित है। यह परियोजना रोटरी क्लब जमशेदपुर पश्चिम द्वारा सुझाई गई है। क्योंकि क्लब 12 वर्षों से झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में आदिवासी समुदायों के साथ काम कर रहा है, इसलिए वृक्षारोपण अभियान हेतु ग्राम पंचायतों से संपर्क करना आसान रहा।

जब आप धरती माँ की सेवा कर रहे होते हैं तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप रोटेरियन हैं, शेर हैं या राउंडटेबलर हैं।

रवि शंकर दकोजू

पूर्व अध्यक्ष रोटरी क्लब
बैंगलोर ऑर्चर्ड्स
रोई मंडल 3190



चांदपुर गाँव में वृक्षारोपण अभियान के शुभारंभ पर (दाएं से पाँचवे) डीजी राजन गंडोत्रा।

DG राजन गंडोत्रा ने बताया कि यह पहल पूरी तरह से योजनाबद्ध है और झारखंड के शहरी क्षेत्रों को भी कवर करती है। उन्होंने डॉ. अमित मुखर्जी, अल्पना शाह और अमिताभ बख्शी को तीन चरणों - सामूहिक ग्रामीण वृक्षारोपण, एक पेड़ के साथ बधाई देना और शहरी वृक्षारोपण अभियान के प्रयासों के लिए बधाई दी। “हमारा प्राथमिक लक्ष्य गाँव तथा शहरी भूमि के लिए उपयोगी व लाभकारी संसाधनों की स्थापना करना है जिससे बदले में जैव विविधता को मदद मिले और बहुमूल्य पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं प्रदान करें।”

रो ई मंडल कमल संघवी ने अपने जिले को एक महान परियोजना की अवधारणा शुरू

करने हेतु बधाई दी। उन्होंने मिटिंग में मौजूद रो ई मंडल फ्रांसेस्को अरेजो (यूपस), PRID गीता मानेक (केन्या), रैफ़ी गार्सिया III (फिलीपींस) को अपने क्षेत्रों में इसे दोहराने हेतु प्रोत्साहित किया। उन्होंने Grow-Trees.com के साथ साझेदारी को सुविधाजनक बनाने हेतु मेजबान क्लब की अध्यक्ष अंजनी निधि और उनके पति बनाश्री की सराहना की।

PRIP गैरी हुआंग और ट्रस्टी गुलाम वाहनवती ने अपने नाम पर पौधा लगाने हेतु मंडल को धन्यवाद दिया।

Grow-trees.com पूरे कार्यक्रम की निगरानी करेगा तथा इसमें लगे ग्रामीणों को मजदूरी को भुगतान करेगा, जबकि रोटरी गांव तथा नागरिक निकायों में भूमि के

हमारा प्राथमिक लक्ष्य गाँव तथा शहरी भूमि के लिए उपयोगी व लाभकारी संसाधनों की स्थापना करना है जिससे बदले में जैव विविधता को मदद मिले और बहुमूल्य पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं प्रदान करें।

राजन गंडोत्रा

रो ई मंडल 3250

बड़े हिस्से की पहचान करेगा। निधि ने कहा, “हमारी योजना सुंदरवन को फिर से हरा-भरा करने की है, क्योंकि यह हाल ही में आए चक्रवात के कारण बर्बाद हो गया है।”

गंडोत्रा ने बताया कि जमशेदपुर के पास चांदपुर, मुर्गुट और हरिसुंदरपुर गाँवों में 50,000 पेड़ लगाए गए हैं और झारखंड के शहरों को हरा-भरा करने हेतु टाटा स्टील के साथ साझेदारी की जा रही है।

रो ई मंडल 3190 रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्केड्स के पिछले अध्यक्ष रविशंकर दकोजू ने कहा, “1.2 मिलियन का लक्ष्य उल्लेखनीय है। इसे प्राप्त करने का सबसे आसान तरीका अन्य संगठनों के साथ शामिल होना है। जब आप धरती माँ की सेवा कर रहे होते हैं तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप रोटेरियन हैं, शेर हैं या राउंडटेबलर हैं।” ■



किशोर कुमार - एक दिलचस्प योडलर

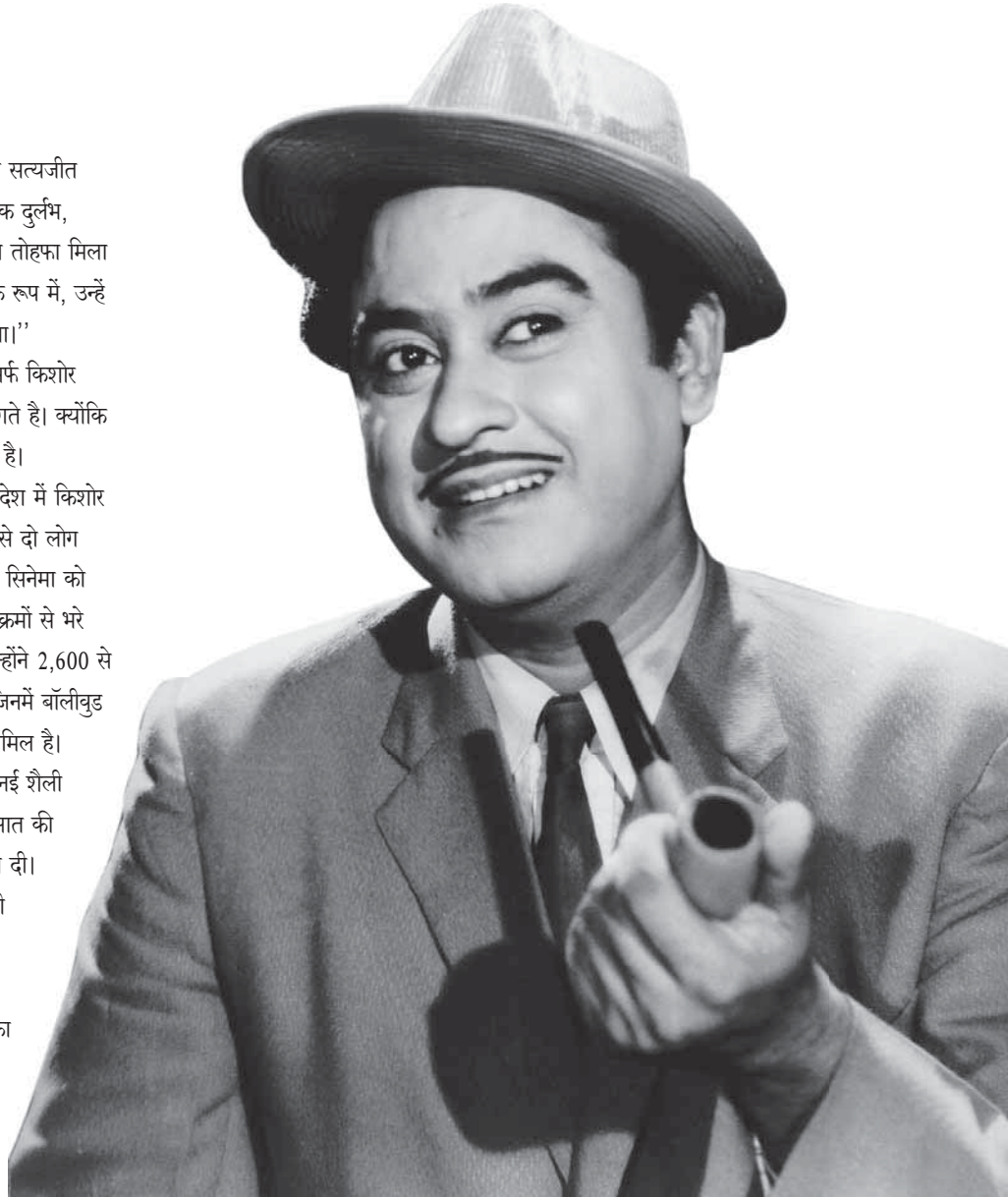
एस आर मधु

किशोर कुमार के बारे में सत्यजीत रे ने कहा, “उन्हें एक दुर्लभ, धाराप्रवाह और मधुर आवाज का तोहफा मिला था। लोकप्रिय गीतों के गायक के रूप में, उन्हें टक्कर देने वाला कोई और नहीं था।”

अमिताभ बच्चन ने कहा, सिर्फ किशोर शब्द सुनते ही आप मुस्कुराने लगते हैं। क्योंकि उनका नाम मनोरंजन का प्रतीक है।

रे और बच्चन भारत और विदेश में किशोर कुमार के लाखों चाहने वालों में से दो लोग थे, जिनकी रचनात्मक प्रतिभा ने सिनेमा को कई तरह से समृद्ध बनाया। कार्यक्रमों से भरे अपने 42 साल के करियर में उन्होंने 2,600 से अधिक हिंदी फिल्मों में गीत गाए जिनमें बॉलीवुड के कुछ सबसे प्यारे नगमों में भी शामिल हैं। उन्होंने बॉलीवुड संगीत को एक नई शैली दी, योडलिंग की कला की शुरुआत की और गाना गाने के बजाए प्रस्तुति दी। उनकी बहुमुखी प्रतिभा अद्भुत थी (उन्होंने विभिन्न रूप से गायक, संगीतकार, अभिनेता, गीतकार, संपादक और निर्देशक की भूमिका निभाई)।

लेकिन संगीत उनका पहला प्यार था। “अभिनय नकली होता है, संगीत दिल





किशोर कुमार और उनकी पत्नी लीना चंदावरकर।

से आता है,” उन्होंने प्रसिद्ध टिप्पणी की। उन्होंने संगीत की शिक्षा नहीं ली थी, लेकिन उनका जादू प्रशिक्षण या तकनीक से उत्पन्न हुआ नहीं था। वह सब दिल से, भाव से उत्पन्न हुआ था। लता मंगेशकर, जिन्होंने किशोर को अपने पसंदीदा बॉलीवुड गायक के रूप में वर्णित किया, ने टिप्पणी की वो भगवान है जो उनके संगीत को निर्देशित करते हैं। मचा डे ने एक बार कहा था सभी पार्श्व गायकों में से किशोर की आवाज सबसे अच्छी थी। उन्होंने गायन को बहुत सहज बना दिया था। उनके पास कोई शास्त्रीय प्रशिक्षण नहीं था, लेकिन वह अपनी अद्भुत संगीत वृत्ति और प्राकृतिक गायन की विशिष्ट योग्यता से मुझे मात दे सकते थे।

ऐसा कहा जाता है कि किशोर की आवाज में महिला की आवाज वाली मिठास और पुरुष की आवाज वाली ताकत, गहराई और समृद्धि का मिश्रण था। दर्द और उदासी भरे गीतों में यह मिठास प्रत्यक्ष रूप से नज़र आती है - जैसे कि *मेरा जीवन कोरा कागज़ (कोरा कागज़ से); कोई हमदम ना रहा (झुमरू); जिन्दगी*

के सफ़र में गुज़र जाते हैं (आप की कसम); दुखी मन मेरे (फंटूश); मेरी भीगी भीगी सी (अनामिका)।

हिंदी सिनेमा के विश्वकोश, गीतकार जावेद अख्तर का कहना है कि जब भी किशोर किसी पुरुष या महिला गायक के साथ युगल गीत गाते थे, तो वह बस सारा ध्यान अपनी ओर खींच लेते थे। यदि किसी गीत के दो अलग-अलग संस्करण होते थे, तो किशोर का संस्करण ही प्रसिद्ध होता था। 1976 में आई फिल्म *महबूबा* के प्यार में निराशा और उदासी भरे गीत - *मेरे नैना सावन भादों* - को ही ले लीजिए जो आर डी बर्मन द्वारा रचित है। लता और किशोर ने फिल्म के विभिन्न चरणों में इस

गीत को अलग-अलग गाया है। लता हमेशा की तरह सुरिली थी; लेकिन किशोर की प्रस्तुति भावनात्मक रूप से झकझोर देने वाली थी, आपने खुद उस दर्द और निराशा को महसूस किया।

किशोर को बचपन से ही गाने का शौक था और के एल सहगल उनके आदर्श थे। लेकिन पहले उनकी आवाज़ तीखी और कर्कश थी। जब किशोर 10 साल के थे, तो एक बार वह रसोई की ओर भागे, जहाँ उनकी माँ सब्जियाँ काट रही थी - और अनियंत्रित होकर चाकू पर जा गिरे। उनके पैर का एक अंगूठा कट गया और दर्द बहुत ज्यादा हो रहा था। उन दिनों चिकित्सा सुविधाएं कम थी। “किशोर महीने भर तक दिन में कई घंटे बिना रुके रोते रहते थे, भाई अशोक कुमार कहते हैं।” उन्होंने आगे कहा, “बिना रुके लगातार रोने से उनका गला साफ हो गया और उनकी आवाज मधुर हो गई।”

किशोर 18 साल की उम्र में सहगल से मिलने (पर कभी मिल नहीं पाए) और फिल्मों में गाना गाने के लिए बॉम्बे चले गए। उनका

अभिनय नकली होता है, संगीत दिल से आता है।
- किशोर कुमार



लिया। उन्होंने तुरंत ही दो गानों के लिए रफी की जगह किशोर को लिया, जिन्होंने वाकई में धमाल मचा दिया - *मेरे सपनों की रानी*, जिसमें राजेश एक जीप में बैठकर ट्रेन में बैठी शर्मिला टैगोर के लिए प्रेमगीत गाते हैं; और *रूप तेरा मस्ताना* में आग के सामने फिल्माया गया एक जोशीला कामुक गीत जिसमें यह मुख्य जोड़ी तूफान से बचते हुए शरण लेती है। इस गीत ने हिंदी सिनेमा में कामुकता और काम वासना को पुनः परिभाषित किया।

राजेश खन्ना और किशोर दोनों ही *आराधना* के बाद सफलता की सीढ़ी चढ़ते गए। राजेश ने 1969 और 1972 के बीच लगातार 15 हिट फिल्में दी, ऐसा आज हो पाना आश्चर्य की बात है। किशोर ने उनके लिए 245 गाने गाए। यह कहा जाता था कि राजेश से किशोर के गाने अलग कर दिए जाएं तो वह कोई सुपरस्टार नहीं रहेंगे। आर डी बर्मन के जादू ने दोनों सुपरस्टारों की सफलता में चार चांद लगा दिए।

1970 के दशक के मध्य के बाद राजेश का जादू फीका पड़ गया, और *एंग्री यंग मैन*, अमिताभ बच्चन, नए सुपरस्टार बन गए। लेकिन किशोर का विजयी सफर जारी रहा - उन्होंने अमिताभ के लिए 131 गानों में आवाज दी, जिसमें कई हिट गाने (जैसे फिल्म *अमर अकबर एंथनी*, *डॉन*, *मुकद्दर का सिकंदर*, *खून पसीना*, *कसमें वादे*, आदि में) शामिल हैं। किशोर की आवाज़ ने 1987 में उनकी मृत्यु होने तक बॉलीवुड पर राज किया, जिससे एक ऐसे उद्योग पर उनका प्रभुत्व सुनिश्चित हुआ जिसने उन्हें पहले बुरी तरह से गलत समझा था।

उन्हें सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक के रूप में आठ फिल्मफेयर पुरस्कार मिले (सभी 1969 और 1987 के बीच) - एक रिकॉर्ड। मोहम्मद रफी ने केवल छह जीते थे।

यहाँ मेरी पसंदीदा किशोर के गानों की एक छोटी सूची है:

- *ये शम मस्तानी - कटि पतंग, 1971*

उन्हें एक दुर्लभ, धाराप्रवाह और मधुर आवाज का तोहफा मिला था।
- फिल्म निर्देशक **सत्यजित रे**

- *चिंगारी कोई भड़के - अमर प्रेम, 1971*
- *ओ मेरी शर्मिली - शर्मिली, 1971*
- *तेरे मेरे मिलन की ये रैना - अभिमान, 1972*
- *मुसाफिर हूं यारों - परिचय 1972*
- *इस मोद से जात है - आंधी, 1975*
- *ओ माझी से - खुशबू, 1975*
- *कभी अलविदा ना कहना - चाल्टे चल्ते, 1976*
- *हमे तुम से प्यार कितना - कुदरत, 1981*

(शीर्ष बाएं से दक्षिणावर्त) मन्ना डे, आर डी बर्मन और मधुबाला के साथ किशोर कुमार।





वो जिन्होंने उन्हें प्रभावित किया

किशोर हिंदी सिनेमा के
पहले योडलर थे। एस डी बर्मन
ने उन्हें संगीत की अपनी शैली

वह न कभी धूपपान करते थे, न दारू पीते थे न सामाजिक होते थे, लेकिन वह खाने के बहुत शौकीन थे। उनकी भतीजी प्रीति गांगुली (अशोक कुमार की बेटी) ने खुलासा किया कि वह एक बंगाली मटन करी, *मंगशोर झोल* के बेहद शौकीन थे। उन्हें फूलगोभी भी बहुत पसंद थी। वह कहते थे, “मुझे तली हुई गोभी के टीले से ढक दो। मैं उनके नीचे रहकर गोभी खाता रहूँगा।”

वह एक विद्रोही, एक रिवाज़ तोड़ने वाले, एक एकाकी थे। उनकी विलक्षणता की कहानियाँ किंवदंती है। उनके दरवाजे के बाहर एक साइनबोर्ड पर लिखा था 'किशोर से सावधान।' वह हॉरर फिल्मों के शौकीन थे और उनके पास इस शैली के सैकड़ों वीडियो कैसेटों का संग्रह था। उन्होंने अपने बगीचे में लगे पेड़ों को अपने एकमात्र दोस्तों के रूप में वर्णित किया, उन्हें नाम दिया, और उनसे बात की। वह विशेष रूप से तुरंत भुगतान किया जाना पसंद करते थे। एक अवसर पर, एक निर्माता ने उन्हें केवल आधी राशि का भुगतान किया। किशोर सेट पर अपने सिर और चेहरे के मुंडन के साथ दिखाई दिए। उन्होंने कहा “आधा पैसा, आधा मेकअप।”

कंजूस होने के लिए प्रसिद्ध होने के बावजूद भी, किशोर कुमार ने सत्यजीत रे की एक ऋण देकर मदद की जब उनकी



मैंने उनकी योडलिंग को प्रोत्साहित किया। यह पहाड़ों के अकेलेपन में एकांत की एक पुकार, रोमांस की एक पुकार की तरह लग रहा था।

– अभिनेता **देव आनन्द**

1955 की महान फिल्म *पठेर पांचाली* एक संकटपूर्ण समय में अटक गई थी, और उन्होंने रे की 1964 की फिल्म *चारुलता* के लिए मुफ्त में एक गीत गाया। जब उस्ताद ने देव शुल्क के बारे में पूछा, तो गायक ने रे के पैर छू लिए। किशोर ने रे की 1984 की फिल्म *घरे बँरें* के लिए फिर से बिना कोई शुल्क लिए तीन गाने गाए।

आपातकालीन वर्षों के दौरान, जब किशोर से एक सरकारी कार्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए कहा गया तो उन्होंने साफ इंकार करते हुए 'ना' कह दिया। परिणामस्वरूप: ऑल

इंडिया रेडियो ने उनके गीतों पर प्रतिबंध लगा दिया। उन्हें कई बार आयकर छापे भी झेलने पड़े, और अपने कर बकाया का भुगतान करने के लिए कई स्टेज शो करने पड़े। उन्होंने एक बार एक साक्षात्कार में कहा था कि एक दिन, कुछ लोगों ने उनके दरवाजे पर यह कहते हुए दस्तक दी कि “हम आयकर विभाग से हैं। आपके कुत्ते हमारा पीछा कर रहे हैं।” किशोर ने जवाब दिया “चिंता न करें। मैंने अपने कुत्तों को आयकर अधिकारियों को न काटने के सख्त निर्देश दिए हैं।”

संवाद रिहर्सल के दौरान किशोर अक्सर मज़ाक मस्ती



(*शर्ष बाएं से दक्षिणावर्त*) किशोर कुमार के साथ राजेश खन्ना, सत्यजित रे आर सुनील दत्त।

करते थे। उदाहरण के लिए, वह मीना कुमारी से वो बात बोल देते थे जो उन्हें किसी अन्य फिल्म में बीना राय से कहना होता था। वह नायिका के चेहरे की हैरानी देख आनंदित होते थे और ठहाका लगाकर हँसते थे।

1987 में किशोर का निधन हो गया, तब वह सिर्फ 58 वर्ष के थे। अशोक कुमार के जन्मदिन पर उनकी मृत्यु हुई, और इस अनुभवी अभिनेता ने फिर कभी अपना जन्मदिन नहीं मनाया। किशोर की मृत्यु के बाद उनकी प्रतिष्ठा और रहस्यात्मकता बड़े पैमाने पर बढ़ गई, और वह

बस अपने प्रसिद्ध गीत *चलते चलते: कभी अलविदा न कहना* की तरह ही जीवित है।

संपादक की पसंद:

- मेरे महबूब क़यामत होगी
- ये रीतें यह मौसम नदी का किनारा
- नीले नीले अम्बर पर, चंद जाब आये
- हाल कैसा हैं जनाब का।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा





रोटरी परियोजनाओं का एक Super Six

ए एल चोक्कालिंगम

केमिस्ट, रोटरी क्लब पुदुकोट्टई, रो ई मंडल 3000

रो ई मंडल 3000 के आठ राजस्व मंडलों में फैले सभी 130 क्लब Super 66 को कार्यान्वित करने में व्यस्त है, जो क्लब और क्षेत्रीय स्तरों पर छह महीनों में छह विशिष्ट कार्यक्रमों को करने की एक महत्वपूर्ण परियोजना है। अगस्त से फरवरी (जनवरी को छोड़कर), वर्षा जल संचयन, एक दिवसीय RYLA सम्मेलन, स्तनपान कराने वाली माताओं को स्वास्थ्य किटों का वितरण, व्यावसायिक प्रशिक्षण और पुरस्कार, चिकित्सा शिविरों और सार्वजनिक स्थानों पर रोटरी बोर्डों की स्थापना जैसी अनेक परियोजनाएं क्लबों द्वारा प्रथम शनिवार को की जा रही हैं। “घरों और सार्वजनिक भवनों में RWH इकाइयां स्थापित करने में लगभग 1,000 रोटेरियन शामिल हैं। क्षेत्रीय स्तर पर, सहायक गवर्नर मियावाकी सामाजिक वन, हैप्पी स्कूल, पोलियो जागरूकता बसों का शुभारंभ (कम से कम 10 वाहन), रोटरेक्टर्स के लिए नौकरी मेले, हृदय संबंधी शिविर और सड़क सुरक्षा एवं यातायात जागरूकता सप्ताह जैसी परियोजनाओं को करने में क्लब का नेतृत्व करेंगे,” चोक्कालिंगम कहते हैं।

अप्रैल से सितंबर तक, मंडल के क्लबों ने ₹3 करोड़ की लागत से कोविड-राहत कार्य किए। इसमें मास्क, सैनिटाइजर, पीपीई किटें, किराने की किटें, भोजन के पैकेट वितरित करना और अस्पतालों को उपकरण वितरित करना शामिल है। एक विशाल स्तर पर, मंडल ₹2.94 करोड़ की लागत से 11 वैश्विक अनुदान परियोजनाओं को लागू कर रहा है और कोविड राहत कार्य के लिए इसने आपदा राहत कोष (₹18.75 लाख) का उपयोग किया।

मदुरई में हर साल जनवरी में आयोजित होने वाले कूडल नामक डिस्कॉन को अप्रैल या मई तक स्थगित किया जा सकता है।

डीजी का सदस्यता में नौ प्रतिशत की वृद्धि, जो जुलाई में 5,127 थी, और महिला सदस्यता में 15 प्रतिशत की वृद्धि करने का लक्ष्य है। टीआरएफ में देने के लिए उनका लक्ष्य 1 मिलियन डॉलर है। वे कहते हैं, “रोटेरियनों को जनता के लिए अनुकरणीय होना चाहिए और ऐसा उनकी परियोजनाओं को ज्यादा से ज्यादा प्रदर्शित करके किया जा सकता है।”

आपके गवर्नरों से मिलिए

वी मुत्तुकुमारण

उनका मंत्र है रोटरी को लोगों तक पहुँचाना

शब्बीर शकीर

फोटोग्राफी उपकरण, रोटरी क्लब नागपुर, रो ई मंडल 3030



कोविड महामारी के अनिश्चित समय को देखते हुए सदस्यता अवरोधन उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। लेकिन शब्बीर शकीर को सदस्यता संख्या में न्यूनतम 10 प्रतिशत की वृद्धि करने का भरोसा है, उनके मंडल में यह संख्या 1 जुलाई तक 5,092 थी। “हमें रोटरी को बड़े पैमाने पर जनता के बीच ले जाना होगा। मेरा यह मानना है कि गैर-रोटेरियनों को रोटरी परियोजनाओं द्वारा किए जा रहे काम दिखाना चाहिए। इससे उनमें रोटरी के लिए रुचि पैदा होगी, और सदस्यता वृद्धि में मदद मिलेगी,” वह समझाते हैं।

मंडल ने 32,000 सरकारी शिक्षकों को डिजिटल कक्षाएं आयोजित करने में प्रशिक्षित करने के लिए छह दिवसीय ऑनलाइन कार्यशालाएं आयोजित की।

इसके रोटेरियनों ने वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक ऐप विकसित करने हेतु इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, नागपुर चैप्टर से भी हाथ मिलाया है। “जहाँ बुजुर्गों की चिकित्सा जरूरतों को IMA द्वारा पूरा किया जाएगा, वहीं क्लबों द्वारा गैर-चिकित्सीय आवश्यकताओं की आपूर्ति की जाएगी,” शकीर कहते हैं।

इसके अलावा, IMA के साथ साझेदारी में ये क्लब कोविड रोगियों के उपचार हेतु प्लाज्मा दान मुहिम चलाएंगे। वर्तमान में, यह मंडल कोविड राहत कार्य के लिए 400,000 डॉलर की लागत से 11 वैश्विक अनुदान परियोजनाओं का क्रियान्वयन कर रहा है। इसके अलावा, क्लबों ने पूरे मंडल में ₹50 लाख की लागत से सैनिटाइज़र, मास्क, पीपीई किटें एवं अन्य कोविड सहायता सामग्रियाँ वितरित की है।

एक बार स्कूलों के खुलने के बाद, “हम सरकारी स्कूलों में 200 डिजिटल कक्षाएं स्थापित करेंगे।” किसानों के संकट और आत्महत्या के लिए जाने जाने वाले इस विदर्भ क्षेत्र में किसानों की मुश्किलें कम करने के लिए, “जल प्रबंधन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है जिसमें नहरों की खुदाई करना और साल में दो बार फसल उगाने की सुविधा प्रदान करना शामिल है।” टीआरएफ में देने पर, शकीर का लक्ष्य 400,000 डॉलर का है, जिसमें से अब तक 60,000 डॉलर इकट्ठा किए जा चुके हैं।

रोटरी में युवाओं को लाना उनकी प्राथमिकता है

विजय अरोरा

शिक्षा प्रबंधक, रोटरी क्लब फ़िरोज़पुर कैन्टोन्मन्ट, रो ई मंडल 3090



एक सेवानिवृत्त कॉलेज प्रशासक के रूप में, वह रोटरी में युवाओं को शामिल करने को लेकर उत्साहित है। “मैं अपने कार्यक्रमाल के दौरान अधिक से अधिक इंटरैक्ट और रोटरेक्ट क्लब खोलना चाहता हूँ,” विजय अरोरा कहते हैं। उन्होंने चार इंटरैक्ट और छह रोटरेक्ट क्लबों को अधिकृत किया है, और महिलाओं की सदस्यता को तीन प्रतिशत से बढ़ाकर आठ प्रतिशत कर दिया है। जुलाई के बाद से शामिल हुए 200 नए रोटेरियनों में से अस्सी प्रतिशत 40 वर्ष से कम उम्र के हैं।

कोविड लॉकडाउन और बैठकों को जूम पर आयोजित करने के बावजूद, “मुझे उम्मीद है कि इस वर्ष के अंत तक सदस्यता 2,215 से बढ़कर 3,000 तक पहुँच जाएगी और उनमें से 45 प्रतिशत 40 वर्ष से कम उम्र के होंगे।”

सितंबर तक, उनके मंडल ने ₹5 करोड़ की लागत वाली कोविड-राहत परियोजनाएं की हैं। अरोरा की टीआरएफ के लिए 100,000 डॉलर जुटाने की योजना है और उन्हें पहले ही सदस्यों से 35,000 डॉलर की प्रतिबद्धता प्राप्त हो चुकी है।

अब तक 25 सरकारी प्राथमिक और उच्च विद्यालयों की पहचान करके वह हैप्पी स्कूल परियोजना को बड़े पैमाने पर ले रहे हैं। पहले से ही 10-15 क्लबों ने स्कूलों में जल, स्वच्छता और साक्षरता परियोजनाओं को निष्पादित करना शुरू कर दिया है।

रोटरेक्टर हमारे मंडल एवेन्यू टीम का हिस्सा हैं

सुनील मेहरा

पैकेजिंग निर्माता, रोटरी क्लब बॉम्बे पीयर, रो ई मंडल 3141



उन्होंने मंडल की चिन्हक परियोजनाओं के रूप में कार्यान्वित होने वाली विशाल परियोजनाओं को शुरू करने की एक पहल की है। प्रोजेक्ट अन्नपूर्णा के माध्यम से हमने भोजन के 700,000 से अधिक पैकेट गरीब परिवारों को दिए हैं। यह जानने के बाद कि पालघर, एक दूरस्थ गाँव, में 70 आदिवासी परिवार, घास खा रहे हैं, हम उनके पास पहुँचे और उन्हें मासिक राशन और भोजन दिया,” सुनील मेहरा कहते हैं।

प्रोजेक्ट पोषक के तहत, आदिवासी गांवों में 750 कुपोषित बच्चों को वर्ष भर के लिए प्रोटीन आधारित भोजन के पैकेट प्रदान किए जा रहे हैं और आशियाना परियोजना पहले चरण में 27,000 आदिवासी परिवारों में से ऐसे 5,000 को पक्के घर प्रदान करेगी जिनके सिर पर कोई छत नहीं है। प्रत्येक घर की लागत ₹2,50,000 होगी।

गिवर्स गेन नामक एक नवीन पहल रोटेरियनों को उनके अप्रयुक्त घरेलू सामान जैसे फर्नीचर, इलेक्ट्रॉनिक, टिकाऊ सामान, प्लास्टिक और रसायनों को एक कंपनी को पहुंचाने के बदले में पैसे लेने हेतु सक्षम बनाती है। “इस प्रकार एकत्रित की गई राशि टीआरएफ को सदस्य खाते के अंतर्गत दी जाएगी।” मंडल ने एक सीएसआर वेबिनार आयोजित किया जिसमें

5,000 कंपनियों ने कुछ रोटरी परियोजनाओं की झलक देखी।

ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचकर, मंडल की पालघर में 40 रोधन बांध बनाने की योजना है जिससे कि कृषि पर आश्रित 25,000 परिवार लाभान्वित होंगे।

जुलाई के बाद से छह नए रोटरेक्टर क्लबों का गठन किया गया और परियोजना के निष्पादन के लिए रोटरेक्टरों को मंडल एवेन्यू दलों में शामिल किया गया। वर्तमान में, मंडल में 111 रोटरेक्टर क्लब और 4,800 रोटरेक्टर हैं।

रोटरेक्टरों के साथ संबंध मजबूत करने के लिए, हमने “उनके लिए उद्यमिता पर तीन माह का एक ऑनलाइन कोर्स शुरू किया है और इस कार्यक्रम के लिए 300 युवाओं ने दाखिला लिया है।”

सदस्यता में 10 प्रतिशत की वृद्धि करने की उम्मीद रखते हुए, मेहरा कहते हैं, “हमने अब तक 460 नए सदस्य शामिल किए हैं, जिससे हमारी सदस्यता संख्या बढ़कर 5,300 हो गई है।” और वर्ष के अंत तक महिलाओं की सदस्यता 28-30 प्रतिशत से बढ़कर 40 प्रतिशत होने की उम्मीद है। मेहरा ने इस साल टीआरएफ में देने के लिए 3.5 मिलियन डॉलर का लक्ष्य रखा है।

हम दुनिया का सर्वश्रेष्ठ रो ई मंडल बनना चाहते हैं

बी एल नागेंद्र प्रसाद

रियल्टर, रोटरी क्लब बैंगलोर पीन्या, रो ई मंडल 3190



इस मंडल को सदस्यता और टीआरएफ में देने के मामले में दुनिया में नंबर 1 बनाने की पूरी कोशिश की जा रही है, नागेंद्र प्रसाद कहते हैं। वह इस साल 2,500 नए सदस्य और 25 नए क्लब जोड़ना चाहते हैं। “हमने अब तक 1,100 नए सदस्य, 10 नए क्लब और तीन सैटेलाइट क्लब जोड़े हैं।” जुलाई के बाद से वृक्षारोपण एक चालू परियोजना है और इस वर्ष “हम पिछले वर्ष के 28 लाख पौधे लगाने के आंकड़े को पार करने की उम्मीद करते हैं,” वह कहते हैं। KSRTC ने एक बस दान की है ताकि उसे एक विशेष एम्बुलेंस में परिवर्तित करके उससे राज्य भर में कोविड परीक्षण किया जा सके। मफहम ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल लाइब्रेरी और क्लिनिक संचालित करने हेतु 10 और बसें खरीदने के लिए KSRTC से बातचीत कर रहे हैं, प्रसाद कहते हैं। ₹1.24 करोड़ के एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से बीजीएस अस्पताल में एक उच्च तकनीक वाला ब्लड बैंक स्थापित किया जाएगा। कर्नाटक लघु

उद्योग संघ के साथ साझेदारी में, मंडल जरूरतमंद परिवारों को सशक्त बनाने के लिए सिलाई और मशीन उपकरणों जैसे विभिन्न क्षेत्रों में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करेगा। “हम बेरोजगार युवाओं को ऑनलाइन कौशल विकास पाठ्यक्रम प्रदान करने के लिए लघु उद्योग भारती के साथ भी एक ऐसा ही समझौता करेंगे। यह जरूरतमंद लोगों के लिए एक निःशुल्क कोर्स होगा,” वह कहते हैं। मंडल ने अब तक पांच संभावित AKS सदस्यों की पहचान की है और “हमने TRF में देने के लिए 5 मिलियन डॉलर का लक्ष्य रखा है। रविशंकर दकोजू, जिन्होंने टीआरएफ को ₹100 करोड़ दान किए, हमें संस्थान में और अधिक दान करने हेतु प्रेरित कर रहे हैं।”

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रोटरी ने सेलम में लगाया मियावाकी वन

टीम रोटरी न्यूज

सामाजिक वानिकी को प्रोत्साहित करते हुए, सेलम, रो ई मंडल 2982, तमिलनाडु में 30 रोटरी क्लबों ने एक नगर पंचायत के तहत आवासीय क्षेत्र के बीच एक एकड़ में मियावाकी वन बनाने हेतु 15,000 से अधिक पौधे लगाए हैं।

आर मंगेश्वर, अध्यक्ष, रोटरी क्लब सेलम साउथ ने कहा, “₹2 लाख की लागत वाली मियावाकी परियोजना इस क्षेत्र में पानी के स्तर को बढ़ाएगी, जिससे 200 परिवारों को भूजल का सुरक्षित स्रोत प्राप्त होगा।” परियोजना को सेलम

वन विभाग, कन्ननकुरीची नगर पंचायत और G2 नर्सरी के समर्थन से कार्यान्वित किया गया है।

मियावाकी एक तकनीक है जो जापानी वनस्पतिशास्त्री अकीरा मियावाकी द्वारा शुरू की गई है, जो घने, देशी जंगलों को बनाने में मदद करती है। इसमें एक ही क्षेत्र में दर्जनों देशी प्रजातियों का रोपण किया जाता है, और पहले तीन वर्षों के बाद इसे रखरखाव की आवश्यकता नहीं रहती है।

महानिदेशक के एस वेंकटेशन ने परियोजना का उद्घाटन आर मुरुगन, प्रभागीय वनाधिकारी, सेलम और एस अरुमुगननार, कार्यकारी अधिकारी,

नगर पंचायत की उपस्थिति में किया। उद्घाटन रोटेरियन थोकापिया अरासु द्वारा आयोजित किया गया था, जिसे ग्रीन क्रूसेडर के रूप में जाना जाता है, और इस दौरान सी. बालाकृष्णन के साथ छह सहायक राज्यपाल और जिला अधिकारी भी मौजूद थे। सेलम क्लबों द्वारा संयुक्त रूप से कार्यान्वित की जा रही इस नगर पंचायत में यह वृक्षारोपण अभियान जिले के प्रमुख *दशावतारम परियोजना* के अंतर्गत आता है। व्यापक ग्रीन ड्राइव परियोजना इस गांव में रोटरी की सार्वजनिक छवि को अच्छा बनाएगा।■



कुंभकोणम में रोटरी डायलिसिस सेंटर

टीम रोटरी न्यूज़



रोटरी डायलिसिस सेंटर में रोटरी सदस्यों के साथ (बीच में) PDG एस पीरियोन

रोई मंडल 2981 के द्वारा ₹24 लाख की लागत से कुंभकोणम में तीन डायलिसिस मशीनों से सुसज्जित एक रोटरी डायलिसिस सेंटर स्थापित किया गया। यह ग्लोबल ग्रांट प्रोजेक्ट रोई मंडल 9820 ऑस्ट्रेलिया और टीआरएफ की मदद के माध्यम से संभव हुआ।

जिले ने डायलिसिस सेंटर के एक वर्ष के रखरखाव के लिए सिटी यूनिन बैंक (CUB) के साथ एमओयू साइन किया। टीआरएफ से ग्लोबल ग्रांट प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पीडीजी एस पीरियोन ने कहा “लॉकडाउन के दौरान, अनावश्यक यात्रा एवं संबंधित व्यय से बचने के लिए स्थानीय मरीजों के लिए नई सुविधा फायदेबंद थी।”

बिल्डिंग का निर्माण सीयूबी के द्वारा ₹30 लाख की लागत से किया गया था, बैंक ने आरओ यूनिट, कोट्स और अन्य फर्नीचर लगाने के लिए कुल ₹8.5 लाख की अतिरिक्त फंड लगाया। “जब मैं डीजी के रूप में सेवा कर रहा था तभी हमने 2018-19 में ग्लोबल ग्रांट के लिए आवेदन किया था और बिल्डिंग के निर्माण के बाद एवं अन्य सुविधाएं को स्थापित करने के बाद दूसरे साल में डायलिसिस सेंटर का उद्घाटन किया गया था।” उन्होंने बताया। उन्होंने डॉक्टरों एवं नर्सिंग स्टाफ के वेतन का भुगतान करने के लिए हर महीने ₹1.25 लाख के व्यय को पूरा करने के लिए सहमत होने के प्रति इस भागीदारी के लिए बैंक को धन्यवाद ज्ञापित किया।

जीजी प्रोजेक्ट के निष्पादन में उन्हें IPDG मणिमरन, पीडीजी रमेश बाबू, डीजी बालाजी बाबू और DRFC बालासुंदरम के द्वारा सहायता प्रदान की गई। रोटेरियन बालासुब्रमण्यन, महाप्रबंधक CUB, कुंभकोणम ने इस प्रोजेक्ट को पूरा करने में बहुत रुचि ली। ■



PDG पीरियोन डायलिसिस मशीन का उद्घाटन करते हुए।



Rtn. K.S. Venkatesan
Dist. Governor
RID 2982

Rotary District 2982

Literacy Project during the pandemic challenge



Rtn. A.Venkateshwara Gupta
Dist. Literacy Committee Chairman

**கல்லாமை இல்லாமை ஆக்கிடுவோம்
அனைவருக்கும் தரமான கல்வி அளித்திடுவோம்**

கிராமப்புற பள்ளிகளை மேம்படுத்த பெரியார் பல்கலைக்கழகத்துடன் MOU.
கிராமப்புற பள்ளிகளை நோக்கி SMART TV வழங்கிடும் ரோட்டரி
வாசிக்க, நேசிக்க ரோட்டரி நூலகங்கள். கற்றதை பெற்றதை ஆற்றலாக்கி ஒவ்வொரு
குடும்பமும் மகிழ்வான வாழ்வு வாழ உதவி மகிழ்வோம்.

அன்புடன் : ஆளுநர், கல்விக்குழு மற்றும் 2982 ரோட்டரி மாவட்ட உறுப்பினர்கள்



Our proud moments this year

- Thanks to all presidents, assistant governors for the excellent motivation and support for literacy promotion.
- Our Teachers Support team led by **Dr Prof Venkatachalapathy** plans to train 1,000 teachers. Now we have made over 310 teachers happy.
- Our E-learning team plans 500 android Smart TV to rural schools. Chair **C Pramodh** and co-chair **TN Gunavel** are working with **DG K S Venkatesan**, **DLCC A Venkateshwara Gupta** and our district team has distributed 72 TVs to rural government schools. The cost of the e-learning kits, Rs 7.92 lakh, was contributed by the DG, DLCC, AGs, club presidents and the prime sponsors.
- The Adult Literacy Chair **M Kangeyan** has made a workbook to teach the adults.
- Child Development Chair **S Jeevitha** visits places to motivate children to go back to school.
- Our Happy Schools Chair **N P Ramaswamy** and his team interacts with the HMs of needy schools to make the schools Happy Schools. Our goal this year is to create 150 Happy Schools.
- Our Skills Development Chair **M Ayyappuraj** gives online training and is creating 345 new entrepreneurs and professionals.
- We organised a literacy seminar, **Karku Kasadara**, led by DG Venkatesan, and it served as a huge inspiration for our club presidents and Rotarians.
- As DLCC I am happy to share these information. Our goal is to march towards 100 percent literacy by 2025
- I am very much thankful to our beloved DG, college of governors, assistant governors, club presidents, the district team and our prime sponsors.

Prime Sponsors:



रोटरी को विकसित करने हेतु मल्टी-डिस्ट्रिक्ट संगोष्ठी का आयोजन

टीम रोटरी न्यूज

रोटरी क्लब दिल्ली एलीट (रो ई मंडल 3011), सोलापुर (3132) और बेलूर धारवाड़ (3170) के सहयोग से रोटरी क्लब कलकत्ता रेनसान्स और कलकत्ता सेन्टनरी, रो ई मंडल 3291 द्वारा एक मल्टी-डिस्ट्रिक्ट आभासी सदस्यता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। बैठक में पांच क्लबों की चार महिलाओं सहित चौदह नए सदस्यों को शामिल किया गया।

पीडीजी श्यामश्री सेन (3291), चंद्रशेखर कोवस्कर (3142) और सुनील जकारिया (3201) ने लगभग 100 दर्शकों को संबोधित किया। मुख्य अतिथि पीडीजी (3291) देवाशीष मित्रा ने दर्शकों से अधिक महिला सदस्यों को शामिल करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, इस समय रोटरी क्लबों के सबसे बड़ी चुनौती सदस्यता का प्रतिधारण और नए सदस्यों से मिले बिना उन्हें आभासी मंच पर शामिल करना है।

सदस्यों के बीच संबंध और अच्छे संबंधों के महत्व पर जोर देते हुए श्यामाश्री ने समान विचारधारा वाले सांस्कृतिक अभिविन्यास वाले विविध पृष्ठभूमि के लोगों को प्रेरित करने; उनका स्वागत करने और उन्हें शामिल करने की बात कही।



जकारिया ने सदस्यता प्रतिधारण पर बोलते हुए, क्लबों से मजबूत होने के लिए, हैंड-ऑन जुड़वा समिति, संरचित कार्यक्रम, सदस्यों को उचित जानकारी देने और सदस्यों को बनाए रखने हेतु परिवार और दोस्ताना संबंध की भावना पैदा करने का आग्रह किया।

कोवस्कर ने युवा सदस्यों को आकर्षित करने और रोटरी बैठकों को आसान बनाने की आवश्यकता

पर बल दिया। उन्होंने कहा, “रोटरेक्टरों और युवाओं को अपनी परियोजनाओं में शामिल करें ताकि वे रोटेरियन बनने हेतु प्रेरित हों। उनके विचारों की सराहना करना उनके लिए बहुत बड़ी प्रेरणा होगी।”

डीजी सुदीप मुखर्जी (रो ई मंडल 3291), हरीश मोटवानी (3132), डीजीई प्रवीर चटर्जी (3291) और डीजीएन राजा शेखर रेड्डी (रो ई मंडल 3150) भी इस दौरान उपस्थित थे।■

आभासी RYLA ने ब्राजील, नाइजीरिया के युवाओं को किया आकर्षित



रो ई मंडल 3132, 3211 और 3212 के 16-23 आयु समूह के 350 से अधिक इंटरैक्टर्स और युवा पेशेवरों के लिए दो-दिवसीय बहु-जिला वर्चुअल RYLA का आयोजन किया गया था। प्रतिभागियों को परामर्श देने हेतु महानिदेशक हरीश मोटवानी, डॉ थॉमस वावनिकुनेल और पीएनबी मुरुगादॉस मौजूद थे। उद्घाटन सत्र में पीडीजी के ए कुरियचन मुख्य अतिथि थे और RIDE ए एस वेंकटेश ने इस कार्यक्रम में युवाओं को संबोधित किया।

बिंदू शिरसाठ, जिला सहभागिता अध्यक्ष, रो ई मंडल 3132 ने कहा,

ब्राजील और नाइजीरिया के लगभग 13,800 छात्र और पेशेवर भी ऑनलाइन कार्यक्रम में शामिल हुए।

मनोरंजन कार्यक्रमों ने युवाओं ने अपनी प्रतिभा को दिखाया और क्षेत्र के वातावरण का अनुकरण करने हेतु ऑनलाइन गेम आयोजित किए गए। सर्वश्रेष्ठ आर.वाई.एल.ए. का चयन किया गया और सभी प्रतिभागियों को ई-सर्टिफिकेट भेजे गए। आभासी RYLA को संयुक्त रूप से रोटरी क्लब अहमदनगर प्रियदर्शनी, अहमदनगर, रामनाड, कज़रुडूम और कोट्टायम पूर्व द्वारा आयोजित किया गया था।■

District Wise TRF Contributions as on August 2020

(in US Dollars)

District Number	Annual Fund	PolioPlus Fund	Endowment Fund	Others funds	Total Contributions
India					
2981	15,670	1,943	5,000	0	22,613
2982	2,806	1,379	500	0	4,685
3000	2,544	0	10	0	2,554
3011	9,236	100	6,667	35,481	51,484
3012	9,388	0	0	3,079	12,467
3020	37,066	5,240	0	0	42,306
3030	(4,827)	1,030	0	62,282	58,486
3040	343	33	0	50	427
3053	4,132	100	0	60,668	64,899
3054	6,227	110	0	21,117	27,453
3060	11,033	(1,145)	1,313	52,500	63,701
3070	1,455	0	0	11,108	12,563
3080	10,044	2,578	0	0	12,623
3090	10,108	0	0	(736)	9,372
3100	1,050	0	0	0	1,050
3110	9,170	0	0	0	9,170
3120	0	1,769	0	(1,769)	0
3131	10,187	1,350	0	59,360	70,897
3132	989	27	0	307	1,322
3141	130,639	200	1,000	76,129	207,967
3142	44,024	4,680	0	8,259	56,964
3150	(4,306)	200	9,333	4,483	9,710
3160	2,537	5,188	0	0	7,725
3170	3,325	655	100	66,233	70,313
3181	9,789	111	0	4,050	13,950
3182	2,451	0	0	1,050	3,501
3190	15,561	375	25,000	42,078	83,013
3201	5,448	1,067	0	23,142	29,657
3202	13,150	1,437	0	10,167	24,754
3211	740	7	0	12,954	13,701
3212	4,163	6,226	14	3,616	14,020
3231	(520)	0	0	1,167	647
3232	(3,666)	806	0	65,589	62,729
3240	9,090	2,964	0	0	12,053
3250	1,945	187	0	93	2,225
3261	250	0	0	0	250
3262	1,528	1,067	0	0	2,595
3291	5,077	0	0	10,750	15,827
India Total	377,847	39,684	48,937	633,207	1,099,675
3220 Sri Lanka	4,467	5,071	0	5,428	14,966
3271 Pakistan	1,006	1,000	0	22,100	24,106
3272 Pakistan	3,835	7,436	0	0	11,271
3281 Bangladesh	11,443	400	1,000	12,809	25,652
3282 Bangladesh	5,300	100	0	2,970	8,370
3292 Nepal	8,657	1,304	0	32,627	42,587
South Asia Total	412,556	54,995	49,937	709,140	1,226,627
World Total	15,321,049	2,503,546	3,119,300	5,240,180	26,184,075

Source: RI South Asia Office

FEEL THE ENERGY IN TAIPEI

12-16 JUNE 2021 | TAIPEI, TAIWAN

Register today at convention.rotary.org | #Rotary21



TAKE YOUR CLUB IN A NEW DIRECTION

Is your club flexible and ready for the future?

New resources on Satellite Clubs, Passport Clubs, and Corporate Membership can help you create an experience that works for every member.

LEARN MORE ABOUT YOUR OPTIONS
AT ROTARY.ORG/FLEXIBILITY





Fiction's not just a figment of the imagination

Sandhya Rao

The best stories come from writers who reflect deeply upon the world and all its inhabitants and phenomena.

I have a young friend, Apuurva, who is as crazy about books as I am. The other day I messaged her and in the course of our chat exchange, mentioned that I was reading 'a fantastic book called *The Library Book* by Susan Orlean.'

Promptly she wrote back: 'Guess what? I'm reading the very same book now!'

Two friends, bookworms both, reading the same, rather out-of-the-way book at the same time, in two different places, Chennai and Goa! Who could imagine that! Truth is stranger than fiction! Which brings me to a passage in *The Library Book* — more about it in my next — about the history of a library in the US. Apparently, back in 1873, it was governed by all sorts of rules; one of them discouraged the reading of 'too many novels, lest they [readers] turn into what the association labelled "fiction fiends"...'! In 2020, I have no hesitation in urging you loud and clear

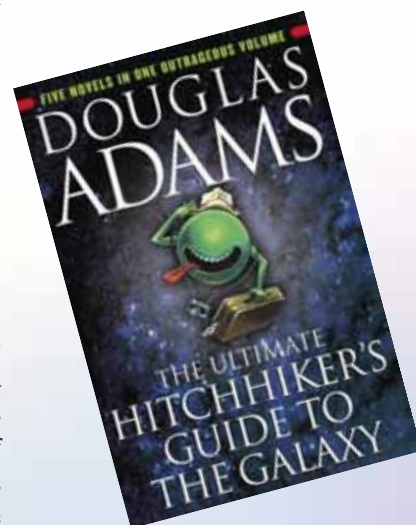
to become 'fiction fiends'. You will find that fiction's a friend.

Stories spun out of a writer's imagination — and here I refer to the best writing, of which there is plenty, and not the trashy kind of writing, of which too there is plenty — create worlds in which readers can lose themselves. Sometimes, you feel that the character emerging from the novel or story is you and you think: how did this author know this about me? Or, this is exactly what I was thinking. Or, I knew this would happen. Or, really, I didn't know this would happen. Or, oh, so that's why he did this or she said that.

Rabindranath Tagore's *Nastanirh*, which became famous in its film version as *Charulata*, explores the loneliness and longing of a woman within a joint family. It's a theme far ahead of its times, intimately exploring the mind of a woman. Or, take Munshi Premchand's *Godaan*, considered by many to be

the finest novel in Hindi ever written. Tackling themes such as caste discrimination, dreams and desire, gender, the indigent rural landscape, class exploitation, Premchand powerfully draws readers into the world he creates. The best works of fiction make you observe the world around you while simultaneously pressing you to look inward.

The key to fiction is 'compelling storytelling'. Once you are hooked, you are able to see things from other points of view thanks to the various characters or situations presented in the novel. You see how people evolve, how societies develop, since things happen over a period of time within the novel, even if it is just a day, as in the case of Ian McEwan's *Saturday*. The events described in the novel take place on just one day in London against the backdrop of a demonstration against the US invasion of Iraq. The central character, a neurosurgeon, is shown struggling to understand the meaning of his life in the context of a post-modern world. Although the action takes place over only one day, you the reader begin to see the larger picture, you begin to see things differently and even if some of the insights are troubling, they enrich your inner self. The best writers of





fiction enable you to unravel some mysteries of our undoubtedly complex lives.

Compare a history textbook with historical fiction. While the former is generally a litany of names, dates and events, the latter takes you bang into the middle of the action in the period in which the novel is set. Through plot and characters, you taste, smell, feel, see all that's happening in that time. Eras come alive in a tangible, unforgettable way. It's the same with general fiction. People and places, events and feelings reach out to you at an emotional level; you cannot but respond. Everything comes together to create a world that's palpable, even if it is a world of fantasy. Why else would so many love books such as *The Hitchhiker's Guide to the Galaxy* by Douglas Adams, a classic science fiction novel of great wit and insight. My niece, when she was in her teens, had this book in one hand at all times except, perhaps, when she was taking a bath. Why else would so many, young, old and middling, swear by Harry Potter? Many young hearts broke when Dan Radcliffe — and not themselves — was chosen to play the role in all seven films! Why, back in Victorian England, would people wait anxiously for

the next instalment of *The Pickwick Papers* or *David Copperfield* or *A Tale of Two Cities*? First published serially, Dickens was devoured by readers who loved the way he wove contemporary events and issues into his plots and grew characters with nuanced personalities. They often saw themselves in what he wrote, the characters he created.

That's the magic of fiction. You can be anybody: a soldier, a singer, a scientist, a mother, a teacher... Through this experience of vicariously living the life of the character, you reap the benefits of deeper understanding and empathy. The magic of fiction is also the source of its power. Fiction also provides contexts. The context in Amitav Ghosh's *Ibis Trilogy*, for instance, is the opium trade between China and India. All that happens to the various individuals peopling the three novels — *Sea of Poppies*, *River of Smoke*, *Flood of Fire* — from merchants to rajas to lascars to slaves, is reason for or the consequence of the impact of the opium trade.

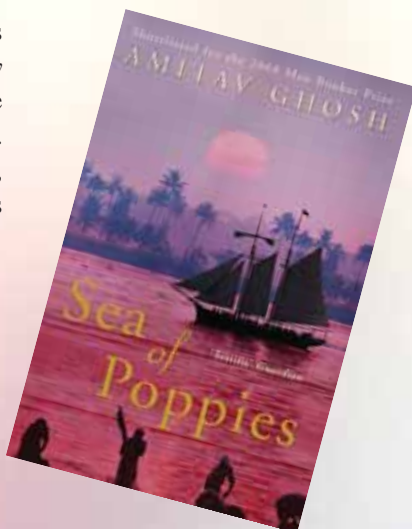
Perhaps the most important function of fiction is the way it allows us to engage with our feelings and, in the process, enrich our inner selves. According to Christine Seifert, reading literary fiction 'helps people develop

empathy, theory of mind and critical thinking'. In an article published in the *Harvard Business Review* in March 2020, she says this is because the act of reading fiction strengthens the cognitive muscles that are essential for the development of EQ, emotional quotient. And a highly developed EQ is what, increasingly, organisations are looking for in their employees. She quotes the example of Joseph Badaracco, professor of Business Ethics at Harvard, who makes fiction titles integral to his course curriculum. She says that he believes that 'good literature presents characters with competing and often equally valid viewpoints.' This enables future business leaders 'to use an expanded ability to understand and respond to competing viewpoints.'

You need imagination to come up with and nurture ideas, and an open mind to make effective decisions, be they personal or professional. Reading fiction provides fuel for the imagination and broadens the mind — provided, of course, it is done willingly and regularly and primarily for the sheer joy of it.

Christine Seifert also quotes the experience of a not-for-profit organisation called Books@Work with getting participants in a workshop to read short stories and/or novels which they then discuss. It appears that this helped participants speak freely and in a more forthright manner as well as communicate more effectively. Finally, to quote a cognitive scientist, Maryanne Wolf: 'the quality of our reading' is 'an index to the quality of our thought'. In other words, better readers could be better thinkers and therefore become better leaders... That's a thought worth considering. The option's clear when next you have some time to spare: pick up a fiction title from your bookshelf or the library or the bookstore. Or borrow.

The columnist is a children's writer and senior journalist.



रोटरी क्लब करूर ने मोबाइल कैंसर डिटेक्शन सुविधा को स्थापित किया

टीम रोटरी न्यूज



PRID सी भास्कर (बाएं से छठवें), तमिल नाडु परिवहन मंत्री एम आर विजयभास्कर के साथ मोबाइल कैंसर स्क्रीनिंग की सुविधा के उद्घाटन समारोह में। पीडीजी एम मुरुगनंदम (बाएं से तीसरे) भी चित्र में शामिल है।

रोटरी क्लब करूर, रो ई मंडल 3000 ने ₹1.38 करोड़ की ग्लोबल ग्रांट के माध्यम से महिलाओं के लिए एक मोबाइल कैंसर डिटेक्शन (मोबाइल कैंसर स्क्रीनिंग) सुविधा को हरी झंडी दिखाई। शोभिका इम्पलेक्स और कोवेरी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, त्रिची ने अपने CSR फंड से क्रमशः 30,400 डॉलर और 40,000 डॉलर का योगदान दिया है।

रो ई मंडल 3000, 4490, 4310, 4590 और 2770 के योगदान सहित एवं इंटरनेशनल पार्टनर के रूप में रोटरी क्लब उरावा ईस्ट, जापान के योगदान ने इस प्रोजेक्ट को संभव बनाया। TRF ने 73,636 की डॉलर मंजूरी दी। वाहन एक मेमोग्राम, सीआर रीडर, एक अल्ट्रासाउंड स्कैनर और पैप स्मीयर टेस्ट उपकरण से सुसज्जित है जो ग्रीवा, गर्भाशय और

स्तन कैंसर का पता लगा सकता है, प्रोजेक्ट के मुख्य संपर्की के रविंद्र कुमार ने बताया।

वाहन को दो जनरेटर से भी लैस किया गया है और इसमें बैटरी बैकअप, टॉयलेट, ओवरहेड टैंक, टीवी स्क्रीन आदि हैं। इसका उद्घाटन PRID सी भास्कर की उपस्थिति में तमिलनाडु के परिवहन मंत्री एम आर विजय भास्कर द्वारा किया गया था।■

रोटरी ने हिसार अस्पताल में कोविड मरीजों के लिए वेंटिंग शेड लगाया



हिसार विधायक कमल गुप्ता, रोटरी क्लब हिसार द्वारा स्थापित वेंटिंग शेड का उद्घाटन करते हुए।

कोरोना वायरस की जांच के लिए लाइन में इंतजार करने वाले लोगों के लिए रोटरी क्लब हिसार, रो ई मंडल 3090 के द्वारा महाराजा अग्रसेन सिविल अस्पताल में एक ओपीडी शेड लगाया गया। 1,600 वर्ग फुट में फैले वेंटिंग शेड (प्रतीक्षालय) का उद्घाटन हिसार के विधायक कमल गुप्ता के द्वारा क्लब के अध्यक्ष मोहित गुप्ता, सचिव आनंद बंसल, ट्रेजरी आशीष गोयल और प्रोजेक्ट चेयरमैन डॉ एन के खेत्रपाल की उपस्थिति में किया गया। ₹2 लाख के इस प्रोजेक्ट को डीजी विजय अरोड़ा के प्रोत्साहन से किया गया था। क्लब ने अस्पताल में कोविड वॉरियरस को पीपीई किट, थर्मामीटर और वेंटिलेटर आदि प्रदान किए।■

Rotary News Subscription Remittances

You can pay the Rotary News / Rotary Samachar subscription online

Our Bank details:

Bank : HDFC Bank
SB Account

Branch : Montieth Road
Egmore, Chennai

A/c Name : Rotary News Trust

A/c No. : 50100213133460

IFSC Code : HDFC0003820

E-mail us following details:

Name of club

President/secretary's name

Amount/date of transfer/UTR number

For physical payment by cheque or cash in bank, write **Club Name only** without prefixing "Rotary Club of".
Eg. Rotary Club of Delhi Central should be written: Delhi Central.

Rotary at a glance

Rotarians : : 1,186,144

Clubs : 36,235

Districts : 525

Rotaractors : 203,537

Clubs : 10,750

Interactors : 345,023

Clubs : 15,001

RCC : 11,244

As on August 17, 2020

*Please note Interact clubs that have not reported Interact Adviser in the past two Rotary years, are placed in "Suspended" status effective Oct 1, 2019.

Membership Summary

As on September 1, 2020

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians %	Rotaract Clubs	*Interact Clubs	RCC
2981	119	5,067	5.90	51	39	225
2982	72	3,130	6.39	85	96	56
3000	130	5,257	8.41	188	256	211
3011	105	4,113	25.94	57	90	35
3012	108	3,836	25.05	56	71	59
3020	73	4,358	6.08	54	155	351
3030	95	5,143	14.68	119	177	304
3040	92	2,237	11.98	41	52	147
3053	64	2,759	16.35	21	39	103
3054	134	6,281	19.61	86	144	524
3060	100	4,583	14.79	60	63	145
3070	114	3,432	17.10	48	20	59
3080	84	3,357	9.00	94	143	116
3090	79	2,393	7.94	42	9	122
3100	100	2,325	8.26	14	14	146
3110	135	3,741	8.93	29	7	105
3120	82	3,335	14.15	47	19	53
3131	138	5,237	21.33	113	178	117
3132	87	3,430	10.12	39	95	159
3141	105	5,593	24.42	125	141	93
3142	90	3,250	20.77	83	118	68
3150	88	3,472	10.54	61	122	117
3160	78	2,574	6.84	28	3	83
3170	133	5,725	13.59	84	204	169
3181	82	3,366	8.97	63	192	118
3182	83	3,153	8.18	49	103	98
3190	140	5,722	15.96	156	153	65
3201	145	5,658	8.29	109	72	52
3202	139	5,661	6.64	97	251	47
3211	144	4,613	7.05	8	24	132
3212	107	4,258	8.67	103	187	149
3231	100	3,956	12.11	53	81	419
3232	128	5,860	19.47	132	199	93
3240	92	3,169	13.57	53	393	197
3250	101	3,784	18.21	69	65	185
3261	75	2,703	16.13	20	21	43
3262	107	3,744	12.71	50	38	78
3291	157	3,745	20.85	93	88	621
India Total	4,005	154,020		2,680	4,122	5,864
3220	71	1,933	14.69	85	125	74
3271	111	1,736	17.74	67	19	22
3272	155	1,838	17.52	53	15	43
3281	240	7,148	17.46	247	50	199
3282	160	4,135	10.86	179	39	46
3292	128	5,065	15.79	135	119	118
S Asia Total	4,870	175,875		3,446	4,489	6,366

Source: RI South Asia Office

जीवन को आगे बढ़ाएं

भारत और शालन सावुर

अब मानसिक रूप से स्थिर और शारीरिक रूप से स्वस्थ होने का समय है। इसका कारण? आज वह दुनिया नहीं है जो लगभग 20-40 साल पहले हुआ करती थी। उन दिनों, अधिकांश आबादी राजनीति के शोर-शराबे और गंदगी के बाहर थी, युद्ध दूर सीमा पर लड़े जाते थे, अगर आत्महत्याएं होती भी थीं तो शायद ही हम उनके बारे में सुनते थे, और हां महामारी हमारे पड़ोस/क्षेत्रों में नहीं फैलती थी। हम हमारे सूरज की रोशनी से संतुष्ट थे और हां सब कुछ अपनी जगह पर था। अब और नहीं। आज, सब कुछ हमारे टीवी स्क्रीन पर है और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह 32 इंच का मॉनिटर है या 102 इंच का, सभी राक्षस यहां हमारे लिविंग रूम में हैं। हमारे उपकरणों ने अब कल्पना करने के लिए कुछ भी नहीं छोड़ा है, कल्पना करने के लिए कुछ भी नहीं है। बहुत राय दी जाती है, चित्र सुपरसोनिक गति से चमकते हैं, संगीत चौंकाने वाला है ... यह केवल हमारे चेहरे पर ही नहीं यह हमारे मन-मस्तिष्क में भी है। क्रेजी, केकोफोनिक दुनिया की लाइव स्ट्रीमिंग रियलिटी शो हमें दिखाने के लिए आपका स्वागत है! वाह!

“जो दर्शनशास्त्र कहता है वह काफी हद तक सच है: कि जीवन को पीछे की ओर समझना होगा” सोरेन कीर्केगार्ड ने लिखा है और बुद्धिमतापूर्वक यह भी जोड़ा है कि “लेकिन तब व्यक्ति एक दूसरे सिद्धान्त को भूल जाते हैं: कि यह आगे की तरफ जीया जाना चाहिए।” यह वही है जिसकी हम बात कर रहे हैं - आगे की तरफ जीने की। ऐसा करने के लिए, हमें अपने हृदय और मन में प्रतिक्रियाओं की अस्थिर लहरों को प्रभावहीन/तटस्थ करना होगा एवं शांति और स्वास्थ्य के स्वच्छ, साफ जल में तैरना होगा।

8-वॉक: जब हमें पता चलता है कि हमारे मोबाइल और टीवी के द्वारा लाया गया पागलपन हमारे भीतर प्रवेश कर जाता है, तो यह इसलिए है कि हम सोफे पर बैठे या अपनी सीट पर हाथ-पैर फैलाकर लेटे हुए बैठी हुई बत्तखों जैसे हैं, और इयरफोन हमारे कानों से ऐसे जुड़े हैं कि लगता है कि जैसे वह हमारे

कानों का ही फैलाव हैं - हम जानते हैं कि हमें क्या करना है। हमें हमारा अपना वर्जन मिल गया है - अपने तनाव को दूर करने के लिए कमरे की लंबाई में ऊपर नीचे गति करना है। हालांकि, आज की जरूरतों के अनुसार, पेंसिंग के एक संशोधित संस्करण की आवश्यकता है, इसे 8-वॉक कहा जाता है क्योंकि यह टेक्निक आकृति 8 की घुमावदार आकृति पर चलने में अत्याधिक-उत्तेजित मन को व्यस्त रखती है। यह समुद्र तट पर, पार्क में, घर पर या कार्यस्थल पर की जा सकती है। यदि आप घर पर हैं, तो दो कुर्सियों को दो फीट की दूरी पर एक पंक्ति में रखें। अब, पहली कुर्सी के चारों ओर वॉक करें, फिर तिरछे होकर दूसरी कुर्सी पर जाएं और दूसरी कुर्सी के चारों ओर वॉक करें और फिर तिरछे होकर वापस पहली वाली कुर्सी पर जाएं - 8 की आकृति बनाते हुए। पांच मिनट से शुरू करें, इसके बाद इसे 10...20...30 मिनट तक

रोज प्रगति करते जाएं। वॉक करते समय सामान्य सांस लें। यह एक बहुत अच्छी तनाव दूर करने वाली विधि है। इसे 14 दिन करें और जांच करें कि आप कैसा महसूस करते हैं।

मन को रीसेट (पुनर्स्थापित) करें: बुरी खबरों के जोरदार हमले अक्सर हमारी संतुष्टि के स्तर को कम करते हैं। *एक कर्कश आवाज हमारे मन में प्रवेश करती है। *क्या मैं अक्सर ही शिकायत करता हूँ? *क्या मैं किसी ऐसी चीज से असंतुष्ट हूँ जिसे मैं नियंत्रित नहीं कर पा रहा हूँ? *क्या वर्तमान के आधार पर ही भविष्य अंधकारमय दिखता है? निराशाजनक, उदास भावनाएं इम्यून सिस्टम को सप्रेस (दबाव डाल सकती हैं) कर सकती हैं और एलर्जी, अवसाद, और अन्य विकारों को रास्ता दे सकती हैं (अर्थात उनके कारण यह विकार पैदा हो सकते हैं)।



इन स्थितियों से बाहर आने एवं अपने लिए मनोवैज्ञानिक सुरक्षा क्षेत्र बनाने का शानदार तरीका यह है कि आप संतुष्टि के प्रति अपने मन को सजगतापूर्वक रीसेट (पुनः व्यवस्थित) करें। योग के पिता, पतंजलि ने कहा था कि “संतोष परम आनंद की ओर ले जाता है।” इस कठिन समय में जो हममें असंतोष बढ़ता है, कभी-कभी यह खतरनाक स्तर तक भी पहुँच जाता है, इसलिए यह जरूरी है कि ‘हमारे पास कितना है’ की इस सुप्त भावना को गहराई से स्पर्श करते हुए हम अपने मन के संतुलन को बनाए रख सकते हैं।

जब हम गर्व, ईर्ष्या, तीव्र या आधारहीन इच्छाओं और सभी तरह के तनावों जो इसके साथ चलते रहते हैं, उनको बाहर निकाल देते हैं तब इन्हें हमारे पास कितना हैफ के आधार को हमारे लिए प्राप्त करना बहुत आसान हो जाता है। जब अव्यवस्था समाप्त हो जाती है तब हम इकितना हैफ के खजाने को टच (स्पर्श) कर लेते हैं और इसकी शांतिपूर्ण रोशनी से अपने को भर जाने देते हैं। यह संतोष है।

संतोष या संतुष्टि के रहस्यों में से एक है: जीवन को प्रेम करना जैसा भी वह है, जीवन जितना दे उससे

ज्यादा की अपेक्षा न करें, जीवन को अपनी हंसी उधार दें जब जीवन आपको खुशी दे अर्थात् आनंदित करे, जब जीवन की राह पथरीली हो जाए (अर्थात् कठिन हो जाए) तब धैर्य एवं दृढ़ता के साथ मार्ग प्रशस्त करें क्योंकि एक दिन जीवन यहां नहीं होने वाला है।

सौम्य मार्गदर्शक: संतोष हमारे चारों ओर के शोर (कोलाहल) को शांत करता है और हमें विचलित हुए बिना देखने में सक्षम बनाता है और प्रचुरता से खुशी लाता है, सुंदरता, महान बुद्धिमत्ता का प्रमाण एवं इसका फल जिसने इस परिपूर्णता को बनाया है। संतोष एक आंतरिक शक्ति है जो हमें हमारे समय एवं ऊर्जा को बचाने एवं इसका उपयोग करने में हमें उन चीजों को करने में मदद प्रदान करता है जो कि वास्तव में हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। यह कई तरह से सौम्यतापूर्वक हमारा मार्गदर्शन करता है:-

- * हम इस बारे में चिंता करना बंद कर देते हैं कि दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं -यह एक अंधेरी गुफा से बाहर निकलने एवं ऊपर के विशाल आकाश और चारों ओर के विशाल स्थान की खोज करने जैसा है।
- * यह हमें बहुत ज्यादा सोचने-विचारने, अति विश्लेषण करने से बचाता है, इसलिए कोई भय नहीं रह जाता, और कोई भी मानसिक पक्षाघात नहीं रह जाता। हम जानते हैं कि जैसा प्रतीत होता है उसके बजाय सबकुछ बेहतर होगा और हम केवल बेहतर पाएंगे।
- * जो कुछ भी हमने किया है यह उसके प्रति हमें खुद को व्यर्थ में ही अपने को कोसने से रोकता है और हम बेहतर व्यक्ति बन जाते हैं क्योंकि हम दूसरों को आंकना बंद कर देते हैं। हमें एक गहरी समझ उपलब्ध हो जाती है और यह अपने भीतर एक अस्पष्ट सुंदर मार्ग पर चलने जैसा है।
- * यह हमें खुद को पकड़ने में मदद करता है जब लगातार चाहते हैं कि काश चीजें दूसरी तरह से होतीं। यह उतना अच्छा है जितना यह हो सकता था, बिना शब्दों के कहें और हम बची हुई ऊर्जा का उपयोग जीवन जीने के लिए करते हैं।
- * जब हम संतुष्ट होते हैं, तब भी हम दुखी महसूस करेंगे लेकिन हम असहाय नहीं होंगे, हम निराशा अनुभव नहीं करेंगे। हम सकारात्मक एक्शन लेते हैं। अगर हम बहिर्मुखी प्रकार के व्यक्ति हैं तब

हम अपने अवसाद से दूर हो जाएंगे, और यदि हम अंतर्मुखी रहना पसंद करते हैं तब केवल चुपचाप बैठना संभव होता है जबतक कि उदासी की लहरें शांत नहीं हो जातीं एवं शांति स्थापित नहीं हो जाती।

- * अब कोई शिकायत नहीं है। यह तुरंत ही नहीं होता। जब दूसरे करते हैं तब हम उन्हें आश्चर्य से देखते हैं, जब वह ऐसा कर सकते हैं तब हम उनकी मदद करेंगे या उनका मार्गदर्शन करेंगे, सही व्यक्ति होने के लिए, और हां, हमारे भीतर इस चिड़चिड़ापन को रहने की कोई जगह नहीं है।
- * हम पुरानी चीजों को नया रूप तब तक नहीं देते जब तक कि ऐसा करने के लिए हमारे पास कोई अच्छा कारण न हो। व्यायाम करके, प्रकृति के नजदीक समय बिताकर, संगीत सुनकर या टेड के उत्साहवर्धन करने वाले भाषणों को सुनकर हम मन के कोहरे अर्थात् कोलाहल को शांत/साफ करते हैं।
- * सबसे अच्छी चीजों में से एक जो हमें करनी है, वह यह है कि हमेशा लोगों को वही करने के लिए प्रोत्साहित करें जो वे करना चाहते हैं। संतुष्टि या संतोष, प्रतियोगिता और श्रेष्ठता की भावनाओं को समाप्त करता है। इसकी जगह हममें एक हो जाने का अद्भुत भाव आता है। जैसा कि बॉब मार्ले ने गाया था, “अपने लिए जियेंगे तो आप व्यर्थ में जीएंगे, दूसरों के लिए जिएँ और आप फिर से जीवंत हो जाएंगे (अर्थात् जीवन जीने लगेंगे)”

अरे हां, कृपया टीवी पर किसी सौम्य, हल्के-फुलके, मनोरंजक प्रोग्राम पर जाएं, ऐसा टीवी प्रोग्राम जो आपको खुशी देता है, शिक्षित करता है, प्रेरित करता है। मैं डॉ वेन डायर की *The Shift* मूवी को देखने की सलाह दूंगा। अपने भीतर शोर या तनाव को प्रवेश नहीं करने देने का यह एक और शानदार तरीका है।

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, और सिम्पली स्पिरिचुअल-यू आर नैचुरली डिवाइन के लेखक हैं और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक हैं।

रोटरी क्लब कवाली भूखों के लिए बना अन्नदाता

किरण जेहरा



चित्र में रामा सुब्बय्या कॉलोनी के निवासियों को गर्म भोजन परोसा जा रहा है।

नेल्लोर के समीप कवाली में स्थित रामा सुब्बय्या कालोनी के रहवासी ताजा, गरमागरम भोजन परोसे जाने की अपनी बारी का धैर्यपूर्वक इंतज़ार करते हैं। रोटरी क्लब कवाली, रो ई मंडल 3160, के पूर्व अध्यक्ष गोपीकृष्ण कानू कहते हैं कि उस दिन का मेनू अंडा बिरयानी, रायता और केसरी है। ‘एक दिन में एक भोजन’ पहल के तहत क्लब तीन झुग्गी बस्तियों के लगभग 350 परिवारों को मार्च से ही भोजन प्रदान कर रहा है। उनमें से कुछ लोग अपने बच्चों के साथ सुबह 10 बजे से इंतज़ार करते हैं। उनमें से बहुत से लोगों के लिए यह दिन का एकमात्र भोजन होता है, वह आगे कहते हैं।

अधिकांश प्राप्तकर्ता दिहाड़ी मजदूर होते हैं और महिलाएं घरेलू कामकाज करती हैं। लॉकडाउन लगने

के बाद से, वे काम पर नहीं जा सके और उनके नियोक्ताओं द्वारा उन्हें मजदूरी देने से मना कर दिया गया, जिसके कारण उनके पास पैसा नहीं बचा और खाद्यान्न भी उनके पास ना के बराबर रह गया। उनकी दुर्दशा को समझते हुए क्लब बुनियादी जरूरतों के साथ इन बस्तियों के रहवासियों की मदद कर रहा है।

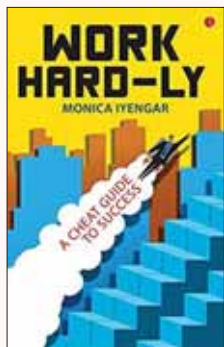
चूंकि क्लब अपनी सेवाओं को बेघरों तक पहुंचाना चाहता था इसलिए “हमने अपनी कारों को भोजन के पैकेटों के साथ लादा और शहर भर में भिखारियों और सड़क पर रहने वालों को वितरित किया।” कानू एक बूढ़ी बेघर महिला को याद करते हैं जिसकी “आँखों में खाने का पैकेट मिलने पर आँसू थे। उसने हिचकिचाते हुए पूछा कि क्या वह अगले दिन उसी स्थान पर उसी समय पर वापस आकर भोजन का पैकेट प्राप्त कर सकती है।” क्लब

के सदस्यों ने हाईवे के किनारे अस्थायी शिविरों में रह रहे 10 प्रवासी परिवारों को एक सरकारी स्कूल में स्थानांतरित कर दिया और उन्हें एक महीने तक चलने वाली राशन किटें प्रदान कीं। उसी प्रकार क्लब ने शहर के 7,000 सुविधाओं से वंचित परिवारों को सब्जियां एवं सूखा राशन वितरित किया, वह कहते हैं।

अप्रैल से क्लब स्वच्छता मुहिम चला रहा है, और इसने करीब 10,000 लोगों को आयुर्वेदिक दवाइयाँ, मास्क और सैनिटाइज़र वितरित किए। जुलाई तक, हम कोविड राहत गतिविधियों पर लगभग ₹24 लाख खर्च कर चुके थे, जिसमें सदस्यों ने व्यक्तिगत दान दिया या अपने दोस्तों, रिश्तेदारों या सहयोगियों से धन प्राप्त किया।

कवाली के निकट ग्रामीण क्षेत्रों में पच्चीस आयुर्वेदिक शिविरों का आयोजन किया गया। ■

On the racks



Work Hard-ly

Author : Monica Iyengar

Publisher : Rupa

Publications

Pages : 118; ₹170

Divided into 13 chapters, the book discusses time management, team management, balancing professional and personal life, leadership qualities, women in the workplace, and more for the younger generation with a short attention span. In the corporate world, curb your enthusiasm and learn from the lazy, smooth-talking colleague how to tilt the system in your favour with tips from this book. Anecdotes of a crazy boss, nosey co-workers, and a clueless HR will leave you chuckling. For those who often wonder why the incompetent ones are doing better, this book will help in making you efficient and reduce work pressure.



The Rape Trial

Author : Bidisha Ghosal

Publisher : Notion Press

Pages : 548; ₹555

Beyond a courtroom drama this book narrates the story of Avni Rambha, a rape victim. Rapist Rahul Satyabhagi, son of a rich and powerful politician, is acquitted, despite having strong evidence against him. Rahul goes on to become the leader of a men's rights activist group. Eight years later, a video of Rahul obscenely describing the rape turns up on the internet. But no arrest happens. Even more powerful now, he decides to silence everyone involved in exposing him. Little does he know that he is going to meet Avni's friends Hitaishi and Amrutha, who have decided to punish him. Meanwhile, rapists in the city are being kidnapped, tortured and dumped on the streets. A team under DC Dixit investigate the gruesome torture of Rahul Satyabhagi. Are the three friends behind it?



Burnt Sugar

Author : Avni Doshi

Publisher : Hamish Hamilton

Pages : 240; ₹1,407

Longlisted for the Booker Prize 2020 this is a love story about love and betrayal between a mother and a daughter. Tara, a wild woman in her youth, abandons her loveless marriage to live in an ashram with her child Antara, and falls in love with a guru. Antara retells her tale about living at the ashram, and her suffering under her mother's self-centered version of self-actualisation. Now Tara is old and forgetful and Antara is tasked with taking care of her mother she never loved. This book talks about the change of roles from being a daughter to becoming a caregiver for an elderly mother and portrays the complicated feelings a caregiver can experience. The anger and helplessness that stems from the feeling of being inadequate in the role of a daughter to being taken for granted while the sick person is showered with understanding and pity, this book is packed with unsettling emotions.

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब नन्नीलम - रो ई मंडल 2981



अणईकुप्पम गांव के सरकारी मातृत्व अस्पताल-सह-PHC में ₹60,000 की लागत से एक आरओ वाटर प्यूरीफायर स्थापित किया गया।

रोटरी क्लब दिल्ली मयूर - रो ई मंडल 3012



रोटेरियनों ने यमुना पुश्ता, एक झुग्गी बस्ती, में बनफूल स्कूल के बच्चों को लेखन सामग्री वितरित की।

रोटरी क्लब सेलम - रो ई मंडल 2982



क्लब ने ₹75,000 की कीमत के कोविड राहत सामग्री सेलम के सरकारी अस्पताल को दान में दिये। PDG वेलायुधा रविंद्रन ने सामग्री सौंपी।

रोटरी क्लब विशाखा पोर्ट सिटी - रो ई मंडल 3020



क्लब ने नगर निगम आयुक्त सृजन को कोविड मरीजों को प्रदान करने हेतु 400 होम क्वॉरंटीन किटें दान की जिसमें विटामिन और एलर्जी-विरोधी गोलियां शामिल हैं।

रोटरी क्लब पुदुकोट्टई सिटी - रो ई मंडल 3000



क्लब के अध्यक्ष के अरुमुगम ने डॉ ए एल मीनाक्षी सुंदरम, डीन, गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज, पुदुकोट्टई को ENT ऑपरेशन के लिए हेड लाइट वाली एक फाइबर ऑप्टिक केबल डिवाइस दान की।

रोटरी क्लब देवास - रो ई मंडल 3040



क्लब ने रोटरी क्लब सिंगापुर के साथ एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से जिला अस्पताल, आयुष विभाग और पुलिस एवं स्वयंसेवी एजेंसियों जैसे अन्य संस्थानों को ₹12 लाख की लागत से पीपीई किटें, ऑक्सीमीटर, थर्मामीटर, सैनिटाइजर, मास्क और दस्ताने वितरित किए।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब ग्वालियर - रो ई मंडल 3053



एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से, क्लब ने 15 गांवों की पीने के पानी, कृषि और पशुधन की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक बांध का नवीकरण किया। यह परियोजना कम से कम 15,000 लोगों को लाभान्वित करेगी।

रोटरी क्लब मसूरी - रो ई मंडल 3080



पांच स्कूलों के 650 से अधिक विद्यार्थियों की ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने में मदद करने के लिए उन्हें नोटबुक और रजिस्टर प्रदान किए गए।

रोटरी क्लब राजकोट ग्रेटर - रो ई मंडल 3060



रोटेरियनों ने रतनपुर के माहेश्वरी माताजी वृद्धाश्रम की 50 महिलाओं को मास्क और दस्ताने वितरित किए।

रोटरी क्लब फरीदकोट - रो ई मंडल 3090



इस क्लब ने रिक्शाचालकों, फेरीवालों और दुकानदारों को रोटरी के लोगो वाले फेस मास्क और एक कोविड देखभाल केंद्र के डॉक्टरों एवं कर्मचारियों को पीपीई किटें वितरित की।

रोटरी क्लब दसूया ग्रेटर - रो ई मंडल 3070



रोटेरियनों ने बोदल के एक सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों को पौधे एवं लेखन सामग्री और जरूरतमंद परिवारों को राशन किटें वितरित की।

रोटरी क्लब वाई - रो ई मंडल 3132



मालेगांव तालुक के नझ प्राइमरी स्कूल में एक डिजिटल कक्षा का उद्घाटन किया गया। ₹40,000 की लागत वाली यह परियोजना कक्षा 1 से 7 तक के 100 विद्यार्थियों को लाभान्वित करेगी।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब हीरानन्दानी एस्टेट - रो ई मंडल 3141



क्लब के सदस्यों ने प्रशस्ति पत्र और उपहारों के साथ अपने आस-पड़ोस के गुमनाम कोरोना योद्धाओं को सम्मानित किया।

रोटरी क्लब कोटा सिटी - रो ई मंडल 3182



रोटेरियनों ने आधा एकड़ बंजर भूमि में खेती की और उस धान को अनाथालय और वृद्धाश्रम में दान करने की योजना बना रहे हैं। एक गौशाला को घास दी जाएगी। इस परियोजना से 100 जरूरतमंद लोगों को लाभ मिलेगा।

रोटरी क्लब कादिरी - रो ई मंडल 3150



स्थानीय विधायक और स्वास्थ्य कर्मचारियों की मौजूदगी में होम क्वॉरन्टीन हुए 70 कोविड मरीजों को दवाएं और पौष्टिक भोजन की आपूर्ति की गई।

रो ई मंडल 3190



डीजी नागेंद्र प्रसाद और रोग निरोधक अध्यक्ष एस जयरामन ने NIMHANS के निदेशक, डॉ बी एन गंगाधर, को न्यूरोलॉजी लैब में स्थापित करने के लिए ₹40 लाख की कीमत का एक कोविड परीक्षण उपकरण सौंपा।

रो ई मंडल 3181



डीजी एम रंगनाथ भट ने जिला आयुक्त सिंधु रूपेश को ₹4 लाख की लागत से दक्षिण कचड़ के आंगनवाड़ी और आशा स्वयंसेवकों को देने के लिए 3,000 फेस शील्ड और 60,000 दस्ताने सौंपे।

रोटरी क्लब कोयंबटूर मेरिडियन - रो ई मंडल 3201



क्लब ने अपने इको मेरिडियन प्रोजेक्ट के तहत वन केयर अस्पताल में एक स्थायी सैपलिंग स्टॉल का उद्घाटन किया। अस्पताल के आंगंतुक अपने उपयोग के लिए ये पौधे ले सकते हैं।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब तिरुपुर सेलिब्रेशन - रो ई मंडल 3202



क्लब ने यरकौड के वालवन्ती के एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को 150 चादरें और तकिये के कवर दान किए। PHC आदिवासी स्थानीय लोगों की चिकित्सा आवश्यकताओं को पूरा करता है।

रोटरी क्लब शिवसागर - रो ई मंडल 3240



क्लब द्वारा प्रोजेक्ट पॉजिटिव हेल्थ पर एक ऑनलाइन जागरूकता वार्ता आयोजित की गई। रोटेरियनों ने शिवसागर के जिला कोविड अस्पताल के मरीजों को फल वितरित किए।

रोटरी क्लब तिरुनेलवेली टाउन - रो ई मंडल 3212



क्लब ने नेत्रहीनों के एक अनाथालय को क्लब के सदस्य एस टी आर गांधी द्वारा प्रायोजित 45 जोड़ी साड़ी और मिठाईयाँ बांटी।

रोटरी क्लब बालासोर ऑन सी - रो ई मंडल 3262



केंद्रीय मंत्री प्रताप चंद्र सदांगी ने एक आभासी बैठक के माध्यम से डीजी सौम्या रंजन मिश्रा और अन्य रोटेरियनों की उपस्थिति में नीलगिरि उपखंड अस्पताल में एक स्वच्छ पेयजल स्टेशन का उद्घाटन किया।

रोटरी क्लब मद्रास कोन्नेमारा - रो ई मंडल 3232



क्लब की काडु सेव्योम परियोजना के पहले चरण के तहत श्रीपेरंबुदूर में एक सरकारी भूमि पर लगभग 500 पौधे लगाए गए, जिसका उद्देश्य शहरी वन पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है। यह परियोजना FASS ट्रस्ट और नगर पंचायत के साथ साझेदारी में की गई।

रोटरी क्लब टॉलीगंज - रो ई मंडल 3291



क्लब के सदस्यों ने सुंदरबन के एक अनाथालय, महेशपुर सेवाश्रम, को मासिक खाद्य सामग्री प्रदान की।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित
एल गुणाशेकरण द्वारा रूपांकन

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

अगस्त में INPPC द्वारा आयोजित आभासी नेशनल पोलियोप्लस एंड एम आर (मीज़ल्स एंड रुबेला) ओरिएंटेशन एंड प्लानिंग मीट में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ हर्षवर्धन, IPPC अध्यक्ष माइक मेकगवर्न, WHO SEARO डॉ सुनील बहल, और UNICEF के टीकाकरण विशेषज्ञ डॉ रिजा अंदरियामिहंतानिरीना; टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष के आर रविंद्रन, RID भरत पांड्या और RID कमल संघवी, RIPE शेखर मेहता, न्यासी गुलाम वाहनवटी, INPPC अध्यक्ष दीपक कपूर और INPPC सलाहकार PRIP राजेंद्र साबू उपस्थित थे।

मंडल रोटरी नेतृत्वकर्ताओं से आग्रह किया गया कि वे पोलियो उन्मूलन प्रयासों का नेतृत्व करें, टीकाकरण के नियमित कार्यक्रमों को बढ़ाने का प्रयास करें और वैश्विक महामारी एवं लॉकडाउन के मद्देनजर मध्यावधि तक पूरक टीकाकरण की बहाली की तैयारी करें।

विश्व पोलियो दिवस

रोटरी क्लबों को रोटरी के विश्व पोलियो दिवस संसंधनों का उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है (<https://www.endpolio.org/world-polio-day>) कि वे उस दिन (24 अक्टूबर) को ऑनलाइन/आभासी कार्यक्रमों की योजना बनाएं।



केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ हर्षवर्धन।

टूलकिट https://www.endpolio.org/sites/default/files/wpd_2020_en.zip से डाउनलोड की जा सकती है।

रोटरेक्ट पुरस्कार

रोटरेक्ट गिर्विंग सर्टिफिकेट एक नई पहल है जो रोटरेक्टर्स को व्यक्तिगत दान के माध्यम से टीआरएफ का सक्रिय रूप से समर्थन करने हेतु प्रेरित करती है। यदि किसी क्लब के पाँच सदस्य मिलकर कम से कम 50 डॉलर का दान देते हैं, तो उस क्लब को प्रमाणपत्र से सम्मानित किया जाएगा।

प्रत्येक रोटेरियन, प्रत्येक वर्ष
प्रत्येक रोटेरियन, प्रत्येक वर्ष (EREY) हर एक रोटेरियन

को हर साल संस्थान के वार्षिक कोष में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करता है ताकि दुनिया भर में जीवन-परिवर्तक, संवहनीय परियोजनाओं का समर्थन किया जा सके। आप My Rotary के *An Every Rotarian, Every Year* पृष्ठ पर विभिन्न अपडेटेड EREY संसाधन देख सकते हैं, जिनमें *The Every Rotarian, Every Year* विवरणिका शामिल है।

आधिकारिक डायरेक्टरी

2020-21

निदेशक मंडल ने सदस्यों, दानकर्ताओं एवं कार्यक्रम के प्रतिभागियों की व्यक्तिगत जानकारी को सुरक्षित रखने के

लिए पिछले वर्ष आधिकारिक डायरेक्टरी की छपाई न करने का फैसला किया। सदस्यों के लिए माय रोटरी पर डायरेक्टरी उपलब्ध है और अब वह न ही छपेगी, और न ही वह डाउनलोड किए जा सकने वाले इलेक्ट्रॉनिक संस्करणों में मौजूद होगी।

ऑनलाइन आधिकारिक डायरेक्टरी के माध्यम से, सदस्य आसानी से एवं सुरक्षित रूप से साथी सदस्यों की खोज कर सकते हैं, क्लब एवं मंडल की जानकारी प्राप्त सकते हैं, समितियां देख सकते हैं, वरिष्ठ नेतृत्वकर्ताओं की आत्मकथाएँ पढ़ने के साथ-साथ और भी बहुत कुछ कर सकते हैं।■

नेत्रदान को बढ़ावा

टीम रोटरी न्यूज

वेबिनार में
प्रतिभागियाँ।



नेत्रदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु भारत में राष्ट्रीय नेत्र दान पखवाड़ा 1985 के बाद से हर साल अगस्त 25 और 8 सितंबर के बीच मनाया जाता है। हाल ही में, रो ई मंडल 3190 की टाल सकने योग्य अंधेपन (अवॉइडेबल ब्लाइंडनेस) समिति ने इसे बढ़ावा देने हेतु एक वेबिनार का आयोजन किया।

डॉ जीएन राव, संस्थापक अध्यक्ष, एल वी प्रसाद आई इंस्टीट्यूट, हैदराबाद, ने अपने मुख्य भाषण में अमेरिका में कॉर्निया सर्जन के रूप में पेशेवर अभ्यास के प्रारंभिक वर्षों को याद किया, जब इसकी सीमित उपलब्धता और भंडारण-सुविधाओं की कमी के कारण आपातकालीन आधार पर कॉर्निया प्रत्यारोपण किया जाता था। जब वो 1987 में नेत्र अस्पताल और 1989 में नेत्र बैंक की स्थापना हेतु भारत आए, तो वो देखकर दुखी हुए की नेत्रदान यहां की कोई अवधारणा नहीं थी। नेत्र बैंक के पहले वर्ष के दौरान, केवल 10 कॉर्निया ही एकत्र हो सका। उन्होंने कहा, आज, संस्थान एशिया की सबसे बड़ी नेत्र बैंकिंग सुविधाओं में से एक है। डॉ. राव ने रोटरी और लायंस जैसे नेत्र अस्पतालों तथा एनजीओ से आग्रह किया कि वे सरकार को नेत्रदान हेतु नीति विनियम बनाने और वित्तीय सहायता के साथ प्रमुख भारतीय अस्पतालों

में अस्पताल-आधारित कॉर्निया रिट्रीवल प्रोग्राम (HCRP) लागू करने की सिफारिश करें। उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष उनके अस्पताल ने 10,500 कॉर्निया एकत्र किए थे, और 70 प्रतिशत दान HCRP के माध्यम से आए थे।

समिति अध्यक्ष डॉ एम वी रविकुमार की अध्यक्षता में हुई समिति की चर्चा में शिवकाशी से डॉ जे गणेश, डोडबॉलपुरा के गुरुदेव और डॉ हरिश, बी एल शर्मा, अध्यक्ष, आई बैंक सोसायटी ऑफ राजस्थान (EBSR) और एस. जयरामन, नयना ज्योति ट्रस्ट, बेंगलुरु के संस्थापक ट्रस्टी शामिल थे।



डॉ जी एन राव, एल वी प्रसाद नेत्र संस्थान, हैदराबाद के संस्थापक अध्यक्ष, प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए।

डॉ. हरिश और उनके ससुर गुरुदेव ने बताया कि कैसे, कई प्रेरक कार्यक्रमों के माध्यम से, वे कैसे 100,000 की आबादी वाले डोडबॉलपुरा में और उसके आसपास के क्षेत्रों से 1,460 कॉर्निया इकट्ठा कर सकते हैं।

शर्मा ने कहा कि EBSR के पूरे राजस्थान में आई बैंक हैं और एकत्र किए गए कॉर्निया हेतु अपने सदस्यों को भुगतान करता है, जिन्हें गरीबों को मुफ्त में दिया जाता है। उन्होंने नेत्रदान बढ़ाने में पुलिस की भूमिका को समझाया। डॉ गणेश ने पिछले 11 वर्षों में 40,000 से अधिक लोगों को लाभान्वित करते हुए 14,000 से अधिक कॉर्निया एकत्र किए हैं।

जयरामन ने 'विज़न एम्बेसेडर्स' की अपनी अवधारणा को समझाया जो नेत्रदान हेतु अभियान चलाते हैं। उन्होंने तमिलनाडु और कर्नाटक के लिए नेत्र दाता हेल्पलाइन '104' की शुरुआत की है, ताकि दाताओं का डेटाबेस बनाया जा सके और इस निमित्त को बढ़ावा दिया जा सके।

एबी कमेटी के एक नेत्रहीन सदस्य प्रदीप सुदर्शन ने अपने परिवार तथा दोस्तों के बीच नेत्रदान को बढ़ावा देने का अपना अनुभव साझा किया। समिति के तकनीकी सलाहकार डॉ अरुण अदकोली ने संसाधन उपलब्ध कराने वाले व्यक्तियों व प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया।■

मूर्खों पर एक परिकल्पना

टी सी ए श्रीनिवासा राघवन



एक दिन मैंने ट्विटर पर एक टिप्पणी पढ़ी जिसमें लिखा था कि इस चीनी वायरस का एक लाभ अवश्य हुआ है: इसने हमारे बीच मौजूद मूर्खों की पहचान करने में मदद की है। इसने मुझे एक सिद्धांत की याद दिला दी जिसे मैंने छह साल पहले प्रस्तुत किया था। ऐसा तब हुआ जब मैंने पढ़ा कि एक मंत्री ने विशेषरूप से एक मूर्खतापूर्ण टिप्पणी की। उन्होंने जो कहा उसे सुनने के बाद मैंने मूर्खों के बारे में सोचना शुरू कर दिया: एक देश में कितने मूर्ख होते हैं? क्या कोई न्यूनतम सीमा है? क्या कोई अधिकतम सीमा है? क्या इनकी संख्या स्थिर होती है?

आखिरकार, मैंने सोचा कि भौतिक विज्ञान और गणित दोनों में स्थिरांक जैसी चीजें हैं, उदाहरण के लिए गणित में पाई और भौतिकी में प्लैंक कॉन्स्टेंट। चाहे कुछ भी हो, इनका मान हमेशा एक सा रहता है। इसलिए एक लंबे समय से मैं सोच रहा था कि क्या सामाजिक विज्ञान में भी स्थिरांक होते हैं। अर्थशास्त्र, जो महत्वपूर्ण रूप से स्वयं को विज्ञान कहता है, में स्थिरांक नहीं हैं - या केवल एक हैं। लेकिन यह एक प्राकृतिक स्थिरांक नहीं है। इसका आविष्कार 1986 में IMF द्वारा किया गया था, जिसके अनुसार चाहे जो हो जाए पर किसी भी देश का राजकोषीय घाटा 3 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए। ऐसा करने के पीछे कोई कारण या तर्क नहीं दिया गया। लेकिन अन्य सामाजिक विज्ञान जैसे समाजशास्त्र, नृविज्ञान, राजनीति विज्ञान इत्यादि में मानव-निर्मित स्थिरांक तक नहीं हैं।

इसलिए मैं अपने से बुद्धिमान व्यक्तियों के लिए एक सवाल खड़ा कर रहा हूँ: एक जनसंख्या नमूने में - मान लीजिए किसी बस में, एक कक्षा में, एक गाँव में, एक अखबार में, एक शहर में, एक मेट्रो

में, जिले में, एक सेना में, एक राज्य में और अंततः एक देश में - क्या उस समूह में लोगों की कुल संख्या के संबंध में मूर्खों की संख्या स्थिर होती है? कोई भी उत्तर नहीं मिला। इसलिए मैंने अपना एक सिद्धांत प्रस्तुत किया।

मैंने मूर्ख की परिभाषा के साथ शुरुआत की। मेरी परिभाषा - आप अपनी परिभाषा बना सकते हैं - के अनुसार मूर्ख वह है जो अच्छा निर्णय नहीं ले सकता। अच्छे निर्णय में कम से कम 90 प्रतिशत समय के लिए आप अपने आत्महित को अधिकतम करने की क्षमता के बारे में सोचते हैं, जिसका अर्थ है कि आप अपने आप को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। कानूनी, आर्थिक और सामाजिक अड़चनें सभी के लिए समान होती हैं, इसलिए वह केवल एक मूर्ख होता है जो अधिकतम लाभ नहीं उठाता है। आम तौर पर, मूर्ख हमेशा दूसरों से कीमत वसूलते हैं। उदाहरण के लिए वे लाल बत्ती होने पर भी आगे बढ़ जाते हैं, वे जो पेट्रोल पम्प पर सिगरेट पीते हैं, वे मंदबुद्धि जो विमान के उड़ान भरते समय उठ जाते हैं और अब वे सीमावर्ती अपराधी जो भीड़-भाड़ वाली जगहों पर मास्क नहीं पहनते या

सामाजिक दूरी का पालन नहीं करते। ये उनके कुछ उदाहरण हैं। आप इनमें और भी लोगों को जोड़ सकते हैं।

ऐसा मानते हुए कि ऐसे लोगों कि संख्या हर समूह में पाँच प्रतिशत से अधिक नहीं है - यह शायद 10 प्रतिशत के आसपास है - भारत में 70 मिलियन मूर्ख हैं। यदि यह आंकड़ा 10 प्रतिशत है तो, यहाँ 140 मिलियन मूर्ख हैं, जो कि ब्रिटेन की आबादी का दोगुना है! यह बात बहुत अधिक मायने नहीं रखती कि उनमें से कुछ ने स्वाभाविक रूप से, सत्ता के पदों तक अपना रास्ता नहीं खोजा।

अब सोचिए: यदि भारत के 70 मिलियन मूर्खों में एक प्रतिशत से भी कम मूर्ख राज्य-संसद, कार्यपालिका और न्यायपालिका के लिए काम करते हैं - तो इसका मतलब है कि अच्छे निर्णय ना ले सकने वाले 700,000 लोग बचे हुए 1,400 मिलियन लोगों की ओर से काम करते हैं। इसलिए, कवि ने ठीक ही कहा है, “*बर्बाद गुलिस्ताँ करने को बस एक ही उलू काफी है । हर शाख पे उलू बैठे हैं, अंजाम ए गुलिस्ताँ क्या होगा ?*”

लेकिन देश और उसके शासकों को भूल जाइए। यदि आप केवल अपने आस-पास ही देख लें तो आपको पता चलेगा कि मेरा सिद्धांत सही है। चाहे वह आपका आवासीय परिसर हो या आपका कार्यालय हो या वह टीम हो जिसके लिए आप कोई खेल खेलते हैं, या वह सड़क हो जिसपर आप गाड़ी चलाते हैं, वहाँ हमेशा ऐसे लोगों की संख्या होती है जो अनुचित ढंग से काम करते हैं और आपके हितों को नुकसान पहुंचाते हैं। यह एक बड़ी समस्या है।

क्या हम इस बारे में कुछ कर सकते हैं? दुखद रूप से कुछ भी नहीं। आप देखिए, इनकी संख्या स्थिर है। ■

आपका आवासीय परिसर हो या आपका कार्यालय हो या वह टीम हो जिसके लिए आप कोई खेल खेलते हैं, या वह सड़क हो जिसपर आप गाड़ी चलाते हैं, वहाँ हमेशा ऐसे लोगों की संख्या होती है जो अनुचित ढंग से काम करते हैं।

संक्षेप में



स्विट्जरलैंड में कोको की बर्फबारी

तेज हवाओं ने स्विट्जरलैंड के ओल्टेन में लिंड्ट और स्प्रिगली चाकलेट फैक्ट्री के आसपास के क्षेत्र में कोको पाउडर की डस्ट को छोड़। सोशल मीडिया पर शेयर की गई तस्वीरों से पता चला है कि कारों और खिड़की के कांच की सतह कोको पाउडर की पतली परत से ढके हुए थे। एक ट्वीट में किसी ने कहा

कि “आसमान से चॉकलेट की बर्फबारी हो रही है, सपने सच हो गए।” यह फैक्ट्री में वेंटिलेशन खराबी के कारण हो गया था जिस कारण यह घटना हुई, पर इसे जल्दी ही ठीक कर लिया गया।



सच्चा प्यार

कर्नाटक के कोप्पल में उद्योगपति श्रीनिवास मूर्थी द्वारा आयोजित गृह-प्रवेश की पार्टी में भाग लेने वाले मेहमान उनकी पत्नी माधवी को प्रवेश द्वार पर स्वागतपूर्ण मुस्कान के साथ सोफे पर बैठा देखकर दंग रह गए। तीन साल पहले उनकी पत्नी की एक कार दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। मूर्थी ने अपनी पत्नी की सिलिकॉन की एक आदमकद प्रतिमा बनवाई थी क्योंकि यह माधवी के सपनों का घर था और परिवार माधवी के बिना घर में प्रवेश करने की सोच भी नहीं सकता था। मूर्थी ने कहा - वह हमारे परिवार का हिस्सा सदा रहेगी।

मानव एटीएम

डाकिए के द्वारा भारतीय डाकविभाग की घर तक पैसा पहुँचाने की नई सेवा देश भर में एक बड़ी हिट है। कोविड-19 लॉकडाउन लगाए जाने के ठीक पहले यह सुविधा मार्च के अंत में शुरू की गई थी जो आधार से लिंक बैंक खाते से ₹100 से ₹10,000 रुपये तक की निकासी की अनुमति देती है। डाकिया सेवा प्रदान करने हेतु अपने साथ ₹60,000 नकद और फिंगरप्रिंट को मैच करने के लिए एक बायोमेट्रिक उपकरण ले जाते हैं।



चॉकलेट के गणेश जी

पंजाब के एक रेखां मालिक ने 10 शेफ की मदद से 40 किलो की गणेश प्रतिमा को पूरी तरह से चॉकलेट से बनाया है। गणेश चतुर्थी मनाने के लिए, लगातार पांचवें वर्ष भी उन्होंने इस इको-फ्रेंडली गणेश जी की प्रतिमा को बनाया है। इंदौर की निधि शर्मा ने भी चॉकलेट की इसी तरह की मूर्ति डिजाइन की थी जिसमें यह दर्शाया गया है कि गणेश जी अपने त्रिशूल से कोरोना वायरस का वध कर रहे हैं। वह कहती हैं कि वह विसर्जन पर दूध में मूर्तियों को विसर्जित करेंगी और जरूरतमंदों को चॉकलेट मिल्क वितरित करेंगी।



गलती से हथकड़ी लग गई

नॉर्थहैम्पटनशायर में एक पुलिस अधिकारी नये भर्ती रंगरूटों को यह सिखाने की कोशिश करते हुए हथकड़ी में फंस गया था कि हथकड़ी का उपयोग कैसे किया जाता है। वह पास के एक फायर-स्टेशन पर गया जहां अग्निशामकों ने उसे हथकड़ी से मुक्त करने के लिए पेडल कटर का इस्तेमाल किया। हालांकि वह दुर्घटना से रोमांचित नहीं थे पर उन्होंने कहा कि वह खुश हुए थे कि इसने लोगों के चेहरों पर मुस्कान ला दी थी। “अगर मैं इन मुश्किल समय में एक भी चेहरे पर मुस्कान ला देता हूँ तो मैंने अपना काम पूरा कर लिया” - उन्होंने ट्वीट किया।

Not receiving your copy of Rotary News?

We at Rotary News Trust are trying our best at these challenging times to bring out *Rotary News* in time.

There is a huge disruption in postal services due to India locking down first in March, and several States continuing to lock down every now and then. Train movement has also been badly impacted. The result is a huge delay in many Rotarians across the country getting the magazine. That is why from the April 2020 issue onwards, we are sending complimentary e-version of the magazine to **ALL Rotarians**. But your print copies are also being sent.

As many of your club members are influential members of your communities, we request you to take the time and effort to lodge a strong complaint with your post office if you don't receive the magazine. At the same time, do write to us at rotarynews@rosaonline.org and tell us if you have not received the magazine.

Please avoid sweeping statements such as "nobody has received the magazine". When we do a cross-check, we often find only some members have missed getting their magazine.

You can
reach our
Subscription chief
Senthil Kumar on
senthil@rotarynewsonline.org

You can also call
044-42145666, ask for
the subscription person
in charge of your district,
and lodge a complaint.

Subscription in charge	Districts numbers
Kalpana kalpana@rotarynewsonline.org	2982, 3020, 3054, 3090, 3100, 3170, 3181, 3182, 3190, 3250, 3262
Sasikala sasi@rotarynewsonline.org	2981, 3012, 3110, 3120, 3141, 3142, 3201, 3211, 3212, 3261, 3291
Valli valli@rotarynewsonline.org	3000, 3030, 3060, 3070, 3080, 3131, 3132, 3232, 3240
Anuvarshini anu@rotarynewsonline.org	3011, 3040, 3053, 3150, 3160, 3202, 3231

But above all, make sure of the following:

1. You have paid your *Rotary News* dues to your club.
2. The club has sent the dues to Rotary News Trust.
3. Your name and full postal address, with the correct pincode, and preferably email and phone number, are given to us.